

VIDEHA · MONOGRAPH SERIES

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३४

मिथिला, वज्जि आ अंगक
सामाजिक-सांस्कृतिक-
आर्थिक इतिहास

१५० अध्यायक आलोचनात्मक अध्ययन

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह प्रकाशन शृंखला

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३४

मिथिला • वज्जि • अंग

विदेह / गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय / खण्ड ३४

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३४

मिथिला, वज्जि आ अंगक

सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहास

मूल ग्रन्थ : History of Mithila, Vajji & Anga — Volume II

१५० अध्यायक पाठाधारित आलोचनात्मक अध्ययन

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

VIDEHA • २०२६

प्रकाशकीय विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ३४

मूल ग्रन्थ : History of Mithila, Vajji & Anga — Volume II: Socio-Cultural-Economic History

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

समीक्षात्मक सम्पादन : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशन वर्ष : २०२६

पृष्ठमाप : ६ × ९ इंच

मूल ग्रन्थक पाठ आ समीक्षामे जे ऐतिहासिक दाबी विवादित अछि, तकर प्रमाणगत सीमा संबंधित अध्यायक आलोचनामे स्पष्ट कएल गेल अछि।

अध्ययनक दायरा

एहि पुस्तकमे मूल इतिहासग्रन्थक १५० अध्यायक पृथक आलोचनात्मक समीक्षा अछि। समीक्षा सामाजिक सम्बन्ध, आर्थिक संस्था, सांस्कृतिक अभ्यास आ ऐतिहासिक स्रोतक प्रमाणगत सीमा पर केन्द्रित अछि।

पुरातात्विक अवशेष, शास्त्रीय पाठ, दानपत्र, राजस्व-लेख, जनगणना आ आधुनिक प्रतिवेदन अलग प्रकारक साक्ष्य अछि। कोनो एक स्रोतकें सम्पूर्ण समाजक प्रत्यक्ष चित्र नहि मानल गेल अछि।

ई समीक्षात्मक अध्ययन मूल ग्रन्थ अथवा उद्धृत प्राथमिक स्रोतसभक प्रतिस्थापन नहि अछि। बाह्य स्रोतक पूर्ण स्वतन्त्र सत्यापनक दावा नहि कएल गेल अछि।

आमुख

इतिहासक अध्ययनमे भौगोलिक नाम, राजवंश आ साहित्यिक गौरव प्रायः एक स्थिर समाजक भ्रम उपस्थित करैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगक सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहासक ई आलोचनात्मक पाठ ओहि भ्रमक परीक्षा करैत अछि। नदीक बदलैत धार, भूमि-सम्बन्ध, कृषिश्रम, धार्मिक संस्था, व्यापार, भाषा आ प्रवासक परस्पर क्रियासँ समाज बारम्बार नव रूप लैत रहल।

मूल ग्रन्थक १५० अध्याय विषयवस्तुक व्यापक कालानुक्रमिक विस्तार प्रस्तुत करैत अछि—पुरातत्त्वसँ डिजिटल अर्थव्यवस्था धरि। समीक्षामे प्रत्यक्ष अवशेष आ अनुमान, आदर्श विधान आ व्यवहार, मौखिक स्मृति आ दिनाङ्कित अभिलेख, तथा वर्तमान सांस्कृतिक पहचान आ पूर्वकालीन प्रयोगक अन्तर महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि।

बहुत स्थलपर स्रोत स्पष्ट संकेत दैत अछि, मुदा पूर्ण निर्णायक निष्कर्ष नहि। खास कऽ दू विद्यापति सम्बन्धी प्रतिज्ञा, पञ्जीक वर्गनिर्माण, प्राचीन भाषिक नामक आधुनिक प्रयोग, सामाजिक वंशानुक्रम आ आधुनिक सरकारी आँकड़ाक परिवर्तित परिभाषा पर असहमतिक सम्भावना बनल रहैत अछि। समीक्षा एहि असहमतिक अध्ययनक बाधा नहि, शोधक आवश्यक हिस्सा मानैत अछि।

एक-एक अध्यायक आलोचना संक्षिप्त होइतहुँ पाठक मुख्य तर्क, स्रोतक उपयोग आ ओकर सीमाक पृथक पहचान करैत अछि। अन्तमे समेकित मूल्याङ्कन एहि अध्यायसभक परस्पर सम्बन्ध देखैत अछि।

अनुक्रमणिका

००१	समाजक भौतिक आधार.....	१०
००२	प्रागैतिहासिक बसावट आ जीवननिर्वाह.....	११
००३	ताम्रपाषाण आ आरम्भिक कृषिसमुदाय.....	१२
००४	खाद्य-पुरातत्त्व आ दैनिक जीवन.....	१३
००५	पर्यावरण, गतिशीलता आ बसावट.....	१४
००६	दोसर नगरीकरण.....	१५
००७	आरम्भिक ऐतिहासिक गृहस्थी आ परिवार.....	१६
००८	स्थिर जाति-आख्यानसँ पहिनुक सामाजिक विभाजन.....	१७
००९	प्राचीन मिथिला-वज्जि-अंगमे स्त्री.....	१८
०१०	खेती आ ग्रामीण अर्थव्यवस्था.....	१९
०११	शिल्प आ प्राविधिक ज्ञान.....	२०
०१२	व्यापार, वणिज आ हाट.....	२१
०१३	वैशाली : आर्थिक आ सामाजिक केन्द्र.....	२२
०१४	अंग आ चम्पा.....	२३
०१५	आरम्भिक मुद्रा आ मुद्राकरण.....	२४
०१६	बौद्ध-जैन संस्थाक अर्थव्यवस्था.....	२५
०१७	शिक्षा, वाद-विवाद आ बौद्धिक समुदाय.....	२६
०१८	स्वास्थ्य, चिकित्सा आ शरीरक सामाजिक इतिहास.....	२७
०१९	वैदिक अनुष्ठानसँ क्षेत्रीय धार्मिक बहुलता धरि.....	२८
०२०	वज्जि-विदेहमे बौद्ध धर्मक सामाजिक संस्थापन.....	२९
०२१	वैशाली-विदेहमे जैन धर्मक गतिशील सामाजिक भूगोल.....	३०
०२२	शैव, शाक्त आ वैष्णव संस्थाक ऐतिहासिक रूपान्तरण.....	३१
०२३	तीर्थ-भूगोल : स्मृति, जल आ आवागमनक निर्माण.....	३२
०२४	पर्व, पञ्चाङ्ग आ सामाजिक समयक इतिहास.....	३३
०२५	मृत्यु, पितृस्मृति आ जीवनचक्रक संस्कार.....	३४
०२६	भूमिदान आ कृषिसमाजक परिवर्तन.....	३५
०२७	गाम, हाट आ नगरक परस्पर निर्भरता.....	३६
०२८	श्रम, सेवा आ पेशागत समुदायसभक निर्माण.....	३७
०२९	सामाजिक श्रेणीकरणक ऐतिहासिक निर्माण.....	३८
०३०	ब्राह्मणीय संस्था आ उत्तरकालीन जातिक प्रत्यारोपणसँ परहेज.....	३९
०३१	पञ्जीप्रबन्ध : वंश, विवाह आ अभिलेखक सामाजिक इतिहास.....	४०

०३२ मध्यकालीन मिथिलामे स्त्री, विवाह आ सम्पत्ति.....	४१
०३३ कर्णाट-ओइनिवार कालक सामाजिक अर्थव्यवस्था.....	४२
०३४ इस्लाम, प्रवास आ नव सामाजिक संसार.....	४३
०३५ फारसी-प्रभावित सांस्कृतिक संसार आ मिथिला-अंग.....	४४
०३६ आधुनिक मानकीकरणसँ पहिने भाषाक इतिहास.....	४५
०३७ साहित्यिक मैथिलीक क्रमिक निर्माण.....	४६
०३८ दू विद्यापति : काल, पाठ आ ग्रन्थकार-निर्धारण.....	४७
०३९ तिरहुता लिपि आ लिपिकारी संस्कृति.....	४८
०४० मौखिक संस्कृति : स्वर, अवसर आ सामाजिक स्मृति.....	४९
०४१ अंगिका आ पूर्वी भाषिक-सांस्कृतिक क्षेत्र.....	५०
०४२ बज्जिका आ पश्चिम मिथिलाक भाषिक इतिहास.....	५१
०४३ संस्कृत विद्या आ मिथिलाक विद्वत् संस्था.....	५२
०४४ स्थापत्य आ बसावट : निर्मित भूगोलक इतिहास.....	५३
०४५ वस्त्र, आभूषण आ देह-सज्जाक इतिहास.....	५४
०४६ भोजनक इतिहास : पारिस्थितिकी, श्रम आ स्मृति.....	५५
०४७ मिथिला चित्रकला : बाजारसँ पहिने आ ओकर बाहर.....	५६
०४८ बीसम शताब्दीमे मिथिला चित्रकलाक सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था.....	५७
०४९ संगीत, गीत आ प्रदर्शनक सामाजिक इतिहास.....	५८
०५० नाट्यपरम्परा आ रंगमंचीय संस्कृति.....	५९
०५१ मेला, हाट आ सार्वजनिक सांस्कृतिक जीवन.....	६०
०५२ मुगलकालीन भूमि, राजस्व आ कृषिसमाज.....	६१
०५३ बंगाल, बिहार, नेपाल आ गङ्गा-विश्वक व्यापार.....	६२
०५४ ईस्ट इण्डिया कम्पनी आ कृषिसम्बन्धक पुनर्गठन.....	६३
०५५ स्थायी बन्दोबस्त आ भूमिधारी समाज.....	६४
०५६ नीलक खेती आ औपनिवेशिक व्यापारिक कृषि.....	६५
०५७ अफीम, शोरा आ अन्य वस्तु-व्यापारक जाल.....	६६
०५८ अकाल, अभाव आ खाद्यसुरक्षा.....	६७
०५९ औपनिवेशिक सर्वेक्षण आ सामाजिक श्रेणीक निर्माण.....	६८
०६० औपनिवेशिक कालमे शिक्षाक परिवर्तन.....	६९
०६१ मुद्रण-संस्कृति आ नव सार्वजनिक क्षेत्र.....	७०
०६२ रेल, सड़क आ बाजारक नूतन भूगोल.....	७१
०६३ मजदूर-प्रवास आ गृहस्थी अर्थव्यवस्था.....	७२

०६४ औपनिवेशिक आधुनिकता आ स्त्रीक सामाजिक परिवर्तन.....	७३
०६५ भारत-नेपाल सीमाञ्चलक ऐतिहासिक अर्थव्यवस्था.....	७४
०६६ जनकपुर : धार्मिक, व्यापारिक आ नगरीय केन्द्र.....	७५
०६७ नेपाल तराईमे भूमि, बटाइदारी आ कृषिसमाज.....	७६
०६८ वन-उन्मूलन, मलेरिया नियन्त्रण आ जनसंख्याक परिवर्तन.....	७७
०६९ प्रवास, पुनर्वास आ सामाजिक बसावट.....	७८
०७० नेपालमे भाषा, शिक्षा आ सांस्कृतिक संस्था.....	७९
०७१ मधेशमे स्त्री, नागरिकता आ गृहस्थीक अर्थव्यवस्था.....	८०
०७२ जनकपुरक कला, शिल्प आ सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था.....	८१
०७३ सीमाबाजार, प्रेषित धन आ अनौपचारिक विनियम.....	८२
०७४ स्वाधीनता, भूमिसुधार आ बिहारक कृषिपरिवर्तन.....	८३
०७५ जमीन्दारी उन्मूलनक असमान परिणाम.....	८४
०७६ स्वाधीनताक बाद कृषि : तकनीक आ विषमता.....	८५
०७७ कोसी-गण्डक नदी-परियोजना आ विकासक द्वैत.....	८६
०७८ बाढ़ि : जल, जोखिम आ सामाजिक पुनरुत्पादन.....	८७
०७९ ग्रामीण ऋण, कर्ज आ बैंकिंगक सामाजिक अर्थ.....	८८
०८० सहकारिता आ ग्रामीण संस्था.....	८९
०८१ औद्योगीकरणक विस्तार आ सीमा.....	९०
०८२ भागलपुर रेशम आ अंगक वस्त्र-अर्थव्यवस्था.....	९१
०८३ मखान, माछ, दुग्ध आ विशेषीकृत क्षेत्रीय उत्पादन.....	९२
०८४ स्वाधीनताक बाद शिक्षा आ सार्वजनिक अवसर.....	९३
०८५ स्वास्थ्य आ जनस्वास्थ्यक परिवर्तन.....	९४
०८६ सड़क, रेल, बिजली आ सञ्चार.....	९५
०८७ जाति-सम्बन्धक ऐतिहासिक निर्माण.....	९६
०८८ दलित इतिहास : श्रम, भूमि आ अधिकार.....	९७
०८९ आदिवासी आ वन-संबद्ध जनसमुदायक इतिहास.....	९८
०९० मिथिला आ अंगक मुसलमान समाज.....	९९
०९१ लिङ्ग-संबन्ध आ गृहस्थीक अर्थव्यवस्था.....	१००
०९२ स्त्रीक वेतनयुक्त आ अवैतनिक श्रम.....	१०१
०९३ विवाह, दहेज, उत्तराधिकार आ परिवारक बदलाव.....	१०२
०९४ शिक्षा आ सामाजिक गतिशीलताक अवसर.....	१०३
०९५ आरक्षण, सकारात्मक उपाय आ नव मध्यमवर्ग.....	१०४

०९६	ग्रामीण अभिजन आ बदलैत भूमिक शक्ति.....	१०५
०९७	प्रवासक दीर्घ ऐतिहासिक क्रम.....	१०६
०९८	कलकत्ता आ मिथिला-अंगक प्रवासी सम्बन्ध.....	१०७
०९९	दिल्ली, मुम्बई आ स्वाधीनताक बादक चलनशीलता.....	१०८
१००	पञ्जाब-हरियाणामे मौसमी कृषिमजदूरी.....	१०९
१०१	नेपाल-भारतक आवर्ती प्रवास.....	११०
१०२	खाडी देशक श्रमिक प्रवास.....	१११
१०३	प्रेषित धन आ गृहस्थीक रूपान्तरण.....	११२
१०४	नगरीकरण : नगरसदृश कार्य आ प्रशासनिक सीमा.....	११३
१०५	अनौपचारिक अर्थव्यवस्था आ सड़ककिनारक व्यापार.....	११४
१०६	प्रवासी सांस्कृतिक संस्थाक निर्माण.....	११५
१०७	मैथिली मुद्रण आ साहित्यिक संस्था.....	११६
१०८	अंगिका मुद्रण आ क्षेत्रीय साहित्यिक संस्था.....	११७
१०९	रेडियो आ प्रसारणक सामाजिक इतिहास.....	११८
११०	चलचित्र, वीडियो आ मुद्रित-ध्वनित प्रदर्शन.....	११९
१११	समाचारपत्र आ सार्वजनिक विचार-विमर्श.....	१२०
११२	साहित्य अकादेमी आ साहित्यिक मानकक निर्माण.....	१२१
११३	स्त्री साहित्यकार आ वैकल्पिक साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र.....	१२२
११४	विदेह आ डिजिटल मैथिली साहित्यक निर्माण.....	१२३
११५	डिजिटल अभिलेख आ सांस्कृतिक संरक्षण.....	१२४
११६	युनिकोड, तिरहुता आ तकनीकी मान्यता.....	१२५
११७	जनसंख्याक संरचना आ परिवर्तन.....	१२६
११८	एकैसम शताब्दीमे कृषि.....	१२७
११९	भूमिखण्डन आ ग्रामीण जीवन.....	१२८
१२०	प्रवास-निर्भर अर्थव्यवस्था.....	१२९
१२१	प्रेषित धन, उपभोग आ आवास.....	१३०
१२२	शिक्षा-बाजार आ कोचिङ्ग प्रवास.....	१३१
१२३	स्वास्थ्यक अर्थव्यवस्था.....	१३२
१२४	सड़क, राजमार्ग, हवाई अड्डा आ सम्पर्क.....	१३३
१२५	मोबाइल, डिजिटल भुगतान आ मञ्च-अर्थव्यवस्था.....	१३४
१२६	पर्यटन, तीर्थ आ सेवा-अर्थव्यवस्था.....	१३५
१२७	वैश्विक बाजारमे मिथिला चित्रकला.....	१३६
१२८	भौगोलिक सङ्केत, धरोहर-ब्राण्ड आ बौद्धिक सम्पत्ति.....	१३७
१२९	जलवायु परिवर्तन आ कृषिक जोखिम.....	१३८

१३०	बाढ़ि अनुकूलन आ लचीलापन.....	१३९
१३१	सङ्घीय व्यवस्थाक बाद भारत-नेपाल सीमाक अर्थव्यवस्था.....	१४०
१३२	परिवारक आधुनिक रूपान्तरण.....	१४१
१३३	बदलैत विवाह-व्यवहार.....	१४२
१३४	स्त्रीशिक्षा आ रोजगारक असमान संक्रमण.....	१४३
१३५	युवासंस्कृति : शिक्षा, श्रम आ डिजिटल संसार.....	१४४
१३६	सामाजिक मञ्च आ भाषाक सार्वजनिक प्रयोग.....	१४५
१३७	धार्मिक परिवर्तन आ सार्वजनिक अनुष्ठान.....	१४६
१३८	वर्तमान समाजमे जाति.....	१४७
१३९	मधेश, सङ्घीयता आ सामाजिक नागरिकता.....	१४८
१४०	वर्तमान सार्वजनिक जीवनमे मैथिली, अंगिका आ बज्जिका.....	१४९
१४१	सांस्कृतिक धरोहर आ जीवन्त संस्कृति.....	१५०
१४२	क्षेत्रीय सांस्कृतिक अर्थव्यवस्थाक भविष्य.....	१५१
१४३	सामाजिक परिवर्तनक दीर्घकालीन संरचना.....	१५२
१४४	आत्मनिर्वाहसँ बाजारक सघन सम्बन्ध धरि.....	१५३
१४५	गृहस्थी, जाति, वर्ग आ लिंगक दीर्घकालीन अन्तर्सम्बन्ध.....	१५४
१४६	नदीय पारिस्थितिकी आ आर्थिक इतिहास.....	१५५
१४७	भाषा सामाजिक आधारभूत संरचनाक रूपमे.....	१५६
१४८	भारत-नेपाल : साझा संवादक्षेत्र, भिन्न राजनीतिक अर्थव्यवस्था.....	१५७
१४९	सांस्कृतिक निरन्तरता, पुनराविष्कार आ आधुनिक संस्था.....	१५८
१५०	समापन : कालातीत सारवस्तुक भ्रमसँ बाहर सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहास.....	१५९

अध्ययन ००१ | समाजक भौतिक आधार

मूल अध्यायक शीर्षक : (The Physical Foundations of Society)

सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहासक आरम्भ भौगोलिक आधारसँ करब लेखकक सचेत निर्णय अछि, मुदा ई पर्यावरण-नियतिवादक समर्थन नहि।

हिमालयक जलसंग्रह क्षेत्रसँ गंगा धरि उतरैत नदीसभ, अलग-अलग उम्रक जलोढ़ माटि, चौर-ताल आ नदीक पुरान धारासभ समाजक उत्पादन-विनिमय लेल अलग अवसर बनबैत अछि। लेखक मिथिला, वज्जि आ अंगक नामकें एके भूगोलक अपरिवर्तित तीन नाम नहि मानैत छथि। 'मधेश'क आधुनिक राजनीतिक अर्थ आ 'तराई'क भौगोलिक अर्थ अलग करवाक आग्रह सेहो एहि अध्यायक मूल पद्धतिगत उपलब्धि अछि।

अध्याय गण्डक-नारायणी, बागमती-कमला, कोसीक विशाल नदी-पंखा, महानन्दा आ अंगक दक्षिणी क्षेत्रक भौगोलिक अन्तर पर बल दैत अछि। कोनो नदीक जलमात्रा अथवा गाढ़-मात्रा एकहि मौसममे पूरे मैदानक स्थिति नहि कहि सकैत। उन्नत प्राकृतिक तट, पुरान धारा, अवसादी ढलान आ जलभरावक कारण जमीनक उपजाऊपनक संग-संग जोखिम सेहो बदलैत अछि। एकर आलोचनात्मक निष्कर्ष ई जे खेतीक इतिहास लिखैत जलप्रवाह आ जमीनक मापकें स्थिर संसाधन मानब सामाजिक विषमताकें हेरा दैत अछि; एक परिवारक उपकारक गाढ़ दोसर परिवारक घर पोरि सकैत अछि।

नदी, वन आ वर्षाक वस्तुगत चरित्रसँ सीधे सामाजिक व्यवहारक निष्कर्ष निकालि देबामे सावधानी चाही। 'जंगल अछि, तँ बसावट नहि' अथवा 'उपजाऊ मैदान अछि, तँ स्वाभाविक सम्पन्नता' सन कथनक समर्थन ई अध्याय नहि करैत। मुदा भौतिक भूगोलक प्रकाशित शोधसँ सामाजिक जीवनक ठोस इतिहास धरि पहुँचबाक लेल खेतक अभिलेख, आवागमनक मार्ग, मजदूरी, आपदा-पुनर्वास आ स्थानीय बसावट-परिवर्तनक समयबद्ध प्रमाण जोड़ब आवश्यक अछि। पहिल अध्याय उपयोगी प्रश्नावली दैत अछि; ओकर सामाजिक उत्तर आगामी विभागक वस्तुगत अध्ययनमे परखल जाएबाक चाही।

अध्ययन ००२ | प्रागैतिहासिक बसावट आ जीवननिर्वाह

मूल अध्यायक शीर्षक : (Prehistoric Settlement and Subsistence)

दोसर अध्याय प्रागैतिहासिक सामग्रीकेँ पछिला मैथिली, वज्जि अथवा अंग जातीय-संज्ञाक प्रत्यक्ष पूर्वज प्रमाण नहि मानैत अछि। पुरान नदीक बालू-गादक तहसँ दबि गेल बसावट, पहाड़ी धरातलपर बचल पाषाण उपकरण आ खुदाइमे भेटल नेओलिथिक अवशेष अलग पद्धतिसँ बुझब आवश्यक अछि। पाटु-रातो खोला, महोत्तरीक पाषाण-उद्योग आ बिहारक चिराँद, चेचर-कुतुबपुर सन स्थलसभक तुलना निश्चय उपयोगी अछि, मुदा ई अलग भौतिक परिवेशक नमूना अछि; एके 'सभ्यता'क समान चरण नहि।

चिराँदक हड्डी, सींग, पाषाण, वनस्पति-अवशेष आ घरक चिह्नसँ खेती, पशुपालन, माछमारी तथा जंगली संसाधनक मिश्रित व्यवहार देखबाक प्रयास कएल गेल अछि। स्तरीकृत प्राप्ति, कार्बन-तिथि आ उत्खननक प्रक्रिया सँ प्रमाणक शक्ति बनैत अछि। चिराँदमे धान अथवा हड्डीक उपस्थितिक अर्थ ओकरा उपयोग करबाक विशिष्ट श्रम-प्रक्रिया जानब नहि; एतय सामग्रीसँ व्यवहार धरि जएबाक अनुमानक सीमा स्पष्ट राखल गेल अछि। घेरल बस्ती भए जएबासँ मौसमी आवागमन बन्द भऽ गेल, से मानबाक कोनो आवश्यकता नहि।

मूल अध्यायक एकटा मजबूत आलोचनात्मक बिन्दु अछि—जे स्थल एखन भेटल नहि, ओ जरूरी नहि जे ओतय प्राचीन मनुष्य रहबे नहि करैत छल। कोसी आ गण्डक सन अस्थिर मैदानमे भूमिगत दबान आ कटान अन्वेषणक नक्शा बदलैत अछि। तथापि पाटु-चिराँद-चेचरक बीच व्यापारिक मार्ग, भाषा, कुल वा जाति-निरन्तरताक नाम तय करब हेतु पुरातात्विक श्रृंखलाक पूर्ण प्रमाण चाही। प्राचीन पादभूमि आ नदीक मैदानक अन्तर एतय उत्पत्ति सम्बन्धी एकरेखीय सामाजिक दावीकेँ सीमित करैत अछि।

अध्ययन ००३ | ताम्रपाषाण आ आरम्भिक कृषिसमुदाय

मूल अध्यायक शीर्षक : (CHALCOLITHIC AND EARLY AGRARIAN COMMUNITIES)

ताम्रपाषाण आ आरम्भिक कृषि-समुदायक इतिहास लेखक 'तामाक क्रान्ति'क रूपमे नहि रचैत छथि। कारीगरक पाषाण-हड्डी-तामाक साधन एकसंग चलि सकैत छल। कारीगरीमे नव धातुक उपस्थितिक अर्थ कोनो पुरान तकनीकक तुरन्त समाप्ति नहि। कारीगरीक विकास पर बात करैत चिराँद, चेचर-कुतुबपुर, समस्तीपुरक पाण्डा आ भागलपुर क्षेत्रक ओरियप सन नाम धरि साक्ष्य अलग चिन्हित करब इतिहासक श्रेयस्कर पद्धति अछि। काली-लाल मृद्भाण्ड कोनो एक जातिक नाम-पट्ट नहि, पुरातात्त्विक वर्गीकरण अछि।

पाण्डा मे भेटल चूल्हि आ भूसी, चेचरक मृद्भाण्ड-हड्डी-तामाक सामग्री आ ओरियपमे नदीसँ जुड़ल उत्खननक अवशेष घरक निर्माण, अनाजक प्रसंस्करण, माटिक बरतन आ समयबद्ध बसावटक प्रश्न उठबैत अछि। एहि सामग्रीसँ 'कृषिक अतिरेक छल' अथवा 'सामाजिक पाँति-व्यवस्था स्थापित छल' सन निष्कर्ष तुरन्त नहि निकलैत अछि। ग्राम्य उत्पादनक विभाजन, औजारक पुनरावृत्ति आ विशेष वस्तुक उपलब्धता सामाजिक अन्तरक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा ओकर आर्थिक परिमाण तय करबाक लेल पर्याप्त स्तरबद्ध सामग्री चाही।

लेखकक एकटा उपयोगी अन्तर अछि—ओरियपक बादक नगर-नाम 'चम्पा'सँ पूर्वकालक स्थलसभक सहज पहचान नहि करैत छथि। नेपाल-तराई, मिथिलाक मैदानी क्षेत्र आ अंगक दक्षिण-पूर्वी जलविभाजनमे कृषिक विकासक गति बराबर नहि रहबाक सम्भावना अछि। तथापि एक स्थलपर भेटल तामाक टुकडासँ उत्पादन-प्रणालीक समग्र विशेषता निश्चित नहि होयत। कच्चा मालक उपलब्धता, निर्माणक अपशिष्ट आ धातुविज्ञानक जाँचक बिना व्यापार, पेशागत विशेषीकरण आ वर्ग-निर्माणक निष्कर्षक अनुमानक दर्जा देब जरूरी अछि।

अध्ययन ००४ | खाद्य-पुरातत्त्व आ दैनिक जीवन

मूल अध्यायक शीर्षक : (ARCHAEOLOGY OF FOOD AND EVERYDAY LIFE)

‘खाद्यक पुरातत्त्व’ केँ पुरान व्यंजनक सूची नहि बनायब एहि अध्यायक आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। चिराँदक वनस्पति आ जन्तु-अवशेष, चूल्हि, मृद्भाण्ड, भूसी आ राखि खाद्य-उत्पादन, प्रसंस्करण आ उपभोगक अलग-अलग क्षण बचबैत अछि। पुरातात्त्विक संग्रहमे जे भेंटैत अछि से सम्पूर्ण आहार नहि; वनक पात, जड़ि, माछक छोट हड्डी अथवा जैविक वस्तु नष्ट भऽ सकैत अछि। धान महत्त्वपूर्ण रहल हो, मुदा धानक एकाधिकारक कथा दालि, शीतकालीन फसल आ जलचर संसाधनक भूमिका छुपा सकैत अछि।

गाय-बैस, बकरी, भेड़, सूअरक घरपालन आ आखेटक शिकारक चिन्ह आर्थिक जोखिम बाँटबाक व्यवस्था देखबाक अवसर दैत अछि। चिराँदक धान आ ओरियपक माछमारी सम्बन्धी अवशेषकेँ एकहि व्यापक क्षेत्रक अलग नमूना मानि जाँचल गेल अछि। धानक भूसी माटिमे मिसल भेटब सँ अनाजक सफाई अथवा भाँड़ बनायब लेल उपयोगक सम्भावना अछि, मुदा कोन पदार्थ पकैत छल तकर निश्चय नहि। ई ‘सम्भावना’ आ ‘प्रमाण’क भेद एहन विषयमे अत्यन्त आवश्यक अछि।

अध्याय रोजमर्रा श्रमक महत्त्व देखबैत अछि—लकड़ी जमा करब, अनाज कोटब, माछ पकड़ब, आगि फुकब, बरतन बनायब आ भोजन बाँटब सभ सामाजिक इतिहासक हिस्सा अछि। मुदा एहि श्रमकेँ स्वतः स्त्री अथवा पुरुषक स्थिर दायित्व मानब वर्तमान सामाजिक छविक प्रागैतिहासपर आरोपण होयत। वैयक्तिक भोजनभेद अथवा भोज-कर्मक पदानुक्रम सिद्ध करबाक लेल समाधि, रसोइ, निवास-स्थान आ वस्तुगत विभाजनक संयोजित साक्ष्य चाही। एहि कारणेँ ‘खाद्य-सुरक्षा’ केँ केवल उपजक बढ़ोतरी सँ नहि, विविधता आ मौसमी अनुकूलनसँ बुझबाक आग्रह उचित अछि।

अध्ययन ००५ | पर्यावरण, गतिशीलता आ बसावट

मूल अध्यायक शीर्षक : (ENVIRONMENT, MOBILITY AND SETTLEMENT)

बसावट आ पर्यावरणक सम्बन्धकें स्थिर गाम बनाम घुमन्तू जनजीवनक द्वैतमे नहि समेटल गेल अछि। प्राकृतिक तट, पुरान नदिक धारा, चौर, जलभरावक पिछला भाग आ खेतिहर धरातल एकहि छोट भूभागमे बदलि सकैत अछि। कोसीक नदी-पंखा गण्डकक धरातलसँ एकरूप नहि; एक नदीक पश्चिम दिस सरकबाक लोकप्रिय सरल कथा सम्पूर्ण इतिहास नहि। लेखक तटबन्ध, गाद जमब, धारा-भंग, कटान आ जलभरावकें अलग प्रक्रिया मानि एही अनुशासनक संग पुरातात्त्विक बचावक समस्या देखबैत छथि।

जखन प्राचीन बस्ती गादमे दबैत अछि अथवा नदी ओकर अवशेष काटि दैत अछि, तखन नक्शामे बचल स्थलसभक सांद्रता वास्तविक जनसंख्याक सीधा मापक नहि रहैत। पुरान नदी-तीरक माटि खेती लेल उपयोगी रहल हो, मुदा बाढ़ि-जोखिम शून्य नहि। नदी-बदलावसँ बाट, घाट आ आवागमनक केन्द्र बदलैत रहल; एतय 'स्थानान्तरण' कें अनिवार्य सामाजिक पतन मानबाक आवश्यकता नहि। यथार्थतः मौसमी पलायन, चरागाह, वनोपज आ माछमारी स्थिर बस्तीकें सेहो गतिशील उत्पादनक्षेत्र दैत अछि।

अध्याय भारत आ नेपालक वर्तमान सीमासँ धरातलक पुरान प्रक्रिया विभाजित नहि करैत अछि; सप्तकोसीक अवसाद आ नेपालक पाटु-रातो खोला एहि व्यापक पर्यावरणीय तुलनामे अबैत अछि। मुदा भौतिक सम्पर्कसँ सामाजिक एकता सिद्ध नहि होइत। नदीक नक्शा-परिवर्तन आ नव स्थल-स्थापना सामाजिक इतिहासक संकेत देत, परन्तु व्यक्ति, कुल, पेशा आ राजनीतिक अधिकारक क्रम ओहि भूगोलसँ अलग अभिलेख माँगैत अछि। एहि सीमाक स्पष्टता पर्यावरणीय व्याख्याकें प्रबल आ संयत दुनू बनबैत अछि।

अध्ययन ००६ | दोसर नगरीकरण

मूल अध्यायक शीर्षक : (THE SECOND URBANISATION)

‘दोसर नगरीकरण’ इतिहासलेखनक उपयोगी संक्षेप अछि, मुदा सभ क्षेत्रमे एकहि तिथि आ एके कारणसँ नगर बनल एहन निष्कर्ष नहि। उत्तर गंगा मैदानमे लोहा, कृषि-उत्पादन, नगर-प्रशासन, विशेष शिल्प आ व्यापारक विकासक गति अलग-अलग रहल। लेखक उत्तर कृष्ण मार्जित मृद्भाण्ड (NBPW)क पुरातात्विक उपस्थिति आ सचमुच नगर-स्थितिक चिह्न—घनी बस्ती, संरक्षण, उत्पादन-स्थल, निकासी आ विनिमय—बीचक अन्तर रखैत छथि। एहि कारणेँ कोनो एकटा चमकदार बरतन नगरक एकमात्र पहचान नहि।

वैशालीक पुराना राजकीय महत्त्व, राजा विशालक गढक लोक-पहचान आ उत्खननसँ प्राप्त वस्तुगत स्तर अलग प्रश्न अछि। चम्पाक प्राचीन नगरीय स्वरूप बुझबा लेल परत-दर-परत दीवाल, बसावट, जलनिकास आ विनिमयक सामग्री आवश्यक अछि। चिराँद सन नदीक गाम शहरी अर्थव्यवस्थासँ जुड़ि सकैत अछि, मुदा ओकर आर्थिक योगदानक इतिहास नगरक शेष अनुचर मात्र नहि। भूस्वामित्व, कर, श्रम-संगठन आ ग्रामीण अधिशेषक वितरण बिनु नगरक वैभवक व्याख्या अधूरी रहत।

अध्याय ‘नगर बनल’क उत्सवमय इतिहासक संग स्त्रीक अनाम श्रम आ पेशागत असमानता जोड़बाक प्रयास करैत अछि; ई सकारात्मक अछि। तथापि आर्थिक संरचनाक परिमाणक लेल कार्यशाला अवशेष, वस्तुक वितरण, मुद्राक स्थानिक सन्दर्भ आ लघु बस्तीसभक उत्खनन जरूरी अछि। नेपाल-तराईक बसावट पर बिहारक कालसरणी सहज आरोपित नहि कएल जा सकैत। दोसर नगरीकरणक विवेचन एहि रूपमे नगर आ गामक पारस्परिक निर्भरता देखबैत अछि, न कि एक केन्द्रसँ सभ समाज बनल एहन कल्पना।

अध्ययन ००७ | आरम्भिक ऐतिहासिक गृहस्थी आ परिवार

मूल अध्यायक शीर्षक : (HOUSEHOLD AND FAMILY IN EARLY HISTORIC SOCIETY)

सातम अध्याय घर, परिवार, वंश आ राजनीतिक कुल केँ एकहि शब्दक चारि पर्याय नहि मानैत अछि। उत्खननमे घरक फर्श, चूल्ह, बर्तन अथवा विभाजित कोठली भेटब सहनिवासक साक्ष्य भऽ सकैत अछि, मुदा ओहिसँ सदस्यक विवाह-संबंध, वंशावली वा उत्तराधिकारक पूरा नियम नहि पता चलैत। गृहपति आ गृहस्थक शब्द अलग पाठपरम्परासँ अबैत अछि, तकर समाजशास्त्रीय भेद मानब जरूरी अछि। एहि स्रोत-विवेकसँ आधुनिक संयुक्त-एकल परिवारक वर्गीकरण प्राचीन समाजपर यन्त्रवत् लागू करबाक प्रवृत्ति रुकैत अछि।

गृहस्थी उत्पादन आ उपभोग दुनूक केन्द्र छल। अन्न, देखरेख, करघा, पशुपालन, बच्चाक लालन, रोगी सेवा आ ऋतुअनुसार श्रमक समन्वय एकटा घरक आर्थिक गतिविधि अछि। साहित्यिक पाठमे अम्बपालीक सम्पत्ति, महाप्रजापती गौतमीक संन्यास आ स्त्री-विचारक वर्णन महिलाक अलग-अलग सामाजिक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा एहि उल्लेखसभक आधारपर स्त्री-मुक्तिक व्यापक आँकड़ा नहि बनाओल जा सकैत। वज्जिक ज्येष्ठक आदर आ युवतीक विषयक अनुशासन राजनीतिक आदर्शो भऽ सकैत अछि, यथार्थक सर्वेक्षण नहि।

लेखक आश्रित श्रमिक, दास, सेवक आ शिक्षा-संस्कारक अधिकार पर चर्चा कऽ परिवारकेँ केवल रक्त-सम्बन्धक आत्मीय संस्था नहि मानैत छथि। मुदा धर्मसूत्रक विधि-नियम, बौद्ध कथा आ उत्खनित घरक पुरातात्विक साक्ष्य एकहि सामाजिक स्तर पर नहि राखबाक चाही। कोन गाममे उत्तराधिकारक व्यवहार कोना छल, से निश्चित करबाक लेल स्थानीय अभिलेख चाही। एहि कारणेँ गृहस्थीकेँ ऐतिहासिक रूपसँ बदलैत श्रम, सम्पत्ति आ देखरेखक केन्द्र मानब उचित, मुदा आधुनिक जातीय पञ्जी सभकेँ पीछे प्रक्षेपित करब अनुचित अछि।

अध्ययन ००८ | स्थिर जाति-आख्यानसँ पहिनुक सामाजिक विभाजन

मूल अध्यायक शीर्षक : (SOCIAL DIFFERENTIATION BEFORE FIXED CASTE NARRATIVES)

आठम अध्याय आरम्भिक सामाजिक भेदकेँ पछिला व्यवस्थित जाति-पद्धतिक तैयार प्रतिरूप नहि मानैत अछि। वर्णक शास्त्रीय आदर्श, बौद्धक ब्राह्मण-खत्तिय-गहपति-सेट्टि सन पद, पेशागत पहचान आ आश्रित श्रमक वास्तविक सम्बन्ध अलग-अलग प्रमाण-क्षेत्र अछि। वस्तुगत उपभोगमे असमानता देखब आ कोनो पुराना बस्तीकेँ विशिष्ट आजुक जातिक नाम देब एकहि बात नहि। एहि अन्तरक सहायतासँ समाजक जटिलता केवला चारि वर्णक वाक्यांशमे समेटि देबाक सरलीकरणक आलोचना सम्भव भेल अछि।

ग्रन्थकार कुल-प्रतिष्ठा, भूमि-अधिकार, नगरीय संपत्ति, कर्मकौशल, श्रमिक आश्रय आ लिंगकेँ सामाजिक स्थितिक भिन्न मापक रूपमे रखैत छथि। वज्जिक राजनीतिक संघमे कतिपय कुलक निर्णयाधिकार रहब सार्वभौम लोकतान्त्रिक समता सिद्ध नहि करैत। अम्बपालीक सम्पन्नता सन पाठक उदाहरण महिलाक आर्थिक क्रियाशीलता देखवैत अछि, मुदा सभ महिलाक समान आर्थिक अधिकारक प्रमाण नहि। एतय समाजक पदानुक्रम बहुरेखीय अछि—एहन तर्क आधुनिक उत्पीड़नक अनुभव नकारब नहि, ओकर इतिहास जाँचबाक पद्धति अछि।

विशेष रूपसँ ‘कुल’, ‘जाति’, ‘दास’ आ ‘कम्मकार’क शब्दार्थक कालगत अन्तर पर आलोचना अपेक्षित अछि। पुराना ग्रन्थमे मजदूर अथवा सेवकक उल्लेख आधुनिक विधिक बन्धुआगिरीक सटीक रूप तय नहि करैत। अछूतता, पेशागत वंशानुक्रम आ स्थानीय जाति-श्रेणीक स्थिरीकरण केन कालमे भेल—ई बाह्य अभिलेखीय अनुसन्धानक प्रश्न अछि। लेखक एहि परिवर्तनकेँ इतिहासक परिणाम मानैत छथि, आरम्भिक समाजक निर्विवाद पूर्वस्थिति नहि। तकर बादो सामाजिक गतिशीलताक एकल उदाहरणकेँ व्यापक समताक प्रमाण नहि मानब आवश्यक अछि।

अध्ययन ००९ | प्राचीन मिथिला-वज्जि-अंगमे स्त्री

मूल अध्यायक शीर्षक : (WOMEN IN EARLY MITHILA-VAJJI-ANGA)

नवम अध्याय आरम्भिक मिथिला-वज्जि-अंगक स्त्रीजीवनकेँ एकटा स्थिर स्थिति नहि मानैत अछि। संपत्ति, आयु, परिवारक दर्जा, पेशा आ धार्मिक सहभागिताक आधारपर स्त्रीक अनुभव बदलैत छल। लेखक वैशालीक बौद्ध कथासाहित्यकेँ विशेष स्रोत मानैत छथि, किएक तँ ओतय अम्बपाली, भिक्षुणी-संघ आ गृहस्थ स्त्रीक उल्लेख बेसी उपलब्ध अछि। मुदा वैशालीक साहित्यिक उपलब्धता पूरे क्षेत्रक स्त्रीलोकक समान स्थिति प्रमाणित नहि करैत—एहि विषयताकेँ स्रोत-दृष्टिक समस्याक रूपमे चिन्हित करब अध्यायक उपलब्धि अछि।

अम्बपालीक उपवन-दानक कथाकेँ स्त्रीक आर्थिक सत्ता आ धार्मिक दानक स्मृति रूपमे पढ़ल गेल अछि, मूल जमीन-दस्तावेजक रूपमे नहि। महाप्रजापती गौतमीक संन्यास-संबन्धी आख्यान, विसाखा सन अन्य स्थानक उदाहरण आ वैशालीक संघीय नियम अलग पाठ-परम्परासँ अबैत अछि। एहि प्रसंगसभसँ गृहकार्य, वसन-निर्माण, अतिथि-सेवा, विवाहक सम्बन्ध आ संस्थागत दानक अनेक रूप भेटैत अछि; ओहिसँ समस्त स्त्रीसमुदायक स्वतन्त्रता वा समानता सिद्ध नहि होइत।

अध्याय साक्ष्यक अनुपातिक कठिनाई स्वीकार करैत अछि—उत्खननमे चूल्हा आ करघाक साधन भेटि सकैत अछि, मुदा ओकर उपयोगकर्ता स्त्री छल अथवा पुरुष से निश्चय नहि। पुरुषप्रधान ग्रन्थ स्त्रीक स्वकीय बोली प्रायः प्रतिनिधिक माध्यमसँ सुनबैत अछि। एहि कारणेँ कौटुम्बिक संपत्ति, देखरेख श्रम आ सार्वजनिक सहभागिताक इतिहास रचबाक समय नियमग्रन्थ, कथा आ वस्तुगत साक्ष्य एकहि प्रमाण-स्तरपर नहि राखल जाए। विशेष महिलाक गौरवशाली प्रसंगकेँ औसत स्त्रीक जीवनी बना देब लेखकक पद्धतिक विरुद्ध होयत।

अध्ययन ०१० | खेती आ ग्रामीण अर्थव्यवस्था

मूल अध्यायक शीर्षक : (AGRICULTURE AND THE RURAL ECONOMY)

गामक अर्थव्यवस्था केवल धानक खेती नहि—चरागाह, माछमारी, वनसामग्री, गोधन, बीज, मौसमक श्रम, वस्तुक विनिमय आ धार्मिक-राजकीय देन-दायित्व सभ सम्मिलित अछि। दसम अध्याय प्रागैतिहासिक कृषि-साक्ष्यसँ नगरीकरणक खाद्य-आधार धरि निरन्तरता देखबैत अछि, मुदा 'नगर बनल तँ खेती शुरू भेल' सन कारणक्रम अस्वीकार करैत अछि। धानक संग गहूम, जौ, दालि, तेलहन आ छोट फसल खाद्य-सुरक्षा आ श्रम-वर्षक विविधता स्पष्ट करैत अछि।

लोहाक औजार खेतीक किछु काज सरल बना सकैत छल, मुदा कृषि-विस्तारक एकमात्र कारण नहि। प्राकृतिक बाढ़ि-मैदान एकहि समय उपजाऊ गाद आ विनाशकारी जलधारा देइत अछि। लेखक जलप्रबन्धक गृहस्थ, सामुदायिक आ राजनीतिक स्तर विभाजित करैत छथि। बौद्ध कूटदन्त सुत्तमे बीज, पशुधन आ सामाजिक शान्तिक प्रसंगक उपयोग अर्थनीतिक विचारक पाठ-साक्ष्य रूपमे सम्भव अछि; तकरा प्रत्यक्ष कृषि-उत्पादनक सांख्यिक सर्वेक्षण नहि मानबाक चाही।

भूमिक अधिकार, गृहपति-सम्पत्ति, खलिहानक हिस्सेदारी, श्रमिक आश्रय आ अधिशेषक कर-प्रणालीक स्पष्ट संख्या मूल स्रोतपर निर्भर अछि। खुदाइक वनस्पति-अवशेषक आधारपर कर-दर, किसानक औसत आय अथवा जमीनक मालिकी नहि निकालल जा सकैत। एहि अध्यायक प्रमुख पद्धतिगत योगदान अर्थव्यवस्थाकें सामाजिक सम्बन्धक रूपमे देखब अछि; किन्तु स्थल-विशेषक कृषि-परिमाण, ऋण-दायित्व आ सीमांत खेतिहरक अधिकारक पुनर्निर्माण हेतु अधिक स्थानीय प्रमाण आवश्यक रहत।

अध्ययन ०११ | शिल्प आ प्राविधिक ज्ञान

मूल अध्यायक शीर्षक : (CRAFTS AND TECHNOLOGY)

कारीगरीक इतिहासकें आविष्कारक सूची मानबाक बदला सीखन, सामग्री चुनब, आकार देब, ताप नियंत्रित करब, मरम्मत आ वितरणक श्रम-प्रक्रिया मानल गेल अछि। वैशालीक मृदभाण्ड, पाण्डाक लौह उपकरण, चिराँदक हड्डी-सींगक कारीगरी आ विभिन्न प्रकारक मनिकाक तुलना भौतिक संस्कृति भीतर अनेक सहवर्ती तकनीक देखबैत अछि। उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड (NBPW)क चमक कौशलक चिह्न होइतहुँ केन्द्रीय राज्य-नियन्त्रित कारखानाक स्वतः प्रमाण नहि।

अध्याय बनल वस्तु आ निर्माण-स्थलक बीचक महत्वपूर्ण भेद राखैत अछि। लोहाक औजार भेटब स्थानीय लौहगलन सिद्ध नहि करैत; ओकरा लेल भट्टी, लौह-अपशिष्ट आ कच्चा माल चाही। ताम्र-मिश्रधातु, हड्डी, सींग, हाथीदाँत, शंख, काँच आ पत्थरक उपयोग अलग गुणक कारण सहअस्तित्व राखि सकैत अछि। मनिका भेटब व्यापारक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा ओकर निर्माण, उपहार वा यात्रामार्गक सम्पूर्ण इतिहास एकहि वस्तुसँ निश्चय नहि।

कपडा उत्पादन आ मरम्मत सन जैविक वस्तु-आधारित श्रम पुरातत्त्वमे कम बचैत अछि, तँ धातु-मृदभाण्ड पर केन्द्रित अभिलेख अर्थव्यवस्थाक पक्षपाती छवि देबामे सक्षम अछि। सामाजिक विभाजनक प्रश्न मात्र महँगा गहना वा सुंदर भाँड़ नहि; निर्माणक ज्ञान, श्रमक स्वामित्व, बिक्रीक अवसर आ उपभोक्ताक बहुविध स्तर अछि। लेखकक प्रकारभेदी अनुसन्धान श्रेयस्कर अछि, मुदा विशिष्ट पेशा-कुल वा लिंग आधारित श्रम-विभाजन तय करबाक पहिने उपयुक्त पाठ आ स्थानीय साक्ष्य जोडबाक अपेक्षा रहल।

अध्ययन ०१२ | व्यापार, वणिज आ हाट

मूल अध्यायक शीर्षक : (Trade, Merchants and Markets)

बारहम अध्याय व्यापारकें एकटा अखण्ड 'बाजार अर्थव्यवस्था' नहि मानि गृहस्थक आपसी विनिमय, आवधिक हाट, व्यापारी यात्रा, नगर-भण्डार आ दूरस्थ सामग्री-परिवहनक परस्पर जुड़ल जाल मानैत अछि। नदी केवला माल ढोयबाक बाट नहि, माछ-जलक संसाधन आ ऋतुगत जोखिम सेहो अछि। वैशाली आ चम्पा व्यापारक केन्द्र भऽ सकैत छल, मुदा ओकर बीच एकमात्र सुनिश्चित राजकीय मार्ग घोषित करबाक लेल वस्तुगत आ पाठगत प्रमाणक सुसंगत शृंखला चाही।

नगरक व्यापारी खाद्य-उत्पादनमे ग्रामीण गृहस्थपर निर्भर छल; गामक लोककें लवण, धातु-औजार, कपड़ा अथवा कारीगरीक वस्तु लेल बाहरी विनिमय चाही। ई पारस्परिकता व्यापारकें कृषि सँ अलग आत्मनिर्भर क्षेत्र मानबाक सरलीकरणसँ मुक्त करैत अछि। सेट्टि, व्यापारी आ खुदरा विक्रेताक सामाजिक दर्जा समान नहि; पुरान पालि शब्द आधुनिक 'व्यवसायी'क सहज एकरूपी अनुवाद नहि। धनसंचय, धार्मिक दान आ राजकीय करक तन्त्र व्यापारक इतिहासमे परस्पर गुँथल अछि।

मणि, सिक्का अथवा शंखक एकटा नमूना व्यापारमार्गक अन्तिम नक्शा नहि। सामग्री उपहार, तीर्थयात्रा, पुश्तैनी संग्रह अथवा बादक बसावट-संचर्षसँ सेहो स्थानान्तरित भऽ सकैत अछि। एहि अध्यायक उपलब्धि वस्तुगत साक्ष्य आ आख्यानक मेल करब अछि; कमजोरी ओतय आयत जखन स्थान-विशेषक सामानक अनुमानित प्रवाहकें बिना माप-स्रोत संख्यात्मक अर्थव्यवस्था मानल जाए। लोकव्यापारक असंगठित अभिलेखीय अनुपस्थितिक अर्थ ओकर अभाव नहि।

अध्ययन ०१३ | वैशाली : आर्थिक आ सामाजिक केन्द्र

मूल अध्यायक शीर्षक : (Vaishali as an Economic and Social Centre)

वैशालीक आर्थिक-सामाजिक इतिहास राजकीय गणसंघक केवल राजधानीक कथा नहि अछि। वैशाली एकटा विस्तृत पुरातात्विक परिदृश्य अछि, जाहिमे बसाढ आ आसपासक टीला, रक्षा-प्राचीर, बस्ती-खंड, जल-संरचना, मृद्भाण्ड आ पछिला धार्मिक निर्माण अलग कालसँ सम्बन्धित अछि। वर्तमान दृश्य स्मारक सभक समस्त प्राचीन अवस्थाक प्रत्यक्ष प्रतिरूप नहि। लेखक पुरातात्विक स्तर, बौद्ध-जैन पाठ आ बादक तीर्थस्मृतिक अलग-अलग तिथिक उपयोगक आग्रह करैत छथि।

नगरक खाद्य-आपूर्ति, बासस्थान, शिल्प, मुद्रा, जलनिकास, बाजार आ ग्रामीण पृष्ठभूमि वैशालीक वास्तविक आर्थिक जीवनीक हिस्सा अछि। लिच्छवि राजनीतिक अभिजातवर्गक प्रमुख उल्लेख समस्त नगरवासीक समान राजनीतिक अधिकार नहि सिद्ध करैत। 'गणराज्य' शब्द राजनीतिक व्यवस्था बुझबाक अनुवाद भऽ सकैत अछि, मुदा स्त्री, आश्रित श्रमिक आ गरीब गृहस्थक समान सभासदता मानव अनैतिहासिक होयत। नगरक उपभोक्ता आ उत्पादक समाजमे असमानता अलग-अलग वस्तुगत संकेतसँ जाँचल जाएबाक चाही।

अध्यायक आलोचनात्मक लाभ ई जे नगरकें बहुस्तरीय जीवित समाजक रूपमे देखबैत अछि। तथापि मुद्रा भेंटब सम्पूर्ण नगरीय अर्थव्यवस्थाक मुद्रीकरण नहि, प्राचीर भेंटब लोकतान्त्रिक संस्थाक समता नहि, धार्मिक दान भेंटब नगर-जनक सामूहिक आस्था नहि। वास्तविक आपूर्ति-श्रृंखला आ वैयक्तिक अधिकारक पुनर्निर्माण लेल मुहर, माप, भू-अवशेष आ बसावट-नमूनाक व्याख्या अलग राखब आवश्यक अछि।

अध्ययन ०१४ | अंग आ चम्पा

मूल अध्यायक शीर्षक : (Anga and Champa)

अंगक इतिहासक केन्द्र चम्पाक नदी-आधारित नगर अछि, मुदा अंगकें आधुनिक भागलपुर जिलाक समान क्षेत्र नहि मानल गेल। चम्पा-नाथनगरक उत्खनित टीला, माटिक प्राचीर, परतदार मृदभाण्ड आ पछिला ईंटक निर्माण द्वारा प्राचीन नगरक विकास बहुचरणीय देखाओल गेल अछि। एकटा दीवार नहि बनलासँ नगर बनि गेल; आवागमन, श्रम, जलनिकास आ उत्पादनक निरन्तर निवेश शहरक ऐतिहासिक समय खोलैत अछि।

चम्पाक गंगा-सम्बन्ध माल ढोयबाक सुविधा दैत अछि, मुदा नदीक घुमाव उत्खननक स्रोतक पुनर्स्थापनाक जोखिमो उत्पन्न करैत अछि। गहना बनाबयक साँचा स्थानीय निर्माणक ठोस संकेत भऽ सकैत अछि, जतय दूरदराज सँ आयल मनिका ओकर विपरीत एकाधिक कारणसँ अबैत अछि। लोहा, तामा, हड्डी आ हाथीदाँतक बहुशिल्पी उपयोग प्राचीन नगरीय शिल्पक विविधता देखबैत अछि; ओकर उत्पादनक परिमाण आ कारीगरक दर्जाक निर्णय अलग प्रश्न अछि।

पालि कथामे चम्पाक व्यापारी, गृहस्थ आ यात्राक उल्लेख जीवित सामाजिक कल्पनाक स्रोत अछि, मुदा समुद्री व्यापारक वास्तविक वार्षिक आँकड़ा नहि।

चम्पाक आर्थिक प्रतिष्ठा भौगोलिक मार्ग, कृषक पृष्ठभूमि, नगर-जनसंख्या आ शिल्पक गठबन्धनसँ बुझब उचित अछि। एहि पद्धतिसँ प्राचीन अंगक आर्थिक इतिहास आन पड़ोसी राजनीतिक क्षेत्रक कथा मात्र नहि रहैत, अपन स्वतन्त्र उत्खनन-आधार प्राप्त करैत अछि।

अध्ययन ०१५ | आरम्भिक मुद्रा आ मुद्राकरण

मूल अध्यायक शीर्षक : (Early money and monetisation)

मुद्राकरणक इतिहास सिक्का बनलाक दिनसँ प्रारम्भ नहि होइत। मूल्य मापब, देन-दायित्व तय करब, पशुधन वा अनाजमे भुगतान, धातुक तौल आ संग्रहक प्रथा पहिने सँ रहि सकैत अछि। पन्द्रहम अध्याय पंचचिह्नित रजतक सिक्काक तौल, चिह्न, निर्माणक विधि आ पुनः जाँचक निशानक आधारपर भुगतान आ विश्वासक बहुविध व्यवस्था देखबैत अछि। मुद्रा प्रत्येक चिह्नक अर्थ किसी एक नृपक नाम मानब अथवा ठीक एक आरम्भ-तिथि दैत इतिहास बनायब अनुचित अछि।

गोरहो घाट, वैशाली, चम्पा आ पाटलिपुत्रक मुद्रा-सामग्री समान विनिमय-जगतमे जुड़ि सकैत अछि, मुद्रा ओकर समस्त सिक्का-भण्डार एकहि समयक नहि। कोनो निखात धनराशिक संग्रह युद्ध, आपत्ति, पुरान संचय अथवा आकस्मिक दफनक परिणाम भऽ सकैत अछि; एतय भेटल सिक्काक अनुपात दैनिक हाटमे तकर उपयोगक सटीक प्रतिनिधि नहि। रजत आ ताम्र अलग मूल्य-स्तरक सुविधा देत, मुद्रा वस्तु-विनिमय समाप्त कऽ देत, से कहब आवश्यक नहि।

मूल अध्यायक मजबूत पक्ष मुद्रा-विज्ञानक वजन, पंच-क्रम आ पुरातात्विक स्थलसँ आर्थिक निष्कर्षक परिमित संबंध स्थापन अछि। मुद्रा भेटलासँ अर्थव्यवस्थामे सभ काम नकद भऽ रहल छल से नहि, आ सिक्काक अभावसँ ऋण वा देन-दायित्व नहि छल सेहो नहि। सिक्काक स्वतंत्र परीक्षण, संख्यात्मक वर्गीकरण, उत्खननक स्तर आ तौल-मानकक क्रमबद्ध प्रमाण बिना व्यापक भुगतान-व्यवस्थाक सटीक परिमाणक दाबी नहि होयत।

अध्ययन ०१६ | बौद्ध-जैन संस्थाक अर्थव्यवस्था

मूल अध्यायक शीर्षक : (Buddhist and Jain institutional economies)

बौद्ध आ जैन संन्यास-संस्था 'अर्थसँ बाहरक जगत' नहि, उत्पादन कएने आन लोकक सहयोगपर टिकैत समुदाय छल। सोलहम अध्याय चीवर, अन्न, निवास आ औषधि सन आवश्यकता सँ संघक वस्तुगत इतिहास देखबैत अछि। गृहस्थक दान, भिक्षाटनक दैनिक आचरण, वृष्टि-वासक मौसमी स्थिरता आ यात्रारत भिक्षुसभक सत्कार संसाधनक नियमित प्रवाह बनबैत अछि। एहि प्रवाहकें आधुनिक लाभ-उद्देश्य वाला व्यापार मानब अनुचित, मुदा ओकर आर्थिक परिणाम नकारब सेहो अनुचित।

अम्बपालीक उपवन-दानक कथा संघक सम्पत्ति आ प्रतिष्ठाक सांस्कृतिक स्मृति अछि, सम्पत्ति-अन्तरणक मूल पट्टा नहि। चम्पाक विनय-प्रकरणमे यात्रारत भिक्षुक लेल अन्न-जल, आसन, औषधि आ सहायताक प्रसंग संस्थाक व्यावहारिक भार देखबैत अछि। बौद्ध अनुशासनक व्यक्तिगत धन-त्याग आ संघक सामुदायिक इमारत-सम्भार एक-दोसरक प्रत्यक्ष विरोध नहि, किएक तँ व्यक्ति आ संस्था अलग सम्पत्ति-विन्यासमे रहि सकैत अछि।

एहि अध्यायमे विनयक नियम, जातकक कथा, पुरातात्विक स्तूप, दान-लेख आ बाँचल स्थापत्य सभकें एकटा चित्रमे जोड़ल गेल अछि; निर्णायक बात ई जे सभक स्रोतगत प्रकृति अलग अछि। वर्तमान दृश्यमान विहारक अवशेषकें बुद्धकालक एके अवस्था मानब अथवा दानक उल्लेखसँ नियमित कर-प्रणाली मानब अनैतिहासिक होयत। दानदाता-आश्रित-संस्थाक परस्पर सम्बन्धक इतिहास बनबैत ई समीक्षा धर्मक समाजार्थिक आयाम देखबाक उपयोगी पद्धति प्रस्तुत करैत अछि।

अध्ययन ०१७ | शिक्षा, वाद-विवाद आ बौद्धिक समुदाय

मूल ग्रन्थक सतरहम अध्यायक आधारभूत उपलब्धि ई अछि जे शिक्षा-इतिहासकें आधुनिक विद्यालय अथवा विश्वविद्यालयक संस्थागत प्रतिरूपमे नहि बाँधल गेल अछि। गृहस्थ शिक्षक, वेदपाठी परम्परा, विदेहक राजसभा, भ्रमणशील श्रमण, वैश्यक नगर-समुदाय, बौद्ध सङ्घ आ जैन चतुर्विध समुदाय—ई सब अलग-अलग ज्ञान-सञ्चरणक व्यवस्था छल। लेखक स्मरण, वाचिक अनुशासन, प्रश्नोत्तर, प्रतिष्ठा आ आश्रयकें शिक्षा-संस्थाक वास्तविक घटक मानैत छथि। एहि पद्धतिसँ प्राचीन ज्ञान-संस्कृतिक पुनर्रचनामे भवनक पुरातात्विक अवशेषक अभाव निर्णायक बाधा नहि बनैत अछि; मुदा ततए पाठक साक्ष्य आवश्यक भऽ जाइत अछि।

जनक-याज्ञवल्क्य संवाद, गार्गी आ मैत्रेयीक प्रसङ्गक लेखक द्वारा कएल पृथक्करण समीक्षाक विशेष विषय अछि। ई साहित्यिक परम्परा विदेहक बौद्धिक प्रतिष्ठा आ स्त्री-प्रश्नकर्ताक स्मृति सुरक्षित रखैत अछि, किन्तु एतए सँ समस्त स्त्रीक शिक्षामे समान पहुँच अथवा ऐतिहासिक दरबारक हूबहू कार्यवृत्त सिद्ध नहि होइत अछि। गार्गीक उपस्थितिक महत्त्व ओकर अपवादात्मक दृश्यताक बावजूद अछि। एहन पाठक उपयोगमे साहित्यिक प्रतिनिधित्व आ जनसंख्यात्मक तथ्यक बीच स्पष्ट सीमा राखल गेल अछि।

चम्पाक सोणदण्ड आख्यान, वैशालीक वाद-स्थलक उल्लेख आ विनयक द्वितीय परिषद्-परम्पराकें लेखक शिक्षा, प्रतिष्ठा, अनुशासन आ सामूहिक निर्णयक सन्दर्भमे पढैत छथि। ई व्याख्या प्रभावी अछि, मुदा मूल बौद्ध स्रोतक विभिन्न संकलन-काल आ सम्प्रदायगत सम्पादनक अन्तर जँ तुलनात्मक सारिणीसँ बेसी स्पष्ट कएल जाए तँ ऐतिहासिक प्रतिज्ञा आरो सुदृढ़ होयत। अध्यायक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष शिक्षा आ साक्षरताकें पर्याय नहि मानब अछि; अशोककालीन अभिलेखसँ लेखनक व्यापक प्रयोग बुझाईत अछि, सामान्य साक्षरताक प्रतिशत नहि।

प्रमाण-सीमा : मूल अध्याय १७.१-१७.३०; विशेष पाठ-संकेत—बृहदारण्यकक जनक-चक्र, सोणदण्ड सुत्त, बौद्ध विनय, जैन शिक्षण-परम्परा। अलग मूल संस्करणक शब्दशः पाठ-मिलान एहि समीक्षामे स्वतन्त्र रूपसँ सम्पन्न नहि अछि।

अध्ययन ०१८ | स्वास्थ्य, चिकित्सा आ शरीरक सामाजिक इतिहास

अठारहम अध्याय चिकित्सा-इतिहासकें आरम्भसँ आयुर्वेदक परिपक्व शास्त्रीय सिद्धान्तक इतिहास बना देबाक प्रवृत्तिक विरोध करैत अछि। रोग, पोषण, श्रम-क्षय, गर्भधारण, बाल्यावस्था, जलनिकासी आ परिचर्याक प्रश्नसँ प्रारम्भ करब सामाजिक इतिहासक दृष्टिसँ युक्तिसंगत अछि। पुरातत्त्वमे इनार, वलयाकार कूप अथवा नाली भेटब स्वास्थ्य-संबद्ध पर्यावरणक साक्ष्य भऽ सकैत अछि, चिकित्सालय अथवा विशेष रोगक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। वैशाली आ चम्पाक शहरी संरचनाकें एहि सावधानीसँ पढ़ल गेल अछि।

बौद्ध विनयक भैषज्यखण्ड, रोगी भिक्षुक परिचर्याक कथासभ आ जीवकक जीवन-कथाक व्याख्यामे अध्याय एकटा उपयोगी भेद करैत अछि—व्यावहारिक उपचारक सामाजिक पहचान एक दिस, बादमे विकसित चिकित्सकीय सिद्धान्तक पूर्ण प्रणाली दोसर दिस। जीवकक कथा शल्यक्रियाक सम्भावनाक साहित्यिक बिम्ब प्रस्तुत करैत अछि; ओकर आधारपर आधुनिक रोगनिदान अथवा चिकित्सापाठ्यक्रम प्रमाणित नहि होइत अछि। भिक्षुसङ्घक रोगी-देखभालकें सामूहिक दायित्व मानब लेखकीय तर्कक महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष अछि।

अशोकक द्वितीय प्रमुख शिलालेखमे मनुष्य आ पशु-चिकित्सा तथा औषधीय वनस्पतिक व्यवस्था सार्वजनिक कल्याणक भाषामे आएल अछि। ई राज्यसँ सम्बन्धित अपेक्षाक इतिहासक साक्ष्य अछि, मुदा प्रत्येक नगरमे अस्पताल होयबाक प्रमाण नहि। जैन तपश्चर्या आ बौद्ध औषधीय लचीलापनक अन्तरकें सेहो निरपेक्ष विरोध नहि बनाओल गेल अछि। अध्यायक सीमा एतए अछि जे स्त्री-स्वास्थ्य, ग्रामीण उपचारकर्ता आ जाति-अनुसार उपलब्धताक प्रत्यक्ष स्थानीय अभिलेख अल्प अछि; सिद्धान्ततः महत्वपूर्ण ई प्रश्न कोनो काल्पनिक आँकडासँ भरल नहि जा सकैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय १८.१-१८.३०; विनय भैषज्यखण्ड, जीवक आख्यान, वैशाली-चम्पा उत्खनन, अशोक शिलालेख आ उत्तरकालीन चिकित्साशास्त्रक पृथक स्तर।

अध्ययन ०१९ | वैदिक अनुष्ठानसँ क्षेत्रीय धार्मिक बहुलता धरि

उन्नीसम अध्यायक प्रमुख प्रतिज्ञा धार्मिक इतिहासक एकरेखीय प्रतिस्थापनक विरोध अछि। विदेहमे वैदिक अनुष्ठानक प्रसार, जनकसभाक प्रतिष्ठा, श्रमण परम्पराक उभार, बौद्ध-जैन संस्थाक स्थायित्व आ अशोककालीन स्मारक—ई सबकें एकटा निरन्तर, मुदा बहुध्रुवीय परिवर्तनक रूपमे पढ़ल गेल अछि। शतपथ ब्राह्मणमे विदेघ माथवक अग्नियात्रा पूर्वदिस धार्मिक अधिकारक विस्तारक साहित्यिक कल्पना रखैत अछि; एहि पाठकें जङ्गल जलाएब अथवा शून्य भूभागमे एकमात्र जनसमूहक आगमनक प्रत्यक्ष घटना मानब अनुचित होयत।

सदानीराक आधुनिक नदीसँ पहिचान अनिश्चित होयबाक स्वीकारोक्ति एहि अध्यायक पद्धतिगत शक्ति अछि। एहि अनिश्चितताक कारणेँ कथा-भूगोलक अर्थ मेटाइत नहि अछि; उलटे नदीक सांस्कृतिक सीमारेखाक रूपमे उपस्थितिक समीक्षा सम्भव होइत अछि। जनक-याज्ञवल्क्य प्रसङ्गमे आर्थिक दान, बौद्धिक प्रतिस्पर्धा आ राजकीय प्रतिष्ठाक मिलनक लेखकीय विवेचन सामाजिक अर्थव्यवस्था आ दर्शनकें एकसंग पढ़बाक दृष्टि दैत अछि।

बौद्ध आ जैन उपस्थिति, अम्बपालीक दान, चम्पामे ब्राह्मण-श्रमण वाद, आ वैशालीक स्तूपक उत्तरकालीन परतसभक माध्यमसँ लेखक स्मृति आ स्मारकक बीच अन्तर सुरक्षित करैत छथि। ‘बृहत्तर मगध’ अवधारणा एकटा बहसयोग्य विश्लेषण-पद्धति अछि; एकरा स्थिर सांस्कृतिक सीमा मानि देलासँ विदेहक वैदिक आ श्रमण सम्बन्धक जटिलता हराएत। अध्यायक सीमा एतए अछि जे लोकधर्म आ घरेलू पूजा आंशिक रूपेँ अदृश्य रहैत अछि; अभिलेखहीन धार्मिक जीवनकें लेखकक संस्थागत इतिहास कतेक प्रतिनिधित्व दैत अछि, ई प्रश्न खुलल रहैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय १९.१-१९.३०; शतपथ, बृहदारण्यक, बौद्ध-जैन स्मृति, वैशालीक पुरातत्त्व आ मौर्यकालीन स्मारकक कालभेद।

अध्ययन ०२० | वज्जि-विदेहमे बौद्ध धर्मक सामाजिक संस्थापन

बीसम अध्याय धार्मिक यात्राक स्थान-सूची सँ आगाँ बढि बौद्ध समुदायक पोषण आ पुनरुत्पादनक सामाजिक प्रक्रिया जाँचैत अछि। ब्रह्मायु सुत्तमे मिथिलाक उल्लेख ग्रन्थकारक लेल विदेह सम्बन्धी बौद्ध स्रोतक उल्लेखनीय साक्ष्य अछि; तथापि एहि पाठक नगर-वर्णनकेँ आधुनिक पुरातात्विक मानचित्रक समान नहि मानल गेल अछि। वैशालीमे उपदेश, वर्षावास, वृक्षाराम, दान आ संघीय अनुशासनसँ जे परस्पर निर्भर संरचना बनैत अछि, अध्याय ओकर आर्थिक आ सामाजिक आधार खोजैत अछि।

अम्बपाली आ लिच्छवि कुलीनसभक बीच अतिथि-सत्कारक प्रतिष्ठात्मक प्रतिस्पर्धाक व्याख्या विशेष अर्थपूर्ण अछि। आम्रवन दानक प्रसङ्ग स्त्रीक संसाधन-अधिकार आ बौद्ध संस्थाक स्थिर भौतिक आधार दुनूकेँ जोड़ैत अछि। मुदा एहि एक घटना सँ वैशालीक सम्पूर्ण स्त्री-संपत्ति कानून निकालब सम्भव नहि। भिक्षुणी-दीक्षाक वैशाली-संबद्ध परम्परा स्त्री-धार्मिक संस्थापनक इतिहास लेल आवश्यक अछि, जखन ओकर नियमसभक रचना-काल अलग प्रश्न रहैत अछि।

वैशालीक कथित द्वितीय परिषद् आ मुद्रा-व्यवहार सम्बन्धी विनय-विवादमे लेखक एकटा गम्भीर संस्थागत प्रश्न उठबैत छथि—त्यागपर आधारित समुदाय धन, भण्डार, आवास आ सामूहिक अनुशासनक व्यवहार कोना करय? परिषद्-आख्यानक सम्प्रदायगत पाठान्तर स्वीकार करैत लेखक विवादक सामाजिक तात्पर्य सामने अनैत छथि। वैशालीक स्तूप, स्तम्भ आ अन्य अवशेषसँ उत्तरकालीन बौद्ध स्थायित्व प्रमाणित होइत अछि, प्रत्येक सुत्तक घटना स्वतः नहि। समीक्षा अनुसार, अध्यायक ऐतिहासिक मूल्य बौद्ध धर्मक 'उद्भव' नहि, बल्कि ओकर सामाजिक संस्थापनक अलग-अलग स्तर स्पष्ट करबमे अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २०.१-२०.३०; ब्रह्मायु सुत्त (मज्झिम निकाय ११), दीघ निकाय, विनयक परिषद्-परम्परा आ वैशालीक उत्खनन।

अध्ययन ०२१ | वैशाली-विदेहमे जैन धर्मक गतिशील सामाजिक भूगोल

एकैसम अध्याय महावीरक जीवनी-परम्परा, वैशालीक बस्ती-संसार, वर्षावास आ गृहस्थ-श्रमण सहयोगसँ जैन धर्मक क्षेत्रीय इतिहास रचैत अछि। कुण्डग्रामसँ सम्बन्धित परम्परा महत्वपूर्ण अछि, मुदा ओकर आधुनिक ठिकानाक सटीक पहचान आ प्रत्येक वंशावलीक सत्यता स्वतन्त्र प्रश्न अछि। आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, कल्पसूत्र आ बौद्ध ग्रन्थक निगण्ट-सन्दर्भकेँ एकरूप गवाही नहि मानब प्रमाण-पद्धतिक उपयुक्त निर्णय अछि।

वर्षाकालमे भ्रमण-निरोध जैन संस्थाक लेल केवल तपस्वी नियम नहि; ई गृहस्थक सहयोग, भोजन, उपदेश, निवास आ सामुदायिक परिचयक वार्षिक पुनरावृत्ति बनैत अछि। चारि अंगवला जैन समुदाय—साधु, साध्वी, श्रावक आ श्राविका—स्त्री आ गृहस्थकेँ धार्मिक संगठनक भीतर स्थान दैत अछि, यद्यपि परम्परागत सदस्य-सङ्ख्या अथवा बादक महिमा-वृत्तान्तकेँ जनगणनाक विकल्प नहि मानल जा सकैत अछि।

सिंह सेनापतिक बौद्ध आख्यानमे निगण्ट समुदाय सम्बन्धी उल्लेख बाह्य साक्ष्य होइतहुँ सम्प्रदायगत प्रतिस्पर्धासँ मुक्त नहि अछि। लेखक ई दूहरी स्थिति पहचानैत छथि। जैन आ बौद्ध मतभेदक संग-संग राहि, बाजार, नगर आ संरक्षणक साझा भौतिक आधारपर ध्यान देब सार्थक अछि। अध्यायक आलोचनात्मक सीमा स्थानीय आरम्भिक जैन स्थापत्यक प्रमाणक अपेक्षाकृत न्यूनता अछि; उत्तरकालीन तीर्थक निरन्तर प्रसिद्धि पुरातन मठक अखण्ड अस्तित्व नहि सिद्ध करैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २१.१-२१.३०; जैन आगमीय परत, कल्पसूत्रक वर्षावास-सूची, बौद्ध अङ्गुत्तर निकायक सिंह आख्यान आ वैशालीक पुरातत्त्व।

अध्ययन ०२२ | शैव, शाक्त आ वैष्णव संस्थाक ऐतिहासिक रूपान्तरण

बाइसम अध्याय एक धार्मिक सम्प्रदायक स्थानपर दोसरक सम्पूर्ण विजयक कथनसँ बचैत अछि। गुप्तोत्तर कालमे मूर्तिपूजा, देवालय, मठ, धार्मिक दान,

अनुष्ठानविशेषज्ञ आ स्थानीय तीर्थक वृद्धि धार्मिक परिदृश्यक संस्थागत रूपान्तरण छल। शैव आ शाक्त परम्पराकेँ पूर्ण पृथक द्वीप मानब अथवा एकटा देवमूर्ति भेटिते विशिष्ट तान्त्रिक सम्प्रदायक निश्चय कऽ लेब दूनू अनुचित अछि। लेखकक ई सावधानी कला-इतिहास आ धर्म-इतिहासक सीमाकेँ स्पष्ट करैत अछि।

अंगक्षेत्रक मन्दार पर्वतक अभिलेखीय परत, विशेषतः राजकीय वैष्णव आश्रय आ जलसंसाधन निर्माणक संकेत, अध्यायक महत्वपूर्ण स्थानीय आधार अछि। प्रतिमा आ शिलालेखक दिनाङ्कित उपस्थिति तात्कालिक धार्मिक निवेश सिद्ध करैत अछि; उत्तरकालीन समस्त लोककथा अथवा आजुक तीर्थ-विन्यासक प्राचीनताकेँ नहि। पाल शासकक बौद्ध संरक्षणकेँ सम्पूर्ण समाजक बौद्ध एकाधिकार नहि मानबाक निर्देश एतए विशेष महत्त्व रखैत अछि।

मिथिलामे विविध देवमूर्तिक प्राप्ति सामाजिक धार्मिक बहुलताक संकेत अछि, मुदा खेत, पोखरि अथवा पुनः प्रयुक्त स्थलसँ भेटल मूर्तिक मूल स्थापना-स्थान अस्पष्ट रहि सकैत अछि। स्त्रीक भूमिका सेहो देवी-तत्त्वक वैचारिक प्रतिष्ठासँ स्वतः बराबरी नहि होइत; दानदात्री, अनुष्ठान सहभागी आ धर्मशास्त्रीय प्रतीकक प्रमाण अलग-अलग अपेक्षित अछि। अध्याय धार्मिक संस्थाक भौतिक पुनरुत्पादन—प्रतिमा-रक्षा, पूजा-व्यवस्था, जल, भूमि आ संरक्षक—पर अर्थपूर्ण बल दैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २२.१-२२.३०; मन्दार अभिलेख, शिल्पकला, देवीमाहात्म्य, तान्त्रिक पाठ आ पुरातात्विक स्थल-विवरणक पृथक समयसीमा।

अध्ययन ०२३ | तीर्थ-भूगोल : स्मृति, जल आ आवागमनक निर्माण

तेइसम अध्याय तीर्थकें स्थिर नक्शाक पूर्वनिर्धारित चिह्न नहि मानि सामाजिक-ऐतिहासिक निर्माणक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। नदी, वन, पोखरि, पहाड़, यात्राक मार्ग आ धार्मिक आख्यान परस्पर सम्बन्धमे पवित्र स्थानक अर्थ उत्पन्न करैत अछि। पानि आ भूगोलक भौतिक प्राचीनता तथा कोनो विशेष देवाराधना अथवा तीर्थयात्राक रचनाकाल एक नहि होइत अछि। एहि भेदसँ वर्तमान धार्मिक विश्वासक अध्ययन सम्भव होइत अछि, बिना ओकरा अनिवार्यतः सहस्राब्दीय निरन्तरताक प्रमाण बनौने।

वैशालीमे बौद्ध स्तूप आ स्तम्भ, जैन स्मृति तथा पूर्ववर्ती नगर-परम्परा बहुस्तरीय पवित्र भूगोल बनबैत अछि। चम्पाक गगगरा पोखरिक बौद्ध साहित्यिक स्मृति आ ओकर आजुक पुरातात्विक सटीक अवस्थिति अलग प्रश्न अछि। मन्दार पर्वतक प्राकृतिक स्थल, अभिलेखित जलाशय आ बहुधार्मिक व्याख्या एकहि स्थानक भिन्न कालक जीवन दर्शबैत अछि। विक्रमशिलाक मठीय संस्थानक प्रमाण उत्तरकालीन पवित्र भूगोलक अलग आधार दैत अछि।

जनकपुरक सीता-जनक आख्यान, परिक्रमा, पोखरि आ देवालयक अध्ययन अध्यायक उपयोगी उदाहरण अछि—धार्मिक नगरक वर्तमान रूप ऐतिहासिक संरक्षक, निर्माण आ आवागमनद्वारा बनल अछि। महिला तीर्थयात्री, कारीगर, आश्रयदाता आ व्यापारिक सेवासभ एहि प्रक्रियाक श्रमसाध्य पक्ष अछि। आलोचनाक दृष्टिसँ, तीर्थभूगोलमे कथ्य-स्थानान्तरणक घटना प्रमाणित करबाक लेल यात्रा-वृत्तान्त, अभिलेख, स्थापत्यक कालक्रम आ स्थानीय भू-परिवर्तनक पारस्परिक तुलना आवश्यक अछि; मूल ग्रन्थ स्वयं एहि सीमाक उल्लेख करैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २३.१-२३.३०; वैशाली, चम्पा, मन्दार, विक्रमशिला आ जनकपुरक अलग-अलग पाठ-साक्ष्य।

अध्ययन ०२४ | पर्व, पञ्चाङ्ग आ सामाजिक समयक इतिहास

चौबीसम अध्यायक विचारणीय योगदान तिथि-गणनाकेँ केवल खगोलीय गणना नहि, बल्कि सामाजिक समन्वयक पद्धति मानब अछि। चन्द्रमास, सौरवर्ष, अधिकमास, ऋतु, तिथि, नक्षत्र आ मुहूर्तक विशेषज्ञ गणना कृषि, विवाह, व्रत, वर्षावास, दान आ यात्राक व्यवहारसँ जुड़ैत अछि। वैदिक ज्योतिषक प्राचीन गणना-पद्धति आ आजुक प्रत्येक पर्वक पुरातन रूपकेँ एक मानब लेखक टारैत छथि। पुरान गणनात्मक सिद्धान्तक अस्तित्वसँ कोनो आधुनिक लोकपर्वक अपरिवर्तित प्राचीनता स्वतः प्रमाणित नहि होइत अछि।

बौद्ध उपोसथ आ वर्षावास तथा जैन वर्षाकालीन अनुशासन जलवायुक मौसमी चक्रकेँ संस्थागत अनुशासनमे बदलैत अछि। एहि तुलनामे पञ्चाङ्गक धार्मिक अधिकार आ सामान्य गृहस्थक श्रम, आहार आ आतिथ्यक बीच सम्बन्ध सामने अबैत अछि। प्राचीन राजकीय संवत् आ अभिलेखक तिथिलिपि लोकोत्सवक लोकप्रियता नापबाक साधन नहि अछि; ओ कानूनी स्मृति आ शासकीय समयक प्रमाण अछि।

सामा-चकेवा, मधुश्रावणी आ छठ पर चर्चा मैथिल समाजक स्त्रीकेन्द्रित अनुष्ठान, वैवाहिक सम्बन्ध आ सामुदायिक श्रमक अर्थ खोलेत अछि। मुदा आधुनिक नृवंशविज्ञान जतेक विश्वसनीयतासँ वर्तमान रीति देखाबैत अछि, ओतबे निष्ठासँ ओकर वैदिक कालक ऐतिहासिक मूल नहि बताबैत अछि। सीमापार मिथिलाक साझा पर्व-चक्र आ प्रवासक प्रभाव पर लेखकीय दृष्टि उपयोगी अछि, यद्यपि जाति, आयु आ आर्थिक स्थिति अनुसार भागीदारीक अन्तरक स्थानीय अभिलेख आरो आवश्यक रहत।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २४.१-२४.३०; वैदिक ज्योतिष, बौद्ध-जैन अनुशासन, अभिलेखक संवत्-तिथि आ आधुनिक मैथिली पर्व-नृवंशविज्ञानक अलग-अलग प्रमाणकाल।

अध्ययन ०२५ | मृत्यु, पितृस्मृति आ जीवनचक्रक संस्कार

पचीसम अध्यायक मूल तर्क अछि जे जन्म, विवाह आ मृत्यु जैविक घटना होइतहुँ समाजमे अधिकार, सम्बन्ध आ स्मृतिक परिवर्तन करैत अछि। संस्कारक प्राचीन ग्रन्थमे निर्देशित विधि सभ काल आ सभ समुदायमे एकरूपसँ पालित भेल, एहन कल्पनाकेँ लेखक अस्वीकार करैत छथि। ऋग्वैदिक अन्त्येष्टि-स्मृति, शतपथक पितृ-विधान, गृह्यसूत्र, धर्मशास्त्र आ आधुनिक मैथिल संस्कारक बीच दीर्घ समयान्तराल अछि; प्रामाणिक इतिहासकारकेँ पहिने एहि अन्तरकेँ चिह्नित करबाक चाही।

दाहसंस्कारमे शरीरक रूपान्तरणसँ बेसी प्रश्न समाजमे मृत व्यक्तिक स्थान, उत्तराधिकार, शोक, अपवित्रता आ पितृसम्बन्धक अछि। श्राद्धक सामाजिक इतिहासमे वंश, स्मरण आ धार्मिक सेवाक अर्थव्यवस्था एकसंग अबैत अछि। वैवाहिक संस्कार परिवारक पुनर्गठन आ सम्पत्तिक हस्तान्तरणसँ जुड़ल अछि; एहि कारणेँ मृत्यु आ विवाहक आलोचना मे स्त्रीक अधिकार आ गृहस्थ श्रमकेँ अलग नहि राखल जा सकैत अछि। मूल ग्रन्थ पुरुषप्रधान विधिपाठक कथनकेँ सम्पूर्ण व्यवहारक एकमात्र चित्र नहि मानैत अछि, ई ओकर उपलब्धि अछि।

बौद्ध महापरिनिब्बान परम्पराक लिच्छवि अवशेष-दाबी आ वैशालीक उत्खनित स्तूपमे ऐतिहासिक सम्बन्ध खोजब आकर्षक अछि, मुदा कथात्मक बँटवाराक प्रत्येक वस्तु पुरातात्विक रूपसँ प्रमाणित अछि, एहन निष्कर्ष अनुचित होयत। जैन सल्लेखना सम्बन्धी आध्यात्मिक अनुशासनकेँ सामान्य जैन गृहस्थक अन्त्येष्टि-विधान बनाओल नहि जा सकैत अछि। पुरातत्त्वमे सामान्य दाहसंस्कारक अल्प दृश्यता धार्मिक व्यवहारक अभाव नहि सिद्ध करैत अछि। निष्कर्षतः अध्याय मृत्युक इतिहासकेँ स्मृति, वंश आ भौतिक संस्थानक इतिहास बना दैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २५.१-२५.३०; ऋग्वैदिक अन्त्येष्टि, शतपथ, गृह्यसूत्र, वैशालीक स्तूप आ जैन-बौद्ध श्राद्ध/मरण-परम्पराक अलग पाठस्तर।

अध्ययन ०२६ | भूमिदान आ कृषिसमाजक परिवर्तन

छब्बीसम अध्याय ताम्रपत्रक दानादेशकें गामक सम्पूर्ण सामाजिक छायाचित्र नहि मानि राजस्व, अधिकार आ स्थानीय संसाधनक पुनर्विन्यासक वैधानिक दस्तावेज मानैत अछि। दानक सीमावर्णन, भोग, कर, हिरण्य, बन्धन अथवा करमुक्तिक विधान राजकीय दाबी स्पष्ट करैत अछि; वास्तविक खेतीक विस्तार, परिवारक बँटवारा अथवा कृषकक स्वीकृतिक प्रत्यक्ष स्थिति नहि। ई भेद इतिहासमे जमीन्दारी अथवा 'सामन्तवाद'क एकरेखीय कथा बनौने बिना आर्थिक शक्ति सम्बन्ध पहिचानबाक अवसर दैत अछि।

नन्दपुर, मुंगेर, भागलपुरक नारायणपाल सम्बन्धी ताम्रपत्र, बंगाँवक विग्रहपाल तृतीय आ बगहाक अनुदानक उदाहरण क्षेत्रीय तुलनाक अवसर दैत अछि। लेखकीय विवेचनमे भूमि खाली माटि नहि; पोखरि, चरागाह, वन, बाट, आवास आ विविध अधिकारक समूह अछि। राजाक दानसँ अनिवार्य रूपेँ स्थानीय कृषक विस्थापित भेल, एहन दावा जतेक असिद्ध, कृषकक स्थितिमे कोनो परिवर्तन नहि भेल, सेहो ओतबे असिद्ध अछि। कर पाबयवला अथवा न्याय-दावा करयवला बदलि सकैत अछि जखन खेत जोतयवला ओहि ठाम रहैत अछि।

ग्रन्थकार धार्मिक भूमिदानकें अर्थव्यवस्थासँ अलग नहि करैत छथि। वेदपाठी, मठ, शिक्षण आ अनुष्ठानक संसाधन अनाज, श्रम आ परिश्रमपर आधारित अछि।

'भारतीय सामन्तवाद' बहसमे स्थानीय ताम्रपत्रक शब्दार्थ आ व्यावहारिक प्रभाव बिना सर्वभारतीय सिद्धान्त आरोपित करब जोखिमपूर्ण अछि। स्त्रीक खेतीमे श्रम आ कृषकक बातचीत दस्तावेजमे अल्प दृश्य अछि—एहि अभावकें लेखक स्वीकारैत छथि; समीक्षामे एही स्वीकारोक्तिक आधारपर पूरक अभिलेखक आवश्यकता चिन्हित कएल गेल अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २६.१-२६.३०; मुंगेर, भागलपुर, बंगाँव, बगहा आ तिरभुक्ति सम्बन्धी ताम्रपत्रक मूल आदेश, सीमा आ राजस्व-पदक प्रसंग।

अध्ययन ०२७ | गाम, हाट आ नगरक परस्पर निर्भरता

सत्ताइसम अध्यायक वैचारिक विशेषता गामकें आत्मनिर्भर कोशिका आ नगरकें ओकर विपरीत ध्रुव मानबाक सरलीकरणक अस्वीकार अछि। ग्राम, हाट, पुर, नगर आ चतुरक सन पदक ऐतिहासिक अर्थ सन्दर्भसँ तय होइत अछि। राजस्वग्रामक परिधि ओकर आवासीय हिस्सा जतेक मात्र नहि; खेत, चरागाह, पानि आ अनुषंगी जीवनक क्षेत्र धरि पहुँचैत अछि। बाजार नियमित हो वा सामयिक, ग्रामीण उत्पादन, परिवहन, ऋण, कर-संग्रह आ विशेषज्ञ सेवाक माध्यमसँ ओकर सम्पर्क बनैत अछि।

मुद्गगिरि/मुंगेर अभिलेखीय प्रशासनक केन्द्रक रूपमे आ अन्तिमक/विक्रमशिला संस्थागत केन्द्रक रूपमे अलग आर्थिक कार्य करैत अछि। राजधानी, मठ, नदीघाट आ ग्रामीण हाटक नेटवर्कमे परस्पर चलयवला वस्तु, भोजन, श्रम आ सूचना अध्यायक विश्लेषणमे प्रमुख अछि। व्यापक पाल-सेन क्षेत्रक व्यापारी-संघ अथवा हाटक प्रमाण उपयोगी तुलनात्मक आधार अछि; मुदा एकरा स्वतः मिथिला अथवा अंगक प्रत्येक स्थानक स्थानीय अभिलेख कहब उचित नहि।

शहरक पतन बनाम निरन्तर उन्नतिक विवादमे लेखक भिन्न स्थानपर भिन्न प्रक्रिया सम्भव मानैत छथि। नगरक दर्जा एकटा प्रसिद्ध नाम, अकेला मन्दिर अथवा एक ताम्रपत्रसँ प्रमाणित नहि; संरचनाक घनत्व, शिल्प-अवशेष, आवागमन आ प्रशासनक संयुक्त साक्ष्य अपेक्षित अछि। नदीक मार्ग बदललासँ नगरक पहुँच सेहो बदलैत अछि। स्त्रीक हाट-सम्बन्धी श्रम आ अनौपचारिक विनिमय दस्तावेजमे अल्प दृश्य अछि; एहि प्रश्नक बिना नगर-इतिहास अभिजनक इतिहास बनि सकैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २७.१-२७.३०; तिरभुक्ति ताम्रपत्र, मुंगेर, विक्रमशिला, पालकालीन तुलनात्मक बाजार-साक्ष्य आ नदी-भूगोल।

अध्ययन ०२८ | श्रम, सेवा आ पेशागत समुदायसभक निर्माण

अट्टाईसम अध्याय भूमिधारी, राजा आ दानग्राहीक दस्तोवेजक पाछाँ छिपल श्रमकै इतिहासक केन्द्रमे अनैत अछि। खेत जोतनिहार, नाविक, सन्देशवाहक, शिल्पी, अभिलेख उकेरनिहार, मूर्तिकार, चरवाहा, घरेलू श्रमिक आ धार्मिक सेवाकर्मी मिलि सामाजिक उत्पादन सम्भव करैत छलाह। कौशल, सेवा, पद, जाति आ जन्मगत पहचानकै एकहि अर्थमे मानब लेखक अस्वीकारैत छथि। किछु श्रमसमूह कालान्तरमे वंशानुगत श्रेणीमे संघटित भेल होइत, मुदा ओकर समय आ प्रमाण आवश्यक अछि।

भागलपुर आ मुंगेरक ताम्रपत्र विविध पदनाम आ राजकीय अधिकारक दृश्यता दैत अछि। भागलपुर ताम्रपत्रक उत्कीर्णकक नाम अभिलेख-निर्माणमे विशिष्ट तकनीकी श्रमक साक्ष्य अछि, समस्त लेखन-व्यवस्थाक पूर्ण सामाजिक संरचनाक नहि। मुंगेरक अपूर्ण मूर्तिक उदाहरण निर्माणक चरण आ शिल्प कौशल देखबैत अछि; एक स्थिर जातिगत कारखानाक सुनिश्चित प्रमाण नहि। विक्रमशिलाक विशाल संस्थान भिक्षुक अतिरिक्त भोजन, वस्त्र, मरम्मत आ श्रमक माँग पैदा करैत छल— ई व्यावहारिक अनुमान अछि, मुदा प्रत्येक श्रमिकक जाति अथवा संख्याक अलग साक्ष्य अपेक्षित अछि।

काइवर्त, मेद, आन्ध्र, चाण्डाल सन पदक पाठ सन्दर्भहीन अनुवादसँ भ्रम पैदा भऽ सकैत अछि। जातीय उपाधि, पेशा, भू-उत्पत्ति आ राजकीय लक्षण एकहि श्रेणी नहि अछि। स्त्रीक घरेलू आ उत्पादक श्रमक अकथित उपस्थिति अध्यायक महत्त्वपूर्ण अभावक रूपमे चिह्नित अछि। ई आलोचना श्रम इतिहासक महत्त्व बढ़बैत अछि, मुदा अलग समाजशास्त्रीय गणनाक दावा नहि करैत; उपलब्ध अभिलेख श्रमक संरचनाक आंशिक दृश्य मात्र दैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २८.१-२८.३०; मुंगेर-भागलपुर दानपत्र, मूर्तिकला, विक्रमशिला आ व्यापक पूर्वी भारतक पेशागत तुलना।

अध्ययन ०२९ | सामाजिक श्रेणीकरणक ऐतिहासिक निर्माण

उनतीसम अध्याय वर्णक शास्त्रीय आदर्श आ जातिक ऐतिहासिक समुदायगत संरचनाकें स्पष्ट रूपसँ अलग करैत अछि। भूमि, अनुष्ठान, पेशा, सैन्यसेवा, राज्यपद, आवास, जन्मसम्बन्ध आ कलङ्क—ई सब सामाजिक विभाजनक अलग आधार भऽ सकैत अछि। दानपत्रमे ब्राह्मणसँ चाण्डाल धरि उल्लिखित वाक्यांश सामाजिक प्रतीकात्मक फैलावक भाषण अछि; ओकरा प्रमाणित जनगणना अथवा प्रत्येक समुदायकें स्थिर जातीय कोठामे रखबाक प्रमाण मानब विधिविरुद्ध अछि।

महत्तर, कुटुम्बी, कृषक, अधिकारी, सैनिक आ दूरस्थ क्षेत्रसँ आयल समूहक उल्लेख सामान्य सामाजिक अवस्था आ जन्मगत पहचानक सम्बन्ध पर प्रश्न उठबैत अछि। लेखकक मूल सावधानी अछि जे मध्यकालीन मिथिलामे आजुक ब्राह्मण उपजाति, विवाह-श्रेणी अथवा सामाजिक पदानुक्रम स्वतः लागू नहि कएल जाए। बादमे विकसित संरचनाक प्राचीन पूर्ववृत्त खोजब आवश्यक होइतहुँ ओकर पूर्ण प्रत्यारोपण अनैतिहासिक होयत।

बौद्ध-जैन, ब्राह्मणीय, बाजार आ अभिलेखीय प्रमाण अलग सामाजिक सञ्जाल देखबैत अछि। अर्थव्यवस्थाक विस्तार सामाजिक उन्नति आ अधीनताक दुनू अवसर उत्पन्न करैत अछि। स्त्रीक स्थिति पितृवंशीय दस्तावेजमे अपूर्ण रहैत अछि, जखन विवाह, सम्पत्ति आ श्रमक माध्यमसँ सामाजिक क्रम पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनैत अछि। अध्यायक सीमा स्थानीय अभ्यासक अल्प प्रत्यक्ष विवरण अछि; तथापि एकर सबसँ पैघ उपलब्धि जातिक वास्तविक इतिहासकें पुरान शास्त्रीय सूचीमे सीमित नहि रखब अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय २९.१-२९.३०; मुंगेर-भागलपुर ताम्रपत्र, धर्मशास्त्र, पालकालीन सामाजिक पद आ उत्तरकालीन पञ्जीक समयभेद।

अध्ययन ०३० | ब्राह्मणीय संस्था आ उत्तरकालीन जातिक प्रत्यारोपणसँ परहेज

तीसम अध्याय एकटा निर्णायक ऐतिहासिक भेद स्पष्ट करैत अछि: वेदविद, शिक्षक, अनुष्ठानविशेषज्ञ, धर्मशास्त्री आ दानग्राही ब्राह्मणक मध्यकालीन संस्थागत स्थानक चर्चा करब आ उत्तरकालीन मैथिल ब्राह्मण उपजातिक सूचीकेँ ओहि युगपर आरोपित करब अलग काज अछि। गोत्र, प्रवर, शाखा आ श्रोत्रिय पदक ताम्रपत्रीय प्रयोग अपन-अपन विधागत अर्थ रखैत अछि। संस्कृतक श्रोत्रिय शब्दक विद्वत्ता-संबद्ध अर्थसँ उत्तरकालीन मिथिलाक विशिष्ट 'श्रोत्रिय' उपजातिक अस्तित्व तत्काल सिद्ध नहि होइत अछि।

देवपालक मुंगेर ताम्रपत्र, विग्रहपाल तृतीयक बंगाँव अनुदान आ भगलपुरक उल्लेख विद्वान ब्राह्मणक आश्रय आ आर्थिक अधिकारक विभिन्न रूप देखबैत अछि। शिक्षण आ विधिनिर्णयक सामाजिक पूँजी भूमि, दान, प्रतिष्ठा आ विवाह-सम्बन्धद्वारा पुनरुत्पादित होइत अछि। लेखक ब्राह्मणीय संस्थाकेँ एकीकृत समरूप संगठन मानबाक स्थानपर शिक्षित गृहस्थ, राजसभा आ धार्मिक आश्रयक बहुविध सञ्जाल मानैत छथि।

मिथिलाक पञ्जीप्रबन्धक उत्तरकालीन सामाजिक संगठनक संग तत्कालीन शिक्षकीय प्रतिष्ठाक सम्बन्ध खोजैत अध्याय समयान्तरालक सुरक्षा राखैत अछि। धार्मिक संरक्षणमे विशेषाधिकार आ बहिष्कार दुनू उपस्थित भऽ सकैत अछि; एहि आलोचनामे ब्राह्मणीय विद्वत्ताक इतिहास लिखब ओहिमे अन्तर्निहित सामाजिक विषमता नकारब नहि मानल गेल अछि। तथापि सटीक उपजाति-गठनक तिथि लेल पञ्जी-पाण्डुलिपिक दिनाङ्क, शृंखला आ बाह्य अभिलेखक प्रमाण अपरिहार्य अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय ३०.१-३०.३०; मुंगेर, बंगाँव, भागलपुर आ बगहाक अभिलेख; गोत्र-प्रवर-शाखा सम्बन्धी संस्कृत पद; उत्तरकालीन पञ्जी-साक्ष्य।

अध्ययन ०३१ | पञ्जीप्रबन्ध : वंश, विवाह आ अभिलेखक सामाजिक इतिहास

एकतीसम अध्याय पञ्जीकेँ अनादिकालसँ एकसमान चलैत पोथी नहि, बल्कि वंशीय स्मृति, विवाह-विनियमन, क्षेत्रीय पहिचान आ अभिलेखपालक व्यावसायिक व्याख्याक ऐतिहासिक संस्था मानैत अछि। चौदहम शताब्दीक हरिसिंहदेव-संबद्ध औपचारिकीकरणक परम्परा, बचल पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि-काल, उत्तरवर्ती सामाजिक श्रेणी आ आधुनिक डिजिटलीकरण अलग कालखंड अछि। सबकेँ एकसंग मिला देबासँ अभिलेख जतेक कहैत अछि ताहिसँ बेसी अर्थ ओकरापर आरोपित होइत अछि।

मूल, गोत्र आ प्रवरक भेद महत्वपूर्ण अछि। मूल क्षेत्रीय आ वंशीय स्मृतिक श्रेणी भऽ सकैत अछि; गोत्र-प्रवर अलग प्रकारक अनुष्ठानिक पहिचान सँ सम्बन्धित अछि। पञ्जीकारक अभिलेख-वाचन, वैवाहिक सिद्धान्त-निर्णय, दूषण-प्रविष्टि आ सौराठ सभा-संस्कृतिक भूमिका जाँचैत लेखक नियम बनबाक आ पालन होयबाक इतिहास अलग रखैत छथि। मातृवंशीय सम्बन्धक दस्तावेजी दृश्यता सीमित होयबाक कारण पञ्जी संपूर्ण जनसमुदायक जनगणना नहि अछि। कायस्थ पञ्जीपर ध्यान देब एहि संस्थाकेँ एकमात्र सामाजिक समूहमे सीमित नहि करैत अछि।

श्रोत्रियक विशिष्ट मिथिला उपजातिक लगभग १८००क काल-निर्धारण परियोजनाक स्वीकृत पञ्जी-आधारित व्याख्या अछि; एकरा निर्णायक बाह्य सर्वसम्मति कहब सँ पहिने पाण्डुलिपि, तिथि आ पाठभेदक स्वाधीन जाँच आवश्यक अछि। दूषण अभिलेख पूर्वकालीन प्रतिष्ठा-शासनक सामग्री अछि, जीवित व्यक्तिक विरुद्ध नैतिक निर्णयक साधन नहि। डिजिटलीकरण शोध-पहुँच बढ़बैत अछि, मुदा केवल खोज-फल मूल पाण्डुलिपिक फोटो, पाठ-विवरण आ संरक्षण-इतिहासक स्थान नहि लैत अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय ३१.१-३१.३०; पञ्जी-पाण्डुलिपिक कालक्रम, सिद्धान्त-विधि, सौराठ सभा, कायस्थ अभिलेख आ डिजिटल प्रतिक आधार-मूल भेद।

अध्ययन ०३२ | मध्यकालीन मिथिलामे स्त्री, विवाह आ सम्पत्ति

वत्तीसम अध्याय स्त्रीक आर्थिक अधिकारकें केवल धर्मशास्त्रीय नियमक सारणीमे बाँधबासँ बचैत अछि। संस्कृत निबन्धग्रन्थमे विवाह, स्त्रीधन, भरणपोषण, विधवा-अधिकार, उत्तराधिकार आ उपहारक विविध श्रेणी अछि; मुदा नियमक पाठ आ व्यवहारमे ओकर वास्तव प्रयोग अलग होइत अछि। पञ्जीप्रबन्ध वैवाहिक गठजोड़क साक्ष्य दैत अछि, किन्तु पितृवंशीय पञ्जीमे स्त्रीक नाम, स्वर आ श्रम आंशिक रूपसँ दिखाई पडैत अछि। खेती आ गृहस्थीक अर्थव्यवस्थामे स्त्रीक योगदान दस्तावेजक मौनतासँ समाप्त नहि भऽ जाइत अछि।

स्त्रीधनक विविध विधिशास्त्रीय प्रकार, जन्मगृहसँ उपहार, विवाहोपरान्त सम्पत्ति, चल-अचल अधिकार आ विधवाक भरणपोषणपर लेखक सावधानीसँ विचार करैत छथि। ‘अधिकार’ स्वयं एकटा बहुस्तरीय पद अछि: सम्पत्ति रखबाक, उपभोग करबाक, प्रबन्ध करबाक, बेचबाक आ वारिस नियुक्त करबाक अधिकार एकहि बात नहि। किछु अधिकार पर शास्त्रीय मतभेद अछि; एक नियम उद्धृत करिते सम्पूर्ण मैथिल समाजक प्रचलन प्रमाणित नहि होइत अछि।

औपनिवेशिक न्यायालयक ‘मिथिला विधि’ सम्बन्धी निर्णय मध्यकालीन व्यवहारक प्रत्यक्ष प्रतिवेदन नहि, बादक कानूनी पाठ-स्वीकारक इतिहास अछि। आधुनिक विधिसंशोधनकें सेहो अतीत पर उलटि लागू नहि करबाक अध्यायक सावधानी प्रशंसनीय अछि। आलोचनाक दृष्टिसँ, विभिन्न सामाजिक स्तरक स्त्रीक वास्तविक उत्तराधिकार, विवाह-निर्णय आ श्रम-वितरणक सूक्ष्म इतिहास लेल उपयुक्त पारिवारिक कागद, दानपत्र, मौखिक परम्परा आ न्यायिक अभिलेखक युगानुकूल तुलना अपेक्षित अछि।

प्रमाण-सीमा : अध्याय ३२.१-३२.३०; मिथिला विधि-निबन्ध, विवाह-सिद्धान्त, पञ्जी, कृषिसमाजक दस्तावेज आ औपनिवेशिक न्यायिक ग्रहणक पृथक प्रमाणकाल।

अध्ययन ०३३ | कर्णाट-ओइनिवार कालक सामाजिक अर्थव्यवस्था

तेतीसम अध्याय वंशावली आ राजकीय युद्धक इतिहाससँ आर्थिक सम्बन्धक इतिहास अलग करैत अछि। नान्यदेवक सिमरौनगढकेन्द्रित सत्ता आ ओइनिवारक परिवर्तित राजनैतिक संरचनाक बीच भूमि, पानि, कृषक, बाजार, विशेषज्ञ सेवा आ राजसभाक आश्रयक सम्बन्ध चलैत रहल। १३२४क तुगलक विजय राजनीतिक निर्णायक घटना भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा सम्पूर्ण क्षेत्रीय उत्पादनक तत्काल समाप्ति कहल नहि जा सकैत अछि। लेखक ई ऐतिहासिक विवेक सामाजिक प्रक्रियाक दीर्घकालिक गति पहिचानैत अछि।

वर्णरत्नाकरकें आर्थिक शब्दावली आ सामाजिक व्यवहारक साहित्यिक अभिलेख मानब उपयोगी अछि। मुदा साहित्यक विविध वर्णन वास्तविक उत्पादकता अथवा आय-सारिणी नहि अछि। चण्डेश्वरक राजधर्मसम्बन्धी विचार शासनक आदर्श देखबैत अछि, लोक व्यवहारक पूर्ण लेखा नहि। बादक विद्यापति ठाकुरक प्रशासकीय साहित्यकें पहिनुक महाकवि विद्यापतिक गीतक संग बिना प्रमाण जोडब निषिद्ध अछि। मिथिलाक स्त्रीश्रम आ सेवासमुदायक अनुपस्थिति स्रोतक सीमा अछि; तकर आधारपर सामाजिक अर्थव्यवस्थाक एकरूपता स्थापित नहि होइत अछि।

आलोचनात्मक निष्कर्ष : कर्णाट-ओइनिवार परिवर्तनकें राजवंशक स्थानान्तरण नहि, विभिन्न कालावधिमे कृषिसमाज आ राजकीय संरक्षणक परस्पर पुनर्संयोजनक रूपमे पढ़ब अध्यायक प्रमुख उपलब्धि अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ३३.१-३३.३०; शिलालेख, वर्णरत्नाकर, राजधर्मग्रन्थ आ उत्तरकालीन वृत्तान्त अलग कालक स्रोत अछि।

अध्ययन ०३४ | इस्लाम, प्रवास आ नव सामाजिक संसार

चौंतीसम अध्याय इस्लामक क्षेत्रीय इतिहासकें एक आक्रमण अथवा एक धर्मान्तरणक घटनामे नहि समेटैत अछि। सैन्यदल, राजकीय अधिकारी, व्यापारी, काजी, सूफी, शिल्पी, लेखपाल आ परिवारसभक आवागमन अलग-अलग सामाजिक प्रक्रिया छल। विजय, स्थायी बसावट, पेशागत सम्मिश्रण आ धार्मिक रूपान्तरण एकहि घटनाक अलग नाम नहि। मिथिला, अंग, बंगाल, दिल्ली-जौनपुर आ नेपालक सीमान्त बीच संजालक इतिहास एही भेदसँ बनैत अछि।

मुसलमान समुदायकें आन्तरिक रूपें विविध समाज मानबाक दृष्टि साम्प्रदायिक द्विध्रुवीकरणसँ इतिहासकें बचबैत अछि। मस्जिद, मकबरा, शिलालेख आ सूफी स्मृतिसभ संस्थागत उपस्थितिक साक्ष्य दैत अछि; ओहि स्मारकक निर्माणतिथि सँ सम्पूर्ण ग्रामक धर्मगत रचनाक अनुमान नहि लगाओल जा सकैत अछि। विद्यापति ठाकुरक कीर्तिलता जकाँ साहित्य राजनीतिक सम्पर्कक चित्र उपस्थित करैत अछि, मुदा वर्णनक साहित्यिक विधानकें अभिलेखीय प्रतिवेदन मानब उचित नहि।

एहि अध्यायक सीमा स्त्री-प्रवास, सामान्य कृषकक अनुकूलन आ लोकभाषा परिवर्तनक आंशिक दृश्यता अछि। लेखक उत्तरकालीन जाति-अनुसार जनगणनाकें प्राचीन धर्मान्तरणक प्रमाण नहि बनबैत छथि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ३४.१-३४.३०; सल्तनती इतिहास, दिनाङ्कित स्थापत्य, प्रादेशिक साहित्य आ उत्तरकालीन मौखिक स्मृति।

अध्ययन ०३५ | फारसी-प्रभावित सांस्कृतिक संसार आ मिथिला-अंग

पैंतीसम अध्यायक प्रधान पद्धतिगत निर्णय 'फारसी-प्रभावित' सांस्कृतिक क्षेत्रकें जातीय मूल अथवा इस्लाम धर्मक पर्याय नहि मानब अछि। दरबारक व्यवहार, पत्राचार, शासकीय शब्दावली, सूफी गद्य, स्थापत्य आ न्यायिक पदसभ भिन्न सम्प्रदायक व्यक्तिसभ द्वारा ग्रहण कएल जा सकैत छल। लिखनावली आ कीर्तिलताक अलग विधा एहि बहुभाषिक कार्यालयी संसारक अध्ययनमे उपयोगी अछि; अभिलेखक पत्ररूप आ साहित्यिक नगरवर्णनक सत्यापन-पद्धति अलग रह्य।

बिहारक सूफी साहित्य आ चम्पानगर-भागलपुरक दिनाङ्कित अभिलेख स्थानीय साक्ष्य प्रदान करैत अछि, जखन फारसी ब्रह्माण्डक व्यापक सिद्धान्त तुलनात्मक चौकट मात्र अछि। स्थानीय बोलीमे उधार लेल शब्दक उपस्थितिसँ सभ ग्रामीण कार्यालय फारसीमे चलैत छल, एहन दावा नहि बनैत अछि। लिपिकार, अनुवादक, व्यापारी आ मध्यस्थसभक श्रमकें सांस्कृतिक इतिहासमे स्थान देब अध्यायक उपलब्धि अछि।

आलोचनात्मक प्रश्न एतए अछि जे शासकीय भाषा मे बदलाव आ ग्रामसमाजक बोलचालमे परिवर्तनक गति कतेक भिन्न छल। उपलब्ध अभिलेख असमान अछि, अतः प्रभावक नक्शा सावधानीसँ बनत। प्रमाण-सीमा : अध्याय ३५.१-३५.३०; सूफी पत्र, फारसी-अरबी शिलालेख, लिखनावली, कीर्तिलता आ दरबारी पद-विधान।

अध्ययन ०३६ | आधुनिक मानकीकरणसँ पहिने भाषाक इतिहास

छत्तीसम अध्याय आधुनिक भाषिक सीमा आ प्राचीन वाक्-प्रयोगक बीच दूरी स्पष्ट करैत अछि। संस्कृतक शास्त्रीय रजिस्टर, प्राकृत-अपभ्रंश-अवहट्टक साहित्यिक रूप, क्षेत्रीय बोलचाल, फारसी प्रशासन आ पाण्डुलिपिक लेखनप्रणाली एकहि भूभागमे सहअस्तित्व रखैत छल। आधुनिक जनगणना-आधारित भाषा-नामकें तेरहम शताब्दीक प्रत्येक वक्ता पर आरोपित करब प्रमाणदोष होयत। ओहि प्रकारें लिपि एकटा लेखनप्रणाली अछि; लिपिक प्रयोगसँ लिखल पाठक भाषा स्वतः सिद्ध नहि होइत।

वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक अध्ययन लेल महत्वपूर्ण प्राचीन साक्ष्य अछि, मुदा ओकर रचनाक वर्गीय, शैलीगत आ लिपिकीय प्रकृतिसँ समस्त समकालीन ग्रामीण बोलचालक सीधा प्रतिरूप नहि भेटैत अछि। बज्जिका आ अंगिका सम्बन्धी पश्चिम-पूर्व भाषिक निरन्तरताकें आधुनिक नामक अलग राजनीतिक इतिहास सँ पृथक रखब सराहनीय अछि। तिरहुत, नेपाल तराई आ बंगाल-अंग सम्पर्क बोलचालक बहुकेंद्रिक चरित्र बनौलक, एतए 'एक जन्मतिथि' खोजब अनावश्यक अछि।

एहि आलोचनामे पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि-काल, लेखकक काल आ वर्तमान सम्पादनक सामान्यीकृत वर्तनी अलग राखब आवश्यक मानल गेल अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ३६.१-३६.३०; वर्णरत्नाकर, भाषावैज्ञानिक तुलना, औपनिवेशिक सर्वेक्षण आ लिखित-मौखिक अभिलेखक भेद।

अध्ययन ०३७ | साहित्यिक मैथिलीक क्रमिक निर्माण

सैंतीसम अध्याय साहित्यिक मैथिलीकें एकहि दिन जनमल वस्तु नहि मानि शास्त्रीय ज्ञान, मौखिक गायन, नाटक, लिपिक परम्परा, राजसभाक आश्रय आ नेपाल-पूर्वी भारतक प्रसारसँ निर्मित बहुधारात्मक साहित्यिक भाषा कहैत अछि। वर्णरत्नाकरक विवरणात्मक गद्य आ पदावलीक संगीतपरक रूप भिन्न माध्यममे भाषिक प्रतिष्ठा विकसित करैत अछि। गीतक 'भणिता' लेखक-नामक साक्ष्यक एक स्तर अछि; अकेला हस्ताक्षरसँ रचनाक काल आ मूलकर्ता निश्चित नहि होइत।

ग्रन्थकारक स्वीकृत दू विद्यापति पद्धतिक अनुसार ज्योतिरीश्वरसँ पहिनुक महाकवि विद्यापति आ ओइनिवारकालीन संस्कृत-अवहट्ट ग्रन्थकार विद्यापति ठाकुर अलग रखल गेल छथि। ई प्रतिज्ञा मुख्यधारा विद्वत्तामे विवादित अछि। समीक्षाक कसौटी ई नहि जे परम्परा नव अछि, तँ मानल जाए, बल्कि प्रतिलिपिक दिनाइक, मूल पाठभेद, संरक्षकक अभिलेख आ भाषिक परत सँ कालभेद सिद्ध होइत अछि वा नहि।

नेपालक मल्ल दरबार, कीर्तनीय नाटक आ पूर्वोत्तर गेय-परम्परा मैथिलीक इतिहासकें आधुनिक बिहारक सीमासँ बेसी व्यापक बनबैत अछि। मगर उत्तरकालीन प्रसार मूल रचनाक तिथिक प्रमाण नहि अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ३७.१-३७.३०; वर्णरत्नाकर, गेय-पाठ, मल्लनाटक आ परवर्ती पाठसम्पादनक पृथक्करण।

अध्ययन ०३८ | दू विद्यापति : काल, पाठ आ ग्रन्थकार-निर्धारण

अइतीसम अध्याय एहि समग्र इतिहासक अत्यन्त विवादास्पद प्रतिज्ञाकें व्यवस्थित रूपें सामने रखैत अछि। पहिनुक पदावलीक महाकवि विद्यापति आ पन्द्रहम शताब्दीक विद्यापति ठाकुरकें अलग मानबाक आधार कालक्रम, ग्रन्थ-विधा, नाम-परम्परा आ हस्तलिखित पाठमे खोजल गेल अछि। सामान्यतः एक लेखकक अन्तर्गत राखल साहित्यकें दू ऐतिहासिक ग्रन्थकारमे विभाजित करबाक लेल प्रत्यक्ष पाण्डुलिपि, विश्वसनीय कोलोफन, रचनाक आश्रयकाल आ स्वतंत्र उद्धरणक परीक्षण आवश्यक अछि।

कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुषपरीक्षा आ लिखनावलीक दरबारी-शास्त्रीय संसार पदावलीक गेय संसारसँ भिन्न अछि; मुदा विधागत भिन्नता अकेला दू लेखक सिद्ध नहि करैत। ओही प्रकारें एक विद्वान विभिन्न भाषा मे लिखि सकैत छथि, ई तथ्य एक लेखकक पहिचान स्वतः प्रमाणित नहि करैत। १४१८क निकट लिखनावलीक समय-सम्बन्ध आ १४२८क भागवत-प्रतिलिपि जकाँ मूर्त साक्ष्यक पाण्डुलिपीय स्थिति पढ़नाय आवश्यक अछि। नेपालक प्रतिलिपि एखने बचल अछि तँ ओकर रचना नेपालमे भेल, एहन तर्क सेहो असिद्ध अछि।

एहि समीक्षाक निष्कर्ष निर्णयक अनिश्चितता स्वीकार करबाक अछि। दू-लेखक प्रतिज्ञाकें निस्सन्देह सत्य अथवा सहज असत्य कहने बिना प्रमाणश्रेणी बनाकऽ जाँचना चाही। प्रमाण-सीमा : अध्याय ३८.१-३८.३०; स्रोत-सम्पादन, भणिता, पाण्डुलिपि, दरबारी संरक्षण आ पारम्परिक एक-विद्यापति मॉडलक निष्पक्ष तुलना।

अध्ययन ०३९ | तिरहुता लिपि आ लिपिकारी संस्कृति

उनचालीसम अध्याय तिरहुताकेँ केवल अक्षरतालिका नहि, बल्कि पाण्डुलिपि, गृह-अभिलेख, पाठशाला, धार्मिक ग्रन्थ, विवाहपञ्जी आ लेखनक तकनीकी समाजक रूपमे व्याख्यायित करैत अछि। लिपिक विकासक पुरालिपिशास्त्रीय तुलना आ 'मैथिली', 'मिथिलाक्षर', 'तिरहुता' सन नामक ऐतिहासिक प्रयोग अलग रहबाक चाही। संस्कृत लिखल तिरहुता पाण्डुलिपि स्वतः मैथिली भाषाक पाठ नहि बनैत अछि; तेनाहि ते देवनागरीमे लिखल मैथिली अपन भाषिक पहिचान नहि गुमबैत अछि।

हस्तलिखित ग्रन्थक भौतिक पदार्थ, आखिरी टिप्पणी, अक्षररूप, नकलक त्रुटि आ सुधार हस्तलिपिक सामाजिक इतिहासक साक्ष्य अछि। नेपालक संग्रहालयमे सुरक्षित प्रति मैथिली अध्ययन लेल महत्वपूर्ण अछि, मुदा मूल रचनाक स्थान आ तिथि प्रमाणित करब अलग प्रश्न। ताडपत्रसँ कागज, लिपिकारीसँ मुद्रण आ मुद्रणसँ युनिकोड धरि माध्यम बदललासँ पाठक सामाजिक जीवन बदलैत अछि। युनिकोडक अक्षर-संकेत प्राचीन सभ हस्तलिपिक दृश्य-भेदक पूर्ण प्रतिरूप नहि होइत।

अध्यायक सार्थक आग्रह स्रोत-चित्र, प्रतिलिपि-इतिहास आ संपादकीय सामान्यीकरण अलग राखबाक अछि। बहुभाषिक लेखन आ पञ्जी-संरक्षणक इतिहासमे तकनीकी परिवर्तन सामाजिक अधिकारसँ जुड़ल अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ३९.१-३९.३०; पुरालिपिक साक्ष्य, पाण्डुलिपिक अन्त्य-टिप्पणी, तिरहुता-देवनागरी मुद्रण आ डिजिटल मानकीकरण।

अध्ययन ०४० | मौखिक संस्कृति : स्वर, अवसर आ सामाजिक स्मृति

चालीसम अध्याय मौखिक रचनाकें लिखित साहित्यक बचल अवशेष नहि, अपन स्वतंत्र प्रदर्शन-संस्था मानैत अछि। समदाउन, विवाहगीत, बाल-जन्मक गीत, गोसाउनिक अनुष्ठान, सलेसक आख्यान, लोरिकक वीरगाथा, गोनू झाक हास्यकथा आ क्षेत्रीय लोकोत्सवक अर्थ गायक, श्रोता, अवसर, धुन, देहभाषा आ स्थलसँ बनैत अछि। केवल लिखल शब्द उतारि लेबासँ एकटा प्रदर्शनक सम्पूर्ण पाठ नहीं सुरक्षित होइत अछि।

स्त्रीक घरेलू कथा, विवाह-वियोग आ श्रमगीत औपचारिक राजकीय इतिहासक बाहर रहल अनुभवक संरक्षण करैत अछि। लेकिन उन्नीसम अथवा बीसम शताब्दीमे लिखल गीतक वर्तमान शब्दरूपकें अनायास मध्यकालमे राखि नहि सकैत छी। जातिगत श्रोता, गायनक अधिकार, लोकसंग्रहकर्ताक चयन आ मुद्रण-रेडियो-कैसेट-डिजिटल रेकर्डिङ्गक माध्यम-बदलाव स्रोतक बनावट बदलैत अछि। मिथिला-नेपालक वैवाहिक आवागमन आ अंगक लोकभाषिक सम्पर्क, मौखिक साहित्यक सीमापार गतिशीलता उजागर करैत अछि।

आलोचनामे संग्रहकर्ता, प्रदर्शनकर्ता आ सम्पादकक अलग भूमिका निर्धारित करब महत्त्वपूर्ण अछि। 'लोक' एकरूप जनसमुदाय नहि; श्रवणक अवसर आ सामाजिक प्रतिष्ठा असमान होइत अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४०.१-४०.३०; मौखिक प्रदर्शनक दिनाङ्कित अभिलेखन आ पुरान साहित्यिक उल्लेख अलग।

अध्ययन ०४१ | अंगिका आ पूर्वी भाषिक-सांस्कृतिक क्षेत्र

एकचालीसम अध्याय प्राचीन अंग राज्य, औपनिवेशिक 'छिका-छिकी'क विवरण आ आधुनिक अंगिका भाषिक पहिचानकेँ एक समयक वस्तु नहि मानैत अछि। भागलपुर-चम्पा, मुंगेर, पूर्णिया, सन्थाल परगना आ बंगालक सम्पर्क-क्षेत्रमे उच्चारण, क्रिया, शब्दसंग्रह आ लोकसंस्कृतिक विविध विन्यास अछि। आधुनिक 'अंगिका' नामक सार्वजनिक प्रतिष्ठाक इतिहास प्राचीन भूगोलक इतिहाससँ सम्बन्धित भऽ सकैत अछि, मुदा नाम-साम्य कालक्रमक एकमात्र प्रमाण नहि बनैत।

ग्रियर्सनक वर्गीकरण एकटा विशिष्ट औपनिवेशिक समयक भाषिक सर्वेक्षण अछि। आधुनिक भाषिक अधिकारक आन्दोलन आ आन शास्त्रीय वर्गीकरण अलग प्रश्नक उत्तर दैत अछि; एकरूप परिभाषा थोपब संशोधनकेँ रोकत। बिहुला-बिषहरी, मञ्जूषा आ लोकगीत अंगक सांस्कृतिक स्मृतिक स्रोत अछि; प्रदर्शनक भाषा आ मुद्रित रूपक समयभेद आवश्यक अछि। भाषिक सम्पर्कमे बाङ्ला, मागही, मैथिली, उर्दू आ अन्य भाषाक प्रभाव एक-दिशीय वंशावलीसँ नहि बुझाईत अछि।

अध्यायक आलोचनात्मक उपलब्धि मातृभाषा-पहिचानक सम्मान करैत ऐतिहासिक स्रोतक सीमा सुरक्षित राखब अछि। 'अंग लिपि' अथवा प्राचीन अंगिका सम्बन्धी दाबी लेल स्वतंत्र पुरालिपि-साक्ष्यक जाँच आवश्यक अछि। प्रमाण-सीमा :

अध्याय ४१.१-४१.३०; आधुनिक भाषा-आन्दोलन, औपनिवेशिक सर्वेक्षण, लोकपाठ आ तुलनात्मक व्याकरण।

अध्ययन ०४२ | बज्जिका आ पश्चिम मिथिलाक भाषिक इतिहास

बयालीसम अध्याय वज्जि गणराज्यक प्राचीन नाम, पश्चिम मैथिलीक औपनिवेशिक वर्गीकरण, आधुनिक बज्जिका साहित्यिक आन्दोलन आ नेपालक भाषिक गणनाक श्रेणीकेँ अलग-अलग ऐतिहासिक स्रोत मानैत अछि। मुजफ्फरपुर-वैशाली-सीतामढ़ी-शिवहर आ नेपाल मधेशक पश्चिमी सम्पर्कक्षेत्रमे सम्मानसूचक क्रियारूप, उच्चारण, शब्दावली आ बोलचालक परिवर्तन क्षेत्रीय छहरि बनबैत अछि। नामक ऐतिहासिक समानता भाषाक अपरिवर्तित उत्तराधिकार सिद्ध नहि करैत।

नेपालक २०२१क जनगणनामे बज्जिकाक अलग मातृभाषा श्रेणी आधुनिक भाषिक स्व-पहिचानक माप अछि; एहि आँकडाकेँ प्राचीन वैशालीक भाषाक संख्या कहल नहि जा सकैत अछि। भोजपुरी, मागही, मैथिली आ नगरीय हिन्दीसँ संपर्ककेँ 'मिश्रित अशुद्ध भाषा'क संज्ञामे समेटब भाषावैज्ञानिक दृष्टिसँ अपर्याप्त अछि। व्याकरण आ कोश निर्माण स्वयं संस्थागत प्रतिष्ठा आ पाठकवर्ग निर्मित करैत अछि।

अध्यायक महत्त्व सामाजिक सम्मान, स्त्रीक घरेलू वाणी, प्रवास आ सीमापार आवाजाहीक स्थान निर्धारित करबमे अछि। साहित्यिक स्वायत्तता आ संरचनात्मक निकटता एक-दोसराक निषेधक रूपमे नहि रखबाक चाही। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४२.१-४२.३०; ग्रियर्सनक समयगत विवरण, नेपाल गणना, क्षेत्रीय बोलचाल आ आधुनिक बज्जिका साहित्य।

अध्ययन ०४३ | संस्कृत विद्या आ मिथिलाक विद्वत् संस्था

तिरतालीसम अध्याय मिथिलाक संस्कृत शिक्षाकें आधुनिक विश्वविद्यालयक परिसर-सदृश संस्थाक रूपमे नहि, बल्कि गुरु-गृह, पाण्डुलिपि, शास्त्रार्थ, राजकीय दान, टीका आ छात्र-आवागमनक वितरित सञ्जालक रूपमे देखैत अछि। गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणि, न्यायप्रमाणक चारि खण्ड, मीमांसा, व्याकरण आ धर्मशास्त्र विद्या-परम्पराक विविध केन्द्र अछि। कौशलयुक्त पारिभाषिक भाषाक विकासकें एतए ज्ञान-उत्पादनक साधन मानल गेल अछि।

वाचस्पति मिश्र, उदयन, गङ्गेश, पक्षधर आ रघुनाथ शिरोमणिक काल-निर्धारण आ परस्पर सम्बन्धक विवरणमे प्रमाणश्रेणी आवश्यक अछि। प्रसिद्ध व्यक्तिक लोकजीवनी विद्यालयक प्रवेश, परीक्षा अथवा छात्र-सङ्ख्याक प्रत्यक्ष अभिलेख नहि होइत अछि। मिथिला-नवद्वीप विद्यार्थी-आवागमनक इतिहास मिथिलाक बौद्धिक प्रभाव आ पारस्परिक परिवर्तन बुझबैत अछि; नवद्वीपक विकासकें मिथिलाक ज्ञानक लोप कहब अत्यन्त सरलीकरण होयत।

दार्शनिक प्रतिभाक महत्त्व मानितहुँ स्त्री आ गैर-अभिजात विद्यार्थीसभक अपूर्ण अभिलेख देखब जरूरी अछि। खण्ड २६-३१क दर्शनग्रन्थ-समीक्षा दोहराएने बिना एतय संस्थाक सामाजिक इतिहासक पृथक आलोचना प्रस्तुत भेल अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४३.१-४३.३०; पाण्डुलिपि, टीका, राजकीय आश्रय आ उत्तरकालीन शैक्षिक स्मृति।

अध्ययन ०४४ | स्थापत्य आ बसावट : निर्मित भूगोलक इतिहास

चवालीसम अध्याय स्थापत्यकें प्रसिद्ध स्मारकक सूची नहि, श्रम, संसाधन, शासन, परिवहन आ गृहस्थ उपयोगक निर्मित भूगोल मानैत अछि। वैशालीक राजविशालक गढ़, बलिराजगढ़, विक्रमशिला आ सिमरौनगढ़क संरचनामे पृथक कालक्रम आ निर्माण-पद्धति अछि। वर्तमान नामक आधारपर उत्खनित अवशेषकें निश्चित पौराणिक दरबार बनबैत लेखक सावधानी बरतैत छथि।

ईंट, पत्थर आ टेराकोटाक टिकाउ अवशेष बचैत अछि; काठ, बाँस, फूस आ माटिक गृहसंसार क्षय भऽ जाइत अछि। फलतः स्मारकक अधिक दृश्यता सामाजिक जनजीवनक प्रतिनिधित्वक माप नहि अछि। पोखरि, इनार, बाजार, घाट आ सड़कसभकें निर्माण-संस्कृतिक हिस्सा मानब आवश्यक अछि। स्त्रीक घरक भीतरक श्रम आ घरेलू उत्पादन दीवारक अवशेषसँ केवल आंशिक रूपेँ पहिचानल जा सकैत अछि।

सिमरौनगढ़क जलरक्षा आ दुर्ग-रचनाक पाठमे स्तर-विभाजनक अभाव गलत वंश-निर्धारण करा सकैत अछि। अध्यायक पद्धतिगत उपलब्धि पुरातात्विक अनुक्रम आ पुरान स्मृतिपरक पहिचान अलग राखब अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४४.१-४४.३०; उत्खनन, सर्वेक्षण, जलसंरचना, अभिलेख आ वर्तमान नामकरण।

अध्ययन ०४५ | वस्त्र, आभूषण आ देह-सज्जाक इतिहास

पैंतालीसम अध्याय वस्त्र-इतिहासक असमान अभिलेखक पहिचानसँ शुरू होइत अछि। कपडा नष्ट होइत अछि, जखन मनका, शंख, कंगन, चर्खीक उपकरण, मूर्तिक शिल्प आ पाठक शब्द बचि रहैत अछि। परिणामतः पुरातन समाजक परिधानक विवरण कला-रूपक सांकेतिक भंगिमा, वास्तविक उपलब्ध वस्तु आ साहित्यिक शब्दक तुलनासँ मात्र सम्भव अछि। मूर्तिमे देखल हार वा लुगाक भाँज समाजक सभ वर्गक पोशाकक निश्चित प्रतिलिपि नहि।

वैशालीक अलङ्कार-अवशेष, पाल-सेन मूर्तिकला आ वर्णरत्नाकरक वस्त्रनाम स्थानीय शिल्प, व्यापार आ प्रतिष्ठाक अलग संकेत अछि। भागलपुर रेशमक वर्तमान ख्यातिकेँ प्राचीन अंगमे अपरिवर्तित रेशम उद्योगक प्रमाण बनायब कालक्रमगत भूल होयत। धागा, रंग, रँगई, मरम्मत, पुनःप्रयोग आ स्त्रीक वस्त्र-श्रमक इतिहास बिना राजसी अलङ्कार-सूची अधूरी रहैत अछि।

आलोचनाक दृष्टिसँ ग्रामीण उत्पादक, बालक आ निर्धन समाजक पोशाक कम दृश्य अछि; समृद्ध वर्गक मूर्तिकेँ सार्वभौम रूप नहि मानवाक लेखकीय अनुशासन युक्तिसंगत अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४५.१-४५.३०; शिल्पवस्तु, मूर्तिकला, वस्त्रपद आ उत्पादन-संकेतक भिन्न प्रमाणस्थिति।

अध्ययन ०४६ | भोजनक इतिहास : पारिस्थितिकी, श्रम आ स्मृति

छियालीसम अध्याय आजुक मैथिली भोजनसूचीकेँ प्राचीन कालपर आरोपित नहि करैत अछि। जौ, धान, दलहन, तिलहन, माछ, पशुपालन, वन-उपज आ चूल्हा-चक्कीक उत्खनित साक्ष्य खाद्यसंसाधनक उपयोग बतबैत अछि, निश्चित पकवानक विधि नहि। भोज्य वस्तुक साहित्यिक नाम, पुरातात्विक अवशेष आ आधुनिक लोक-व्यवहारक दिनाङ्क अलग-अलग राखब इतिहासलेखनक महत्वपूर्ण कसौटी अछि।

धान-आधारित भोजन संग चूड़ा-दहीक मध्यकालीन उल्लेखक प्रश्न एतए रोचक अछि: शब्दक दिनाङ्कित उपस्थिति पदार्थक सांस्कृतिक परिचय दैत अछि, मुदा आजुक सामाजिक विधि हूबहू सिद्ध नहि करैत। बौद्ध भिक्षाटन आ जैन भोजन-संयम धार्मिक अनुशासनक प्रमाण अछि, सम्पूर्ण क्षेत्रीय भोजनोपभोगक निस्पृह सर्वेक्षण नहि। वैशाली-चम्पाक नगरीय जनता, श्रमजीवी, मठ आ बाजारक भोजनक व्यवस्था विशिष्ट उत्पादन-बँटवाराक प्रश्न उठबैत अछि।

अकाल, बाढ़ि, भण्डारण, स्त्रीक पकौनी-श्रम आ भोजनक जातिगत विभाजन बिना खाद्यइतिहास केवल सामग्रीक सूची भऽ जाएत। लेखकक संयुक्त पर्यावरणीय दृष्टि एहिमे सहायक अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४६.१-४६.३०; चारित वनस्पति-अवशेष, पशुअस्थि, पाकवर्तन, मध्यकालीन शब्दसाक्ष्य आ आधुनिक पाकपरम्परा।

अध्ययन ०४७ | मिथिला चित्रकला : बाजारसँ पहिने आ ओकर बाहर

सैंतालीसम अध्यायक मूल पद्धति चित्रकला-इतिहासक जीवित किन्तु नष्टप्राय घरेलू माध्यमक समस्या स्वीकार करब अछि। अरिपन, कोहबर, गोसाँइघर आ माटिक भित्तिक अल्पजीवी चित्र घरक संस्कारसँ जुड़ल छल; कागजपर टिकाउ आधुनिक चित्र ओही प्रक्रिया नहि अछि। बीसम शताब्दीक उपलब्ध कलाकृतिसँ हजार वर्ष पुरान रूपरेखाक प्रत्यक्ष निरन्तरता सिद्ध करब प्रमाणविहीन होयत।

१९३४क भूकम्पक बादक बाह्य निरीक्षण, १९३८-४०क फोटोग्राफिक संग्रह आ १९४९क आर्चर लेख चित्रकला-अभिलेखमे महत्वपूर्ण, मुदा चयनात्मक अध्याय अछि। बाहरी वर्गीकरण कोन चित्रकला देखैत छल आ कोन स्त्री, दलित अथवा अन्य समुदाय आवाजसँ वंचित रहल, एकर परीक्षण अति आवश्यक अछि। १९६०क दशकक सुखाड आ कागजक बाजार चित्रकारक आमदनी आ व्यक्तिनामक नवल इतिहास बनबैत अछि; ई जन्मक्षण नहि, माध्यम-परिवर्तन अछि।

अध्याय चित्रकलाकें 'लोक बनाम आधुनिक'क द्विध्रुवसँ मुक्त करैत अछि। जातिगत शैलीक स्थिर श्रेणी कलाकारक प्रयोगशीलता पर अनुचित सीमा लादा सकैत अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४७.१-४७.३०; घरेलू कला, पुरान फोटो, आर्चरक लेख, बाजार-इतिहास आ कलाकारक साक्षात्कार अलग।

अध्ययन ०४८ | बीसम शताब्दीमे मिथिला चित्रकलाक सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था

अड़तालीसम अध्याय घरेलू अनुष्ठानक चित्रसँ हस्ताक्षरित, बिक्रीयोग्य आ संग्रहालय-प्रदर्शनीय कला धरि माध्यमक परिवर्तनकेँ सामाजिक अर्थव्यवस्थाक इतिहास मानैत अछि। कागजपर चित्र आँकब कलाकारक श्रमकेँ नाम, दाम, खरीददार, प्रदर्शनी आ राष्ट्रीय पुरस्कारक ढाँचामे अनैत अछि। १९६६-६८क सुखाइ, हस्तशिल्प-नीति आ संस्थागत हस्तक्षेप आर्थिक संकट आ सांस्कृतिक नवव्यवसाय बीच सम्बन्ध बनबैत अछि।

जगदम्बा देवी, सीता देवी, गंगा देवी, महासुन्दरी देवी आ गोदावरी दत्त सन कलाकारक सार्वजनिक मान्यता व्यक्तिगत रचनात्मकता आ राष्ट्रीय संस्थाक सम्मिलित परिणाम अछि। मुदा पुरस्कारक उपस्थिति सम्पूर्ण स्त्रीक आर्थिक स्वायत्तता प्रमाणित नहि करैत। स्थानीय संग्रहकेन्द्र, राज्य इम्पोरियम, संग्रहालय आ विदेशक प्रदर्शनी मूल्यनिर्धारण आ कलात्मक चयनक अलग शक्ति-संरचना बनबैत अछि। 'प्रामाणिक शैली'क बाजारू माँग कलाकारक प्रयोगधर्मिताकेँ सीमित करि सकैत अछि।

दलित आ अन्य उपेक्षित कलाकारक भागीदारी चित्रकथाक विषय आ बाजार दूनूमे परिवर्तन अनैत अछि। एहि कालक आलोचनामे कलाकारक श्रम-मूल्य, मध्यस्थक लाभ आ घरक भीतर स्त्रीक मोलभावक क्षमता पर स्वतंत्र आँकड़ाक आवश्यकता बनल रहैत अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ४८.१-४८.३०; भूकम्पोत्तर फोटोग्राफ, सुखाइ-बादक परियोजना, पुरस्कार, बाजार-अभिलेख आ कलाकार-आख्यान।

अध्ययन ०४९ | संगीत, गीत आ प्रदर्शनक सामाजिक इतिहास

उनचासम अध्याय गीतक लिखित शब्द आ वास्तविक गायन-घटनाक अन्तर स्पष्ट करैत अछि। दिनाङ्क, श्रोता, गायक, राग, वाद्य, अवसर आ आवागमनक प्रमाण बिना वर्तमान गायनकें प्राचीन कालक अपरिवर्तित ध्वनि नहि मानल जा सकैत अछि। नान्यदेवक संगीतशास्त्रीय आश्रय लिखित संगीतक इतिहासक एक महत्वपूर्ण आधार अछि, मुदा दरबारक दस्तावेज ग्रामीण स्त्रीगीत, श्रमगीत अथवा उत्सवी प्रदर्शनक सम्पूर्ण प्रतिनिधि नहि अछि।

समदाउन, विवाहगीत, पर्वगीत, श्रमताल आ बिहुला-बिषहरीक अनुष्ठानिक संगीत लोकजीवनमे सामूहिक समयक निर्माण करैत अछि। महाकवि विद्यापतिक गेय पदावली आ ओइनिवारकालीन विद्यापति ठाकुरक ग्रन्थकार-परम्पराकें लेखक अलग कालमानदण्ड पर रखैत छथि; एहि भेदक प्रतिलिपि-साक्ष्य स्वतंत्र रूपसँ जाँचना आवश्यक अछि। मुद्रण, रेडियो, ध्वनिमुद्रण आ प्रवास पुरान गीतकें नव श्रोता आ नव अर्थ प्रदान करैत अछि।

आलोचनात्मक उपलब्धि गीतक अस्तित्व, रचनाक काल आ उपलब्ध रेकर्डिंगक तिथि अलग राखब अछि। स्रोत-संकेत : मूल अध्याय ४९.१-४९.३०; नान्यदेव, क्षेत्रीय गीत-परम्परा आ आधुनिक प्रदर्शन-अभिलेख।

अध्ययन ०५० | नाट्यपरम्परा आ रंगमंचीय संस्कृति

पचासम अध्यायक मूल प्रतिज्ञा अछि जे नाटक एकटा पुस्तक नहि, मंचित सामूहिक क्रिया अछि। संवाद, रंगनिर्देश आ पात्रसूची लिखित सम्भावना दैत अछि; अभिनय, ध्वनि, पोशाक, संगीत, दर्शक आ स्थलक वास्तविक स्थिति जानबाक लेल अलग स्रोत आवश्यक अछि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, उमापतिक पारिजातहरण आ कीर्तनीय नाटकक परम्परा मैथिली नाट्य-इतिहासक अलग-अलग लिखित आ प्रदर्शनात्मक स्तर प्रस्तुत करैत अछि।

नेपालक भक्तपुर आ अन्य मल्ल दरबारक मैथिली-नेवारी नाट्यसम्पर्क मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोल विस्तृत करैत अछि। राजाक नामपर चलल नाटकक मंचनमे कलाकार, वादक, लिपिक, परिधान-निर्माता आ श्रोता अनेक सहभागी छल; राजकीय ग्रन्थकारत्व एहिसभ श्रमकें अदृश्य बना सकैत अछि। अंगक बिहुला-विषहरी नाट्य-लोकपरम्परा धार्मिक अभिनय आ सार्वजनिक कथावाचनक परस्पर मिलनक प्रमाण अछि, मुदा वर्तमान अभिनय-विधि पुरान युगक हूबहू प्रतिलिपि नहि।

समीक्षा अनुसार, लिखित ग्रन्थ, बचल प्रति, सम्भावित मंच-रूप आ उपलब्ध प्रदर्शनक तारीख अलग-अलग राखब रंगमंचीय आलोचनाक अपरिहार्य अनुशासन अछि। स्रोत : अध्याय ५०.१-५०.३०।

अध्ययन ०५१ | मेला, हाट आ सार्वजनिक सांस्कृतिक जीवन

एकावनम अध्याय हाट, मेला आ स्थायी बाजारक समय-परिधि आ सामाजिक प्रकार अलग करैत अछि। साप्ताहिक हाट दैनिक वस्तु-विनिमयक साधन, वार्षिक मेला विशेष ऋतु अथवा तीर्थक सार्वजनिक समागम, आ स्थायी बाजार क्षेत्रीय आर्थिक निरन्तरताक केन्द्र होइत अछि। नदीघाट, रेल, सड़क आ धर्मस्थल एहि सार्वजनिक जीवनकें समय-समयपर नव आकार दैत अछि।

सोनपुरक पशुमेला, सौराठक वैवाहिक सभा, सुल्तानगंजक तीर्थ-अर्थव्यवस्था आ जनकपुरक सीमापार समागमक सामाजिक कार्य एकहि प्रकारक नहि अछि। पञ्जीकारक सार्वजनिक वैवाहिक परीक्षणकें सामान्य हाटमे खरीदार-विक्रेताक सम्बन्धक समान मानब नहि चाही। जनसमूहक उपस्थिति स्वभावतः समान नागरिक प्रवेश नहि सुनिश्चित करैत; जाति, लिंग, धन आ प्रतिष्ठाक कारण सहभागितामे भेद रहैत अछि। मनोरञ्जन, अस्थायी दुकान, पानि, स्वच्छता आ प्रशासन सेहो मेला-अर्थव्यवस्थाक हिस्सा अछि।

अध्यायक आलोचनात्मक मूल्य सार्वजनिक स्थलकें धार्मिक, आर्थिक आ राजनीतिक संवादक संयुक्त प्रयोगशाला मानब अछि। औपनिवेशिक जनगणनाक मेलासूची वर्तमान भीड़ आ सदियों पुरान परम्पराक सीधा प्रमाण नहि। स्रोत :

अध्याय ५१.१-५१.३०।

अध्ययन ०५२ | मुगलकालीन भूमि, राजस्व आ कृषिसमाज

बावनम अध्याय मुगल राजस्व-व्यवस्थाकें माटिक एकमात्र स्वामित्व-सिद्धान्त नहि मानि खेतीपर राजकीय दाबी, स्थानीय सरदार, ग्राम-अधिकारी आ कृषक गृहस्थीक परस्पर सम्बन्धक रूपमे पढ़ैत अछि। आइने-अकबरीमे तिरहुत, हाजीपुर आ मुंगेरक परगना-संबद्ध राजस्व-विवरण शासनक गणनात्मक दृष्टि बतबैत अछि; वास्तविक वसूली, खेतिहरक हाथमे बचल अनाज आ ग्रामक आन्तरिक अनुबंध ओकर प्रत्यक्ष प्रति नहि।

जामा आ हासिलक अर्थगत भेद, खालिसा-जागीरक राजस्व-गन्तव्य आ जमीन्दारक मध्यस्थ भूमिका सामाजिक विश्लेषणक मुख्य आधार अछि। कोसी-गण्डक-गङ्गाक बाढ़ि, विविध धान आ दलहनक खेती, भूमि-उपयोग आ ऋतुचक्रक कारण शासनक निर्धारित आ वास्तविक वसूलीमे अन्तर होयब सम्भव छल। नेपाल तराईक व्यापारिक सम्बन्ध महत्वपूर्ण छल, मुदा ओकरा मुगल प्रान्तक समान कराधान-अधिकारमे समेटब अनैतिहासिक होयत।

एहि समीक्षाक प्रमुख प्रश्न राजस्वसँ प्रशासनिक ज्ञान आ ग्रामीण coercion/मोलभावक वास्तविक अनुपातक अछि। मूल तथ्यक अतिरिक्त अभिलेख बिना निर्धारण-वसूली समान नहि कहल जा सकैत। स्रोत : अध्याय ५२.१-५२.३०।

अध्ययन ०५३ | बंगाल, बिहार, नेपाल आ गङ्गा-विश्वक व्यापार

तेपनम अध्याय व्यापारकें केवल दू राजधानीक सीधा मार्ग नहि मानैत। गङ्गा, पटना, मुंगेर, भागलपुर, हाजीपुर आ नेपाल दिशाक घाट-बाजार अनेक मार्गक जाल बनबैत छल। राल्फ फिचक यात्रा-वर्णन, कम्पनीक कारखाना-पत्र, नेपाल व्यापारक विवरण आ बादक जिला-आलेख अलग शताब्दीक साक्ष्य अछि; एकर समेकन कालभेद सुरक्षित राखि होएबाक चाही।

शोरा, अफीम, वस्त्र, रेशम, धान, चीनी, धातु, हिमालयी वस्तु आ ऋण-हुण्डी लेनदेन व्यापारक विविध संस्थानक भूमिका देखबैत अछि। यूरोपीय कम्पनीक व्यापारी रूप आ पश्चात्क राज्यशासक रूप ऐतिहासिक रूपसँ भिन्न अवस्था अछि। नदीक जलस्तर, मल्लाहक श्रम, पुनर्लदान, घाटक कर आ जोखिम मूल्य-निर्धारणमे साक्षात् प्रभाव पारैत छल। एक नदीक निरन्तरता निर्बाध, स्थिर आ कमलागत व्यापारक गारंटी नहि।

ग्रन्थकारक उपलब्धि सीमापार क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाकें राज्यसीमाक कठोर विभाजनसँ परे पढ़ब अछि। स्रोत-संकेत : अध्याय ५३.१-५३.३०; यात्रावृत्त, कम्पनी-दस्तावेज, नेपाल व्यापारक ऐतिहासिक रिकॉर्ड आ परिवहन-भूगोल।

अध्ययन ०५४ | ईस्ट इण्डिया कम्पनी आ कृषिसम्बन्धक पुनर्गठन

चौवनम अध्याय कम्पनीक राज्य-विस्तारकें प्लासी अथवा बक्सरक एक दिनक परिवर्तनमे नहि समेटैत। १७६५क दीवानी-दावा, भारतीय राजस्वकर्मीक भूमिका, पर्यवेक्षक-पद्धति, परिषद्, राजस्व-ठेका, अल्पकालिक बन्दोबस्त आ नूतन न्यायप्रक्रिया मिलि कृषिसम्बन्धक राज्यीय रूप धीरे-धीरे बदललक। सीताब राय जकाँ भारतीय मध्यस्थक भूमिका पुरान प्रणालीक निरन्तरता आ नूतन कम्पनी-शासनक निर्भरता एकसंग देखबैत अछि।

१७७०क अकाल एकटा मात्र प्राकृतिक घटनाक रूपमे नहि, राजस्वक अपेक्षा, अनाजक उपलब्धता, बजार आ राहतक संस्थागत असफलताक पृष्ठभूमिमे देखबाक चाही। १७७२क पाँच-वर्षीय राजस्व-प्रयोग आ तकर संशोधन राज्यक प्रशासनिक अनिश्चितताक प्रमाण अछि। ग्रामक कृषक खेती चालू रखैत रहि सकैत छलाह जखन कर असूलनिहार संस्था, लेखा आ अदालतक मार्ग बदलि रहल छल।

अध्यायक पद्धतिगत महत्त्व नियमक प्रारूप आ वास्तविक जिला-प्रयोगक अन्तर स्वीकार करब अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ५४.१-५४.३०; दीवानी आ राजस्व-सम्बन्धी दिनाङ्कित दस्तावेज, परवर्ती प्रशासनिक विवरण आ अकाल-अभिलेख।

अध्ययन ०५५ | स्थायी बन्दोबस्त आ भूमिधारी समाज

पचपनम अध्याय १७९३क स्थायी बन्दोबस्तकेँ केवल 'कर सदा लेल निश्चित' करबाक निर्णय नहि, राजस्व-अधिकारकेँ स्वामित्व-जकाँ कानूनी सम्पत्तिमे बदलबाक औपनिवेशिक प्रक्रिया मानैत अछि। राज्यक माँग स्थिर भेला परो जमीनसँ प्राप्त किराया, कृषकक दायित्व, उपपत्तेदारक हिस्सा आ विविध सेवा-अधिकार स्वतः स्थिर नहि भेल। समयपर राजस्व नहि देलासँ नीलामी होयबाक सम्भावना भू-सम्पत्तिक सुरक्षा आ असुरक्षा एकसंग उत्पन्न करैत अछि।

दरभंगा राजक पुरान राजनीतिक अधिकार जमीन्दारी-सम्पत्तिक भिन्न कानूनी रूप लैत अछि। भागलपुर, मुंगेर आ तिरहुतक सभी भागपर १७९३क विधि एकहि दिन आ एकहि तर्कसँ लागू भेल, एहन सरलीकरणकेँ लेखक अस्वीकारैत छथि। रैयतक स्थिति, नकद-अनाज किराया, अन्तःबन्दोबस्त, स्त्रीक उत्तराधिकार आ बादक भाड़ा-कानून अलग परीक्षा माँगैत अछि। नदी-क्षरण, बाढ़ि आ खेतीक जोखिम स्थिर राजकीय माँगक व्यावहारिक तनाव बढ़बैत अछि।

एहि समीक्षामे कानूनी 'मालिक' आ दैनिक 'उपयोगकर्ता'क बहुस्तरीय अधिकार मुख्य आलोचनात्मक सूत्र अछि। स्रोत : अध्याय ५५.१-५५.३०; १७९३क विनियम, राजस्व-अभिलेख आ उत्तरकालीन रैयती विधि।

अध्ययन ०५६ | नीलक खेती आ औपनिवेशिक व्यापारिक कृषि

छप्पनम अध्याय नीलकै केवल रंग उत्पन्न करबाक वनस्पति नहि, पूँजी, अग्रिम, भूमिसम्बन्ध, कारखानाक प्रसंस्करण, मजदूरी, परिवहन आ वैश्विक मूल्यक जटिल कृषि-व्यवस्था मानैत अछि। निज/जेरात, असामीवार/रैयती आ अपेक्षाकृत स्वतंत्र खेतीक भिन्न प्रबन्धक अस्तित्व सामाजिक अनुभव एकसमान नहि होयबाक प्रमाण अछि। 'तीनकठिया' विशेष चम्पारण क्षेत्रक ऐतिहासिक करार-रूप अछि; ओकरा समस्त मिथिलाक नीलखेतीक सामान्य नियम कहब त्रुटिपूर्ण होयत।

अग्रिम धन स्वेच्छा आ दबावक बीच अनेक अवस्था बना सकैत अछि। कृषकक खाद्य-खेत, बैल, श्रम-दिन आ ऋणक अवसर-मूल्य नीलक दाममे सदा स्पष्ट नहि छल। तिरहुत, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर आ मुंगेरक भिन्न उत्पादनस्थलक उल्लेख क्षेत्रीय तुलना माँगैत अछि। १८९७क बाद कृत्रिम नीलक प्रभाव आ चम्पारणक १९१७-१८ आन्दोलन कालक्रममे अलग कारण-सरणी अछि; दुनूकै केवल नैतिक कथा अथवा बाजारक कथा बनाकऽ मिलाएब सरलीकरण होयत।

अध्याय व्यावसायिक जोखिमक बोझ किसान आ पूँजीपतिक बीच कोना बाँटल गेल, एहि प्रश्नकै इतिहासक केन्द्रमे अनैत अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ५६.१-५६.३०; नील-करार, कारखाना-व्यवस्था, कृषक-आवेदन आ बाजारक परिवर्तन।

अध्ययन ०५७ | अफीम, शोरा आ अन्य वस्तु-व्यापारक जाल

सतावनम अध्याय अफीमकेँ असाधारण वस्तु मानिकऽ सामान्य कृषिअर्थव्यवस्थासँ अलग नहि करैत। पोस्तक खेती, सरकारक अग्रिम, निर्धारित खरीद, पटनाक प्रसंस्करण, कलकत्ताक नीलामी आ चीनसँ सम्बद्ध साम्राज्यवादी व्यापार एकटा राज्यनियन्त्रित वस्तु-शृंखला बनबैत छल। मुदा अफीमक संग धान, तम्बाकू, नील, शोरा, रेशम, तसर आ वन-उत्पादक अन्य विनिमय चलैत रहल। सरकारी एकाधिकार आ निजी/अवैध व्यवहार एकहि आर्थिक भूगोलमे सहअस्तित्व रखैत छल।

१७७३क ठेकेदार-व्यवस्था, १७८५-९९क एजेंसी-परिवर्तन आ ऋणाधारित खेतीक स्वरूप अलग रखबाक लेखकक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि। मुजफ्फरपुर-तिरहुत आ अंगक स्थानीय उत्पादनक पहुँच समान नहि छल; पोस्तक कृषिश्रम, माप, गुणवत्ता जाँच आ अग्रिम कटौती वास्तविक कृषक-अनुभव निर्धारित करैत छल।

भागलपुरक रेशम आ तसर उत्पादन उत्पादक शिल्पक अलग इतिहास अछि, तकरा अफीम-मोनोपॉलीक समान संस्थागत ढाँचामे नहि राखि सकैत छी।

आलोचनाक केन्द्र नैतिकता, राजस्व आ उत्पादनक त्रिकोण अछि। सरकारी राजस्वक उपलब्धिसँ कृषकक समृद्धि स्वतः प्रमाणित नहि; अवैध व्यापारक उल्लेख मात्र सँ ओकर मात्रा नापल नहि जा सकैत। स्रोत : अध्याय ५७.१-५७.३०।

अध्ययन ०५८ | अकाल, अभाव आ खाद्यसुरक्षा

अट्टावनम अध्याय अकालकें बरखाक कमी अथवा धानक फसल नष्ट होयबाक मात्र पर्याय नहि मानैत। खाद्यसुरक्षामे उत्पादन, बाजार, घरक खरीदशक्ति आ राज्यक हस्तक्षेप परस्पर निर्भर अछि। १७७०, १८७३-७४ आ १८९६-९७क संकटसभक परिणाम भिन्न रहल; अतः एकहि जलवायु-नियमसँ सभकें बुझब सम्भव नहि। अनाजक दाम, मजदूरी, ऋण, पशुधनक बिक्री, आवागमन आ रोगजन्य मृत्यु सामाजिक त्रासदीक कड़ी बनैत अछि।

१८७३-७४मे समयसँ चेतावनी, अनाज आयात, अस्थायी रेलमार्ग आ राहत-डिपो सभ सरकारी प्रतिक्रियाक अलग क्षमता देखबैत अछि। कम मृत्युदरक समकालीन प्रशंसा आ खर्चक राजनीतिक आलोचना एकसंग संभव छल। १७७०क स्रोतमे अत्यधिक मृत्युक साक्ष्य अछि, मुदा भिन्न आँकडाक गणना-पद्धति जाँचे बिना एकटा निश्चयात्मक संख्या स्वीकार नहि करबाक चाही। १८९७मे दरभंगाक राहत-प्रणालीक विस्तृत आँकडा संग अभावक विषम सामाजिक वितरण जाँच आवश्यक अछि।

अध्यायक आलोचनात्मक शक्ति प्राकृतिक संकटकें समाजक संस्थागत असमानतासँ जोड़ब अछि। स्त्री, बालक, मजदूर आ अल्पसंसाधनवला गृहस्थक अलग अनुभव छिपा देबासँ अकालक वास्तविक इतिहास अधूरा रहैत अछि। स्रोत : अध्याय ५८.१-५८.३०।

अध्ययन ०५९ | औपनिवेशिक सर्वेक्षण आ सामाजिक श्रेणीक निर्माण

उनसठिम अध्याय सर्वेक्षणकें निष्पक्ष सूचना-संग्रह मात्र नहि, शासनक वर्गीकृत दृष्टि मानैत अछि। बुकानन-हैमिल्टनक अवलोकन, हन्टरक सांख्यिक वृत्तान्त, १८७२क प्रारम्भिक गणना, १८८१क नियमित जनगणना, रिजलीक नृवंशविज्ञान आ ग्रियर्सनक भाषिक सर्वेक्षण अलग प्रशासनिक प्रयोजनक स्रोत अछि। छपल सारिणी अनेक प्रकारक स्थानीय पहिचानकें अनिवार्य कोठामे बदलि सकैत अछि। जाति, पेशा, धर्म आ भाषाक नामक जनगणना-प्रविष्टि ओहि समयक आत्मवर्णन, राजकीय प्रश्न आ गणकक निर्णयक संयुक्त परिणाम होइत अछि। एकर अस्तित्वसँ मध्यकालमे ओही नामक स्थिर श्रेणी छल, से सिद्ध नहि होइत। देह-नापसँ सामाजिक श्रेणी निर्धारित करबाक औपनिवेशिक अभ्यासक आलोचनात्मक विवेचन इतिहासक विज्ञान-दाबीक छद्मता उजागर करैत अछि।

श्रोत्रिय पदक उत्तरकालीन मिथिला-विशिष्ट अर्थकें प्राचीन श्रोत्रिय विशेषणसँ अलग रखबाक पद्धति एतए सेहो लागू अछि। एहि समीक्षा अनुसार औपनिवेशिक अभिलेख अमूल्य अछि, मुदा ओकर निर्माणक सत्ता-सन्दर्भ हटाकऽ पढ़ल गेल तँ ऐतिहासिक तथ्य आ शासकीय कल्पना मिलि जाएत। स्रोत : अध्याय ५९.१-५९.३०।

अध्ययन ०६० | औपनिवेशिक कालमे शिक्षाक परिवर्तन

साठिम अध्याय औपनिवेशिक विद्यालयक आगमनकेँ पहिनुक शिक्षा-संस्थाक समाप्ति नहि, योग आ पुनर्गठनक प्रक्रिया मानैत अछि। टोल, पाठशाला, मकतब, मदरसा आ गृहशिक्षाक संग सरकारी विद्यालय, अनुदानप्राप्त संस्था, परीक्षा आ महाविद्यालयक नवल श्रेणी बनल। १८३५क शिक्षानीति, १८५४क बुड्स डेस्पैच, १८६३क पटना कॉलेज, १८८३क भागलपुर टी.एन.बी. कॉलेज आ १९१७क पटना विश्वविद्यालय अलग-अलग संस्थागत पड़ाव अछि।

भाषा-नीतिक परिवर्तन रोजगारीक अवसर बदलैत अछि। अंग्रेजी उच्चशिक्षा आ स्थानिक भाषामे प्राथमिक शिक्षा बीच असमान सीढ़ी बनि सकैत छल। विद्यालयक संख्या, नियमित हाजिरी, साक्षरता आ शास्त्रज्ञान अलग सूचक अछि; सबकेँ एकसंग 'शिक्षित आबादी' कहब त्रुटिपूर्ण होयत। स्त्रीशिक्षाक धीमी वृद्धि, शुल्क, दूरी आ पारिवारिक श्रमक माँग पहुँचक वास्तविक अवरोध छल। दरभंगा राजक संरक्षण शैक्षिक आधुनिकीकरणक एक आधार, मुदा सम्पूर्ण जनपदक प्रतिनिधि नहि।

समीक्षाक दृष्टिसँ औपनिवेशिक पाठ्यक्रम नव पेशागत समूह उत्पन्न करैत अछि आ पुरान विद्वत् परम्पराक मूल्य-पद्धति बदलबैत अछि। स्रोत : अध्याय ६०.१-६०.३०; शिक्षा-विभाग, सर्वेक्षण, विद्यालय-अभिलेख आ विश्वविद्यालयक समयानुक्रम।

अध्ययन ०६१ | मुद्रण-संस्कृति आ नव सार्वजनिक क्षेत्र

एकसठिम अध्याय मुद्रणकें यन्त्रक घटना नहि, प्रकाशक, लिपि, लागत, रेल-डाक, शैक्षिक पुस्तक, पत्रिका आ पाठकवर्गक सञ्जाल मानैत अछि। हाथक लिखल पोथी, मौखिक प्रस्तुति आ छपल पाठ एकसंग चलैत रहल। कलकत्ता, पटना, भागलपुर आ दरभंगाक विभिन्न भाषिक मुद्रण-परिसरमे उर्दू, हिन्दी, मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजी समकालीन रूपसँ उपस्थित छल।

१८६७क प्रेस-पञ्जीकरण, १८७८क भाषायी समाचारपत्र नियन्त्रण आ १९१०क नूतन कानून मुद्रणक अधिकार आ निगरानीक राजनीतिक चरित्र देखबैत अछि। ग्रियर्सनक मैथिली व्याकरणक मुद्रण भाषिक वर्गीकरणकें पुनरुत्पादित करैत अछि, जखन मैथिली पत्रिका, विशेषतः मिथिला मिहिरक परम्परा, क्षेत्रीय पाठकवर्गक निर्माण करैत अछि। तिरहुताक टाइप-संकट आ देवनागरी मुद्रणक सुविधा तकनीकी आ सांस्कृतिक चयनकें एकसंग प्रभावित करैत अछि।

छपल ग्रन्थक बचल प्रति से सभ पाठकक सामाजिक अवस्था नहि बुझाईत अछि। स्त्रीक प्रवेश, सामूहिक पाठ, पुस्तकालय आ पत्रिकाक आवागमनक इतिहास आवश्यक अछि। स्रोत : अध्याय ६१.१-६१.३०।

अध्ययन ०६२ | रेल, सड़क आ बाजारक नूतन भूगोल

बासठिम अध्याय रेलकें नदी-सड़कक समाप्तिक कारण नहि, पुरान मार्गक पुनर्संयोजक मानैत अछि। गङ्गाक दक्षिण अंगक रेलसम्पर्क, जमालपुरक कार्यशाला, १८७०क दशकक अकाल-राहतक समयक तिरहुत रेल, समस्तीपुरक सङ्गम आ सकरी-जयनगर मार्गक सीमापार सम्बन्ध अलग कालखण्डमे बनल। रेल-स्टेशनक आगमनसँ आसपासक हाटक महत्त्व बढ़ि वा घटि सकैत अछि, मुदा गामसँ स्टेशन धरि बैलगाड़ीक अन्तिम दूरी महत्त्वपूर्ण रहैत अछि।

पुल-घाटक कमीक कारण नदी पार करब महँग आ अनिश्चित छल। चौड़ आ बाढ़िभूमिमे रेल-पटरी, बाँध आ सड़क जलप्रवाहक मार्ग सेहो बदलि सकैत अछि। बाजारक एकीकरणकें राष्ट्रीय मूल्य-औसतक आधारपर सर्वत्र लागू मानब अनुचित अछि; क्षेत्रवार मूल्य-गति, यातायात खर्च आ ऋतुगत विघ्न देखबाक चाही।

अध्यायक महत्त्व लाभ-हानिक असमान वितरण पहिचानब अछि। स्टेशन बनला पर नव मजदूरी आ व्यापार बढ़ैत अछि, मुदा पुरान रास्ताक हाट कमजोर सेहो भऽ सकैत अछि। स्रोत : अध्याय ६२.१-६२.३०; रेलवे विवरण, बाजार-आँकड़ा आ नदी-परिवहनक स्थानीय स्रोत।

अध्ययन ०६३ | मजदूर-प्रवास आ गृहस्थी अर्थव्यवस्था

तिरसठिम अध्याय प्रवासकें केवल ग्रामीण पलायन नहि मानैत। कलकत्ता जूट उद्योग, जमालपुर कार्यशाला, असम चायबागान, डुआर्स, समुद्रपार गिरमिटिया श्रम आ मौसमी नगर-काम अलग श्रम-नियम आ आवागमनक रूप रखैत छल। खेत, ऋण, बाढ़ि, मजदूरी आ सम्बन्धीसभक नेटवर्क परिवारक निर्णयक आधार बनैत अछि; रेल यात्रा सुलभ करैत छल, मुदा ठेकेदार-सरदारक भर्ती आ दण्डनियम श्रमिकक वापसीक स्वतंत्रता निर्धारित करैत छल।

किछु मजदूर गोल-चक्करमे गाम लौटैत छलाह; किछु परिवारसहित बगानमे बसैत छलाह। स्त्रीक उपस्थिति केवल 'जन्मस्थान' स्तम्भसँ नापब सम्भव नहि। परदेश गेल पुरुषक अनुपस्थितिमे गामक स्त्रीक खेती, देखभाल आ ऋणक श्रम बढ़ि सकैत छल। धन-पठाओन आर्थिक लाभक एक चिन्ह अछि, मुदा सामाजिक जोखिम आ परिवार-विच्छेदक क्षतिपूर्ति पूर्ण नहि।

आलोचनामे स्वतंत्र मजदूरी आ प्रतिबन्धयुक्त श्रम-अनुबंधक कानूनी भेद केन्द्रस्थ अछि। जाति-सम्बन्धी नेटवर्क सहायता देबैत छल, मुदा सभ प्रवासी एक जाति, एक रास्ता अथवा एक अनुभवक नहि छल। स्रोत : अध्याय ६३.१-६३.३०।

अध्ययन ०६४ | औपनिवेशिक आधुनिकता आ स्त्रीक सामाजिक परिवर्तन

चौंसठिम अध्याय स्त्री-जीवनमे नव शिक्षा, विधि, चिकित्सा, मुद्रण, नौकरी, प्रवास आ राष्ट्रीय आन्दोलनक प्रवेशकेँ एकरूप मुक्ति-कथा नहि बनबैत। बालिका-शिक्षा सीमित आधारसँ बढल; विधवा-पुनर्विवाह, विवाहक आयु आ सहमतिक कानून सामाजिक व्यवहारसँ अलग गति पर विकसित भेल। घरेलू उत्पादन आ देखभालक अपैतनिक श्रम औपनिवेशिक आर्थिक लेखामे प्रायः अदृश्य रहल।

जनाना-शिक्षण, स्त्री-चिकित्सक, दार्ढिक प्रशिक्षण आ मातृ-शिशु कल्याणक नीति अवसरक विस्तार संग स्त्री-शरीरपर प्रशासनिक नियन्त्रणक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। जनगणनाक साक्षरता-सङ्ख्या पढब-लिखबाक सीमित परिभाषाक आँकड़ा अछि, व्यापक ज्ञानक पूरा मान नहि। १९४२क आन्दोलनमे स्त्री आ छात्राक सहभागिता सार्वजनिक दृश्यताक नवल स्तर दर्शबैत अछि; ताहिसँ सभ जाति आ वर्गक समान राजनीतिक पहुँच स्वतः सिद्ध नहि।

नेपालक मिथिला ब्रिटिश भारतक शिक्षा-विधिक नियमनसँ अलग राजनीतिक पृष्ठभूमि राखैत अछि। एहि तुलनासँ 'औपनिवेशिक आधुनिकता'केँ सम्पूर्ण सीमापार मिथिलाक एकहि कानूनी अवस्था मानबाक भूल रोकल जा सकैत अछि।
स्रोत : अध्याय ६४.१-६४.३०।

अध्ययन ०६५ | भारत-नेपाल सीमाञ्चलक ऐतिहासिक अर्थव्यवस्था

मूल अध्याय ६५ सीमारेखाकेँ केवल राजनीतिक नक्शाक विभाजन नहि, बल्कि गङ्गाक मैदानसँ तराई आ हिमालय धरि चलयवला व्यापार, खेती, राजस्व, वन आ यातायातक सञ्जालक भीतर विकसित संस्था मानैत अछि। सन्धि, सीमा-नापी आ भन्सारक शासन बढल, मुदा विवाह, तीर्थ, श्रम आ लघु-बाजारक पुरान सम्बन्ध नष्ट नहि भेल। सीमाक 'खुलापन' लोकक आवागमन आ मालक कर-मुक्ति एक बात नहि।

सुगौलीक १८१६क बादक भू-सम्बन्ध, सीमाक पुनर्संयोजन, पर्सा-मकवानपुरक व्यापारद्वार, जनकपुरक तीर्थ-अर्थव्यवस्था आ स्थानीय हाट-गोला ग्रन्थक विवेचनमे महत्वपूर्ण अछि। मूल दाबीकेँ प्रमाणित करबाक लेल विभिन्न वर्षक नेपाली राजस्व, कम्पनीक अभिलेख आ बाट-बाजारक दस्तावेज अलग-अलग देखबाक चाही। विशिष्ट राजस्व-सङ्ख्या सार्वकालिक व्यापारक आयतन नहि बनैत। आलोचनात्मक उपलब्धि सीमा पारक आर्थिक निरन्तरताक संग राजकीय परिवर्तनक वास्तविक प्रभाव देखब अछि। प्रमाण-सीमा : ६५.१-६५.३०।

अध्ययन ०६६ | जनकपुर : धार्मिक, व्यापारिक आ नगरीय केन्द्र

छियासठिम अध्याय जनकपुरक इतिहासकें केवल रामायण-स्थलक परम्परा अथवा नगरपालिकाक गठन-तिथिमे सीमित नहि करैत अछि। तीर्थ, पोखरि, परिक्रमा, देवालय, बाजार, आवागमन आ प्रशासनिक सेवाक क्रमिक संकेन्द्रणसँ नगरक व्यावहारिक स्वरूप विकसित भेल। प्राचीन मिथिला नगरीक धार्मिक पहचान आ आजुक जनकपुरक नगर-आकार एकहि कालक साक्ष्य नहि।

जनकी मन्दिरक स्थापत्य आ संरक्षण, विवाहपञ्चमीक अवसर पर सीमापार व्यापार, १९३७क रेलसम्पर्क, राज्यीय कार्यालय आ उच्चशिक्षाक विस्तार—ई भिन्न कालक शक्तिसभ नगर-निर्माणमे योगदान दैत अछि। रेलक आरम्भिक मालवाहक उद्देश्य आ बादक यात्री-तीर्थ उपयोगक अन्तर जाँचबाक महत्त्व अछि। जनकपुरक संस्कृतिक प्रतिष्ठाकें स्थानीय सेवा-श्रम, दुकानदार, कारीगर आ स्त्रीक अर्थव्यवस्थासँ जोड़ब अध्यायक उपलब्धि अछि। प्रमाण-सीमा : ६६.१-६६.३०; तीर्थ-स्मृति आ नगर-अभिलेखक पृथक्करण।

अध्ययन ०६७ | नेपाल तराईमे भूमि, बटाइदारी आ कृषिसमाज

सतसठिम अध्यायक मुख्य ऐतिहासिक सावधानी नेपालक रैकर, बिर्ता, जागीर, गुठी आ जिम्मीदारीकेँ ब्रिटिश भारतक स्थायी बन्दोबस्तक जमीन्दारीक पर्याय नहि मानब अछि। राज्यक राजस्व-अधिकार, प्राप्तकर्ताक अनुदान, स्थानीय वसूली, खेती करयवालाक दखल आ बटाइदारी एकहि खेतमे भिन्न अधिकार-स्तर बनबैत अछि। कृषि विस्तार जंगल, बीमारी, प्रवास आ कर-व्यवस्थाक संयुक्त प्रभावसँ जुड़ल अछि।

सप्तरी-महोत्तरीक अठारहम शताब्दीक आदेश आ उन्नीसम शताब्दीक तराई नियमसभकेँ लेखक सामाजिक पर्यावरणक भीतर रखैत छथि। मुदा राजस्व श्रेणीसँ वास्तविक कृषकक जीवनस्तर, स्त्रीक भू-अधिकार अथवा दलित श्रमिकक अनुभव स्वतः नहि भेटैत। नेपालमे भूमिसुधारक पिछला कानूनकेँ पूर्ववर्ती करप्रथाक तिथिसँग नहि मिलाएब आवश्यक अछि। अध्यायक आलोचनात्मक बल अधिकार, लगान आ खेतीक पृथक्करण पर अछि। प्रमाण-सीमा : ६७.१-६७.३०।

अध्ययन ०६८ | वन-उन्मूलन, मलेरिया नियन्त्रण आ जनसंख्याक परिवर्तन

अइसठिम अध्याय १९५०क बाद तराईमे बसावट-विस्तारकेँ 'खाली जंगलमे नव आबादी'क कथा बनबाक विरोध करैत अछि। पुरान मधेशी, थारू आ अन्य समुदायक खेती, चरागाह, वन-अधिकार आ बाजार पहिनेसँ विद्यमान छल। मलेरिया घटबाक संग सड़क, भूमिनीति, सरकारी पुनर्वास आ स्वतःस्फूर्त प्रवासक अलग प्रभाव छल; एक कारणसँ सब परिणाम निकालब अनुचित अछि।

१९५४क मलेरिया कार्यक्रम, १९५८क व्यापक उन्मूलन-प्रयास, १९५७क वन-राज्यीकरण, १९६१क वन विधि आ पुनर्वासक संस्थागत विस्तार अलग-अलग समयक हस्तक्षेप अछि। चितवनक प्रमाणकेँ धनुषा-महोत्तरी-सप्तरीक प्रत्यक्ष स्थानीय अवस्था नहि बनाओल जाए। वनक कमी मापबाक पद्धति आ दर्ज सरकारी वनक श्रेणी बदलैत रहल; प्रतिशतक तुलना ओकर परिभाषा सहित जरूरी अछि। अध्याय विकास, स्वास्थ्य आ पुरान निवासीक भूमि-अधिकार बीचक टकराव उजागर करैत अछि। प्रमाण-सीमा : ६८.१-६८.३०।

अध्ययन ०६९ | प्रवास, पुनर्वास आ सामाजिक बसावट

उनहत्तरिम अध्याय आवागमन आ स्थायी बसावटकेँ भिन्न प्रक्रिया मानैत अछि। नेपाल तराईक पुरान ग्राम, हाट, पारिवारिक सम्बन्ध आ खेतीक भीतर १९५०क बाद राजकीय पुनर्वास, वन-क्षेत्र विस्तार आ पहाडसँ प्रवासक नव चरण शुरू भेल। लोकक सीमा पारक विवाह आ मजदूरीकेँ मात्र आधुनिक 'विदेशी आबादी'क राजनीतिक श्रेणीमे समेटब इतिहासतः असंगत अछि।

सरकारी पुनर्वासक नियोजित संख्या आ स्वतःस्फूर्त बसावटक विस्तारक अन्तर महत्वपूर्ण अछि। जनगणनामे जन्मस्थान, नागरिकता, मातृभाषा आ स्थायी निवास चारू भिन्न कोटि अछि। प्रवासक भू-अर्थव्यवस्थामे बाजार, जमीनक मूल्य, जंगलक उपयोग आ महिलाक वैवाहिक स्थानान्तरण परस्पर जुडैत अछि। ई समीक्षा लेखकक एहि सावधानीकेँ रेखांकित करैत अछि जे आजुक भाषिक रूपसँ ककरो ऐतिहासिक आप्रवासन-तिथि सिद्ध नहि होइत। प्रमाण-सीमा : ६९.१-६९.३०।

अध्ययन ०७० | नेपालमे भाषा, शिक्षा आ सांस्कृतिक संस्था

सत्तरिम अध्याय नेपालक मिथिलामे मैथिली, नेपाली, संस्कृत, बज्जिका, भोजपुरी, उर्दू आ अन्य भाषासभक संस्थागत स्थानक अन्तर पर विचार करैत अछि। घरेलू भाषा, विद्यालयक माध्यम, सरकारी कार्यालय आ साहित्यिक संस्था आवश्यक रूपेँ एकहि भाषा चुनैत नहि छल। राणाकालक सीमित शिक्षा सँ १९५१क बादक विस्तार आ पञ्चायतकालीन नेपाली-केन्द्रित नीतिधरि राजकीय प्रमाणपत्र आ भाषिक प्रतिष्ठाक सम्बन्ध बदलैत गेल।

१९५६क शिक्षायोजना आ १९५७क माध्यम-विवाद, जनकपुरक रामस्वरूप रामसागर परिसर, त्रिभुवन विश्वविद्यालय आ साहित्य-सांस्कृतिक संस्थासभ शिक्षा आ सार्वजनिक भाषा पर अलग प्रभाव पारैत अछि। साहित्यिक मैथिली जीवित रहब आ मैथिलीमे राज्य मान्य शिक्षाक उपलब्धता दुनू समान घटना नहि। अध्याय भाषिक बहुलताक सामाजिक यथार्थकेँ राज्यक मानकीकरणसँ अलग राखैत अछि, मुदा प्रभावक तुलना लेल जिला-स्तरीय विद्यालय आ साक्षरता-अभिलेख जरूरी अछि। प्रमाण-सीमा : ७०.१-७०.३०।

अध्ययन ०७१ | मधेशमे स्त्री, नागरिकता आ गृहस्थीक अर्थव्यवस्था

एकहत्तरिम अध्याय नागरिकताकें केवल संवैधानिक पहिचान नहि, भूमि, शिक्षा, बैंक, प्रवास आ सार्वजनिक सेवाक व्यावहारिक शर्त मानैत अछि। सीमापार विवाहक समाजमे मातृपक्षीय नागरिकता, पति-पत्नीपर लागू असमान प्रावधान, जन्मदत्ता आ प्रमाणपत्रक अभाव आर्थिक वंचनाक रूप धऽ सकैत अछि। स्त्रीक कृषि-श्रम आ घरेलू देखभाल आयक औपचारिक गणनामे अल्प दृश्य अछि।

१९९०, २००७, २०१५ आ २०२३क कानून/संवैधानिक परिवर्तनकें एकहि नियम नहि मानि कालानुसार जाँचना चाही। स्त्रीक उत्तराधिकारक कानूनी अधिकार वास्तविक भूमि-पट्टा आ घरक भीतर निर्णय-अधिकारसँ अलग होइत अछि। ‘महिला-मुखिया’ कहल परिवारमे सम्पत्ति नियन्त्रण स्वतः स्त्रीक हाथमे अछि, एहन निष्कर्ष अनुचित अछि। अध्याय नागरिकताक कागद आ सामाजिक सामर्थ्यक सम्बन्ध खोलैत अछि; तकर सीमा स्थानीय क्रियान्वयनक असमान अभिलेख अछि। प्रमाण-सीमा : ७१.१-७१.३०।

अध्ययन ०७२ | जनकपुरक कला, शिल्प आ सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था

बहत्तरिम अध्याय जनकपुरक चित्रकला आ शिल्पकें केवल पर्यटन-बाजारक वस्तु नहि मानैत। घरक कोहबर, अरिपन आ अनुष्ठानिक चित्र कागज, वस्त्र, भित्तिचित्र आ व्यापारिक शिल्पमे रूपान्तरित भेला पर श्रम, नाम, दाम आ सामाजिक सम्बन्ध बदलैत अछि। १९८९क महिलाक कला-परियोजना आ १९९०क प्रदर्शनी संस्थागत परिवर्तनक सूचक अछि, कलापरम्पराक जन्मतिथि नहि।

स्थानीय कागज, रंग, अभ्यासकेन्द्र, महिला-समूह, शिल्प-विविधीकरण आ हस्ताक्षरित कृतिक आविर्भाव आर्थिक उपलब्धि दैतहुँ मूल्य-निर्धारण आ मालिकानाक नव विषमता उत्पन्न करि सकैत अछि। कला द्वारा आय बढ़ल कि निर्णय-अधिकार सेहो बढ़ल, ई अलग प्रश्न अछि। तीर्थ, बाजार, शहरी भित्तिचित्र आ डिजिटल प्रसारक सम्बन्ध अध्यायक शक्ति अछि। स्रोत-संकेत : ७२.१-७२.३०; क्षेत्रीय परियोजना-अभिलेख आ कलाकारक अनुभवक कालभेद।

अध्ययन ०७३ | सीमाबाजार, प्रेषित धन आ अनौपचारिक विनिमय

तिहत्तरिम अध्याय भारत-नेपाल सीमाक आर्थिक जीवनमे लोकक आवागमन, वस्तुक सीमा-शुल्क आ धनक सीमा-पार गमन अलग-अलग नियमक अधीन होयबाक तथ्य स्पष्ट करैत अछि। खुलल सीमान्तक अर्थ अनिवार्य रूपसँ करमुक्त व्यापार नहि। साप्ताहिक हाट, लघु-विक्रेता, मुद्रा-बदलाब, भारतक मजदूरी आ खाड़ीक परदेशसँ पठाओल आय एकहि गृहस्थीक बजटमे प्रवेश करि सकैत अछि। अनौपचारिक व्यापारक अनुमान आकार, पद्धति आ समय अनुसार बदलैत अछि; सभ दर्ज नहि भेल लेनदेन आपराधिक तस्करी नहि कहल जा सकैत। नातेदारीक भरोसा, लघु ऋण, बिचौलिया आ स्त्रीक घरेलू बाजार-प्रबन्ध एतए आर्थिक संस्था बनैत अछि। बैंकिंगक आधुनिकीकरणसँ नकद लेनदेन समाप्त भेल, एहन दावा अनैतिहासिक अछि। अध्यायक मूल योगदान विधि, सामाजिक व्यवहार आ वास्तविक मुद्रा-प्रवाह बीच अन्तर स्थापित करब अछि। प्रमाण-सीमा : अध्याय ७३.१-७३.३०।

अध्ययन ०७४ | स्वाधीनता, भूमिसुधार आ बिहारक कृषिपरिवर्तन

चौहत्तरिम अध्याय १९४७क स्वाधीनताक बाद बिहारक कृषिसमाजकेँ नव आरम्भक खाली पन्ना नहि मानैत। जमीन्दारी, रैयती, अधबटाइ, सेवाभूमि, ऋण, बाढ़ि आ छोट खण्डित खेतक संरचना नव राज्यकेँ उत्तराधिकारमे भेटल। १९५०क भूमिसुधार विधि, संवैधानिक विवाद, राजकीय अधिग्रहण आ अभिलेखीय व्यवस्था क्रमागत काज छल, एक अधिसूचनासँ खेतिहरिक सभ समस्या हल नहि भेल।

भूमिधारीक राजस्व-मध्यस्थता समाप्त करब आ प्रभावी भूमि-वितरण करब अलग नीतिगत लक्ष्य अछि। खास देखल, बकाशत, घरबारी आ उपरैयतक संरक्षण जकाँ प्रश्न पुराने शक्ति-संबन्धकेँ नव कानूनी स्थितिमे जीवित रखैत अछि। मिथिला, वज्जि आ अंगमे कानून एक रहलहुँ स्थल-परिवेश आ भू-रचना भिन्न छल। समीक्षाक दृष्टिसँ विधिक सफलता आ वास्तविक लाभार्थीक भूमि-अधिकारक स्वतंत्र मापन आवश्यक अछि। प्रमाण-सीमा : ७४.१-७४.३०।

अध्ययन ०७५ | जमीन्दारी उन्मूलनक असमान परिणाम

पचहत्तरिम अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे जमीन्दारीक उन्मूलन वास्तविक संवैधानिक परिवर्तन छल, मुदा ओकरा सम्पूर्ण सामाजिक क्रान्ति मानब नहि चाही। राज्य आ कृषक बीच राजस्व-मध्यस्थक अधिकार समाप्त भेल, जखन खास कब्जा, घरक भूभाग, अनुदान, क्षतिपूर्ति, जमा पूँजी आ स्थानीय राजनैतिक सम्पर्कद्वारा पूर्व प्रतिष्ठाक किछु रूप जीवित रहल।

जमीन्दारक कानूनी श्रेणी समाप्त भेलाक बाद जातिगत नियन्त्रण, ऋण, अधबटाइ आ मजदूरी सम्बन्ध अपने-आप नहि मेटाइत। रैयतक प्रत्यक्ष राज्य-संबन्ध कृषक सशक्तीकरणक महत्वपूर्ण शर्त छल, मुदा रिकॉर्ड, मापी, मुकदमा आ स्थानीय शक्तिक कारण लाभ असमान रहल। मूल ग्रन्थ एहि अन्तरकें अनिवार्य प्रश्न बनबैत अछि। स्रोत : अध्याय ७५.१-७५.३०; बिहार भूमिसुधार विधि आ अधिग्रहण सम्बन्धी अलग जिला-अभिलेख।

अध्ययन ०७६ | स्वाधीनताक बाद कृषि : तकनीक आ विषमता

छिहत्तरिम अध्याय बिहारक कृषि-विकासकें ठहराव आ समान रूपसँ सम्पन्न हरित-क्रान्तिक बीचक झूठ द्विविधामे नहि रखैत अछि। सिंचाइ, उन्नत बीज, खाद, भूजल, ऋण, सड़क आ बाजारक विस्तार अलग क्षेत्रमे अलग गति सँ भेल। गहुँमक उत्पादनमे तकनीकी लाभक रचना धान, मकै आ जलजमावबला कृषिक्षेत्रसँ भिन्न रहल।

खेत छोटा-खंडित होयब, बाढ़ि-सुखाइक परिवर्तनशीलता आ लागतक वृद्धि प्रति एकड़ उत्पादन बढ़लहुँ कृषकक घरेलू बचत सीमित करि सकैत अछि। उत्तर बिहारक जलाधिक्य आ सिंचाइक असमान उपलब्धताक परस्पर विरोध लेखकक महत्त्वपूर्ण विचार अछि। कृषिविकासक विवेचनमे भूमि-वितरण, उत्पादन आ परिवारक आय अलग-अलग सूचक होबाक चाही। प्रमाण-सीमा : ७६.१-७६.३०।

अध्ययन ०७७ | कोसी-गण्डक नदी-परियोजना आ विकासक द्वैत

सतहत्तरिम अध्याय कोसी आ गण्डक योजनाकेँ केवल सिंचाइ अथवा केवल बाढ़ि-बचावक परियोजना नहि कहैत। नेपाल-भारत सम्झौता, बराज, तटबन्ध, नहर, सड़क, विद्युत् आ जलप्रवाहक नियन्त्रण एकसंग जुड़ल छल। कोसीक बराज आ नहरक ऐतिहासिक तिथिसभ अलग राखब आवश्यक अछि; ‘जलाशय बाँध’ आ नदीक पाटमे बनल बराज तकनीकी रूपसँ एक वस्तु नहि।

तटबन्धक बाहरक पानि आ भितरक निकास, नदीक गाद, भूसम्पादन, विस्थापन, नहरक टेल-एण्ड जल पहुँच आ मरम्मतक भार विकासक असमान फल देखबैत अछि। परियोजनाक घोषित क्षेत्रफल वास्तविक लाभान्वित भूमि अथवा स्थायी बाढ़ि-सुरक्षाक सुनिश्चित माप नहि। पुस्तकक सामाजिक उपलब्धि विकासकेँ लाभ-हानिक भौगोलिक वितरणक प्रश्न बनब अछि। प्रमाण-सीमा : ७७.१-७७.३०; परियोजना-अभिलेख आ नदी-विज्ञानक भिन्न प्रमाण।

अध्ययन ०७८ | बाढ़ि : जल, जोखिम आ सामाजिक पुनरुत्पादन

अठहत्तरिम अध्याय बाढ़िक इतिहासकें वर्षा आ नदीक उफानक मौसमविज्ञानसँ आगाँ समाजक संवेदनशीलताक इतिहास बनबैत अछि। एकहि जलस्तर उर्वर गाद देबैत अछि, कतहुँ खेत बालू सँ भरैत अछि, कतहुँ घर कटैत अछि, कतहुँ विद्यालय आ बाजार बन्द करैत अछि। कटाव, जलजमाव, तटबन्ध-टूटव आ व्यापक जलप्लावन अलग जोखिम अछि।

१९८७, १९९८ आ २००४क बाढ़िक स्मृति आ राजकीय आँकड़ामे 'प्रभावित', 'जलमग्न', 'विस्थापित' आ 'क्षतिग्रस्त' सन पदक पृथक परिभाषा बुझब जरूरी अछि। भूमि, जाति, स्त्रीश्रम, गोठ, खाद्यभण्डार आ ऋण उबरबाक क्षमता निर्धारित करैत अछि। लेखकक बल सामाजिक असुरक्षा आ नदीक सक्रिय भूगोलक संयुक्त अध्ययन पर अछि। प्रमाण-सीमा : ७८.१-७८.३०।

अध्ययन ०७९ | ग्रामीण ऋण, कर्ज आ बैंकिंगक सामाजिक अर्थ

उनासीम अध्याय ऋणकैँ बैंक शाखाक संख्या मात्रसँ नहि नापैत । खेतीक बीज-खाद लेल अग्रिम, बाढ़िक बाद जीविका, विवाह, रोग, पशु, प्रवास आ भोजनक खर्च एकहि गृहस्थीक वित्तीय चक्रमे जुड़ल अछि । सहकारी संस्था, १९६९क बैंक-राष्ट्रीयकरण, अग्रणी बैंक-योजना आ प्राथमिकता-क्षेत्रक ऋण औपचारिक वित्तक विस्तारक सूचक अछि, मुदा साहूकारक व्यवहार समाप्त भेल, एहन निष्कर्ष नहि ।

भूमिक कागद आ जमानतविहीन परिवारकैँ बैंक सहज ऋण नहिं दऽ सकैत, जखन अनौपचारिक ऋण द्रुत उपलब्ध होइतहुँ शर्त कठोर भऽ सकैत अछि । मौसमक जोखिम, ऋण-वसूली आ ग्रामीण स्त्रीक वित्तीय स्वामित्वक अन्तर लेखकक विश्लेषणमे महत्वपूर्ण अछि । वित्तक पहुँच आ लाभकारी कृषि-उद्यम दुई स्वतंत्र मापन अछि । प्रमाण-सीमा : ७९.१-७९.३० ।

अध्ययन ०८० | सहकारिता आ ग्रामीण संस्था

अस्सीम अध्याय सहकारिताकें मात्र कृषि-ऋणक वितरणकर्ता नहि, छोटे उत्पादकक सामूहिक क्रय-विक्रय, संग्रहण, खाद-वितरण, दुग्ध-विपणन, माछ-पोखरि उपयोग आ जल-प्रबन्धक संस्था मानैत अछि। प्राथमिक कृषिसाख समिति, दुग्ध संघ, मत्स्य सहकारी समिति, स्वयं-सहायता समूह आ उत्पादक संगठनक कानूनी संरचना आ उद्देश्य एकसमान नहि अछि।

सहकारिताक एक सदस्य-एक मत सिद्धान्त स्थानीय सामाजिक पदानुक्रम, राज्य-निर्भर वित्त, अनुपस्थित निर्वाचन आ अभिलेखीय अपारदर्शिताक कारण व्यवहारमे सीमित भऽ सकैत अछि। संग्रहीत अनाजक गोदाम, समयपर दुग्धसंग्रह आ ऋतु-संगत पूँजी वास्तविक सेवा प्रदान करैत अछि कि नहि, एही आधारपर संस्थाक सफलता जाँचना चाही। डिजिटल लेखा-अनुक्रमक उपस्थितिमात्र भ्रष्टाचारमुक्त व्यवस्था सिद्ध नहि करैत। स्रोत-संकेत : ८०.१-८०.३०।

अध्ययन ०८१ | औद्योगीकरणक विस्तार आ सीमा

एकासीम अध्याय मिथिला-वज्जि-अंगमे उद्योगक सर्वथा अभाव नहि, असमान नोड-आधारित विकासक प्रश्न उठबैत अछि। बरौनीक तेलशोधन, जमालपुरक रेलकार्यशाला, चीनी उद्योग, खाद कारखाना आ औद्योगिक क्षेत्र बनलहुँ व्यापक उत्पादन-श्रृंखला आ स्थिर रोजगारक घन नेटवर्क नहि बनि सकल। एकटा पूँजीप्रधान प्रतिष्ठानक उत्पादन ओकर आसपासक छोट उद्योगसभक स्वचालित विकास सिद्ध नहि करैत।

औद्योगिक विकास जाँचबाक लेल कारखानाक क्षमता, बिजलीक भरोसा, स्थानीय कौशल, कच्चा माल, रेल-सड़क सम्पर्क आ वास्तविक रोजगार अलग माप चाही।

मालभाड़ा-समानीकरण अकेला सार्वभौमिक कारण मानब सरलीकरण अछि।

अध्यायक उपलब्धि राज्य निवेश आ सामाजिक रोजगार बीचक अन्तर सामने रखब अछि। प्रमाण-सीमा : ८१.१-८१.३०।

अध्ययन ०८२ | भागलपुर रेशम आ अंगक वस्त्र-अर्थव्यवस्था

बयासीम अध्याय भागलपुर रेशमकेँ एकटा प्रसिद्ध वस्तु नहि, कोसा, सूत, रीलिंग, रंगाई, करघा, डिजाइन, महाजनक ऋण आ विपणनक वितरित श्रमशृंखला मानैत अछि। भागलपुर-बाँका आ आसपासक प्रदेशक कच्चामाल-स्रोत भिन्न होयब स्थानीय उद्योगक टिकाउपन आ निर्भरता दुनू समझबैत अछि। आधुनिक ख्यातिकेँ प्राचीन कालक अपरिवर्तित शिल्परूप मानब उचित नहि।

स्त्रीक सूत-तैयारी आ पारिवारिक श्रम सार्वजनिक 'बुनकर'क छविमे अल्प दृश्य रहैत अछि। सरकारी सहकारिता, बाजारक माँग आ निर्यात-संपर्क लाभक वितरण बराबर नहि करैत। बुचानन-हैमिल्टनक प्रारम्भिक विवरण आ आधुनिक उत्पादनक तथ्य अलग समयक स्रोत अछि। प्रमाण-सीमा : ८२.१-८२.३०।

अध्ययन ०८३ | मखान, माछ, दुग्ध आ विशेषीकृत क्षेत्रीय उत्पादन

तिरासीम अध्याय जलजमाव, पोखरि आ घास-पातक पारिस्थितिकीकेँ केवल खेतीक बाधा नहि, मखान आ माछ उत्पादनक संसाधन मानैत अछि। गोरसक अर्थव्यवस्था आन जैविक चक्र पर आश्रित अछि, मुदा तीनू क्षेत्रमे छोट उत्पादक, प्रसंस्करण, भण्डारण, ऋण आ बाजारक पहुँचक निर्णायक स्थान अछि। मखानक दाम बढ़ब आ वास्तविक उत्पादकक आय बढ़ब एक बात नहि।

दरभंगाक मखान-अनुसन्धान, खेत-आधारित नव पद्धति, प्रसंस्करणक श्रम तथा डेरी-संग्रहण तकनीकी परिवर्तनक भिन्न संस्था अछि। जलाशयक अधिकार आ माछमारक आय-साझेदारी वितरणगत प्रश्न खोलैत अछि। अध्यायक विशिष्ट उपलब्धि परंपरागत 'अउपजाऊ' कहायल भूभागक आर्थिक मूल्यक पुनर्मूल्यांकन अछि। प्रमाण-सीमा : ८३.१-८३.३०।

अध्ययन ०८४ | स्वाधीनताक बाद शिक्षा आ सार्वजनिक अवसर

चौरासीम अध्याय विद्यालयक मात्र सङ्ख्या नहि, बच्चाक नियमित उपस्थिति, माध्यमिक धरि टिकाव, स्त्री-शिक्षा, परीक्षा आ उच्चशिक्षाक पहुँचक क्रम देखैत अछि। विद्यालयक दूरी, घरक श्रम, जातिगत बहिष्कार आ गरीबी शिक्षाक अवसर घटबैत छल। साइकिल, पोशाक, मध्यान्ह भोजन आ छात्रवृत्ति सन उपाय विद्यालय-प्रवेशक भौतिक शर्त बदलैत अछि; मुदा परीक्षा-परिणाम आ उच्चशिक्षाक सफलता स्वतः सुनिश्चित नहि करैत।

क्षेत्रीय विश्वविद्यालय आ महाविद्यालयक विस्तार सामाजिक गतिशीलता बढ़बैत अछि, पर शिक्षकक उपलब्धता, विषयक विविधता आ रोजगारक कमी नूतन अवरोध बनि सकैत अछि। इतिहासक आलोचनामे साक्षरता, नामाङ्कन आ वास्तविक अधिगमक आँकड़ा एक-दोसरक पर्याय नहि। स्रोत : ८४.१-८४.३०।

अध्ययन ०८५ | स्वास्थ्य आ जनस्वास्थ्यक परिवर्तन

पचासीम अध्याय घरक रोग-जोखिमसँ सार्वजनिक स्वास्थ्य-व्यवस्था धरि लम्ब परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि। दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, टीकाकरण, कालाजार नियन्त्रण, क्षयरोग कार्यक्रम आ प्रसूति-सेवा सार्वजनिक स्वास्थ्यक बहुस्तरीय जाल बनबैत अछि। संस्थाक भवन आ कार्यरत चिकित्सक, औषधि, रक्त, परिवहन आ सतत सेवाक उपलब्धता एक वस्तु नहि।

बाढ़ि, दुर्गम पानि-क्षेत्र, वर्ग, जाति आ स्त्रीक यात्रा-सुरक्षा उपचारक वास्तविक खर्च बदलैत अछि। रोगक दर्ज घटब मे देखभालक सुधार, जाँच-पद्धतिक परिवर्तन आ असम्पूर्ण सूचना सभक प्रभाव भऽ सकैत अछि। अध्यायक सामाजिक उपलब्धि सार्वजनिक स्वास्थ्यकें समान पहुँचक प्रश्न बनब अछि। प्रमाण-सीमा : ८५.१-८५.३०।

अध्ययन ०८६ | सड़क, रेल, बिजली आ सञ्चार

छियासीम अध्याय बुनियादी ढाँचेकें किलोमीटरक संख्या नहि, दूरीक व्यावहारिक घटाव मानैत अछि। गङ्गाक पुल, कोसी-पारक सम्पर्क, रेल-गेज परिवर्तन, ग्रामीण सड़क, विद्युतीकरण आ फोन-डिजिटल संजाल बाजार, उपचार आ शिक्षाक व्यवहार बदलैत अछि। राजेन्द्र सेतु आ गांधी सेतु जकाँ पुलक भिन्न इतिहास मार्गक भूगोल पर प्रभाव पारैत अछि।

एकटा गाँव नक्शामे शहरक लग होइतहुँ बरसातमे अलग-थलग भऽ सकैत अछि। बिजलीक तार बिछल अछि तँ भरोसेमन्द आपूर्ति अछि, एहन दावा गलत; रेललाइन अछि तँ समयसंगत यातायात उपलब्ध अछि, सेहो आवश्यक नहि। लेखक प्रभावी दूरी आ असमान पहुँचक अर्थव्यवस्थाकें महत्त्व दैत छथि। प्रमाण-सीमा : ८६.१-८६.३०।

अध्ययन ०८७ | जाति-सम्बन्धक ऐतिहासिक निर्माण

सतासीम अध्याय जातिक समाजशास्त्रकें वैदिक वर्णसूचीक स्थिर विस्तार अथवा केवल आधुनिक चुनावी आविष्कार नहि कहैत। खेती, विवाह, पञ्जी, शिल्प, सरकारी पद, शिक्षा, गणना आ निर्वाचनसँ समुदायगत सम्बन्ध समयानुसार बदलैत अछि। एकहि जातिनाम भीतर क्षेत्र, सम्पत्ति आ पेशा अनुसार गम्भीर भिन्नता सम्भव अछि।

पञ्जीप्रबन्धक इतिहासक श्रेणीकें पालकालपर आरोपित नहि करबाक सावधानी एतयो लागू अछि। उत्तरकालीन श्रोत्रिय उपविभाजनक प्रमाण आ आरम्भिक संस्कृत 'श्रोत्रिय' विशेषणक अर्थ अलग अछि। सामाजिक पदानुक्रमक वास्तविक प्रभावक आलोचनामे जातिसूची संग जमीन, मजदूरी, स्त्री-अवसर आ संस्थागत प्रतिनिधित्वक स्रोत आवश्यक अछि। प्रमाण-सीमा : ८७.१-८७.३०।

अध्ययन ०८८ | दलित इतिहास : श्रम, भूमि आ अधिकार

अठासीम अध्याय दलित समुदायकें अन्य जाति-इतिहासक उपान्त नहि, अपन ऐतिहासिक विषय मानैत अछि। मुसहर, रविदास, पासवान, डोम आ अन्य समूहक श्रम, भूमि-वंचना, परम्परागत पेशा, शिक्षा, प्रवास आ स्वाभिमान-आन्दोलनक राहि एकरूप नहि। अनुसूचित जातिक कानूनी श्रेणी आ दलितक सामाजिक-राजनीतिक पहचान जुड़े रहलहुँ पूर्ण समानार्थी नहि।

भूमिहीनता आ ऋण श्रम-निर्भरता बढ़बैत अछि; विद्यालय, आरक्षण, राजनीतिक संगठन आ शहरी मजदूरी किछु पुरान अवरोध बदलैत अछि, मुदा आन भेदभाव उपस्थित रहि सकैत अछि। सामाजिक गतिशीलताक उदाहरण सँ समस्त समुदायक आर्थिक स्थिति नापब उचित नहि। मूल अध्यायक उपलब्धि हाशिएक समूहक साक्ष्यकें इतिहासक केन्द्रमे आनब अछि। प्रमाण-सीमा : ८८.१-८८.३०।

अध्ययन ०८९ | आदिवासी आ वन-संबद्ध जनसमुदायक इतिहास

उननवेम अध्याय मिथिला-वज्जिक मैदानक सामाजिक इतिहास आ अंगक पूर्व-दक्षिण सीमाञ्चलक संथाल-पहाडिया परम्परा बीच क्षेत्रीय अन्तर राखैत अछि। अनुसूचित जनजातिक संवैधानिक पहचान सभ काल आ प्रत्येक राज्यक एकैसँ लागू होयवाला प्राचीन पद नहि। वनसँ जीवन-निर्वाह आ आदिवासी पहिचान सेहो एकहि श्रेणी नहि।

पूर्ववर्ती भागलपुर-संथाल परगना प्रशासकीय भूगोल, बसावट, ऋण, वन, भूसम्पत्ति आ १८५५क संथाल हूल स्थानीय समाजक राजनीतिक आर्थिक टकराव समझबाक आधार अछि। आजुक बिहार-झारखण्ड सीमा पुरान व्यापार, परिवार आ श्रमिक आवागमनकें विभाजित करैत अछि। अध्यायक उपलब्धि न क्षेत्रीय अप्रासंगिकता आ न असिद्ध सर्वव्यापकता—दुनूसँ बचि संदर्भ-संगत आदिवासी इतिहास बनब अछि। प्रमाण-सीमा : ८९.१-८९.३०।

अध्ययन ०१० | मिथिला आ अंगक मुसलमान समाज

नब्बेम अध्याय मुसलमान समाजकेँ शासकक वंशक्रम, जनसंख्याक प्रतिशत अथवा साम्प्रदायिक घटनामात्रसँ नहि बुझैत अछि। ग्रामक कृषक, बुनकर, सूफी, अध्यापक, व्यापारी, निम्नवेतन कर्मचारी आ पेशागत विरादरीसभक सामाजिक इतिहास अलग-अलग स्रोत माँगैत अछि। स्थानिक मैथिली, अंगिका, बज्जिका आ उर्दूक व्यवहार सामाजिक बहुभाषिकताक रूप अछि; धर्मसँ एकटा मातृभाषाक अनिवार्य सम्बन्ध नहि बनैत।

मस्जिद, दरगाह, मदरसा, स्थानीय हाट आ कृषिभूमिक माध्यमसँ बहुशताब्दीय सार्वजनिक सहभागिता बनल। एकटा ऐतिहासिक काजी वा सूफीक जीवनी सम्पूर्ण समुदायक वर्गस्थिति नहिं बतबैत। स्त्रीक शिक्षा, भूमि-अधिकार आ कारीगरीक अल्प अभिलेख आलोचनाक शेष प्रश्न अछि। अध्याय धार्मिक पहिचानक भीतर वर्ग, व्यवसाय आ भाषिक भिन्नता देखबैत अछि। प्रमाण-सीमा : १०.१-१०.३०।

अध्ययन ०९१ | लिङ्ग-संबन्ध आ गृहस्थीक अर्थव्यवस्था

एकनवेम अध्याय गृहस्थीकेँ केवल जनगणनाक इकाई नहि, आमदनी, खेत, भोजन, देखभाल, ऋण, सन्तानक शिक्षा, बीमारी आ सामाजिक दायित्व बाँटयवला आर्थिक संस्था मानैत अछि। घरक सदस्य बनब आ साझा संसाधनपर समान अधिकार रहब अलग अवस्था अछि। स्त्रीक दैनिक पानि, ईंधन, भोजन आ वृद्ध-देखभालक श्रम नकद लेनदेनबाहिर रहितहुँ सामाजिक उत्पादनक आधार अछि। प्रवाससँ पठाओल धन, राशन, स्वयं-सहायता समूह, बैंक आ डिजिटल हस्तान्तरण गृहस्थीक बजट बदलैत अछि, मुदा नातेदारीक अधिकार, विवाह आ लिंग-आधारित श्रम-विभाजन समाप्त नहि करैत। लेखकीय विवेचनमे आय, उपभोग आ निर्णय-अधिकारक पृथक मापन महत्वपूर्ण अछि। दस्तावेजमे नामित 'घरक मुखिया' वास्तविक घरेलू शक्ति सम्बन्धक पूरा चित्र नहि। प्रमाण-सीमा : ११.१-११.३०।

अध्ययन ०१२ | स्त्रीक वेतनयुक्त आ अवैतनिक श्रम

बानबेम अध्याय स्त्रीक कामक आर्थिक महत्त्वकेँ रोजगारक औपचारिक गणना सँ बाहर सेहो खोजैत अछि। धान रोपब, पशु पालब, मखान चुनब, करघामे सहयोग, भोजन पकाएब, रोगीक सेवा आ घरेलू लेखा—ई काजभेद नकद मजदूरी, स्व-उपभोग आ पारिवारिक उद्योगमे भिन्न रूपसँ सम्मिलित अछि। रोजगार-दर कम होयब स्त्रीक श्रम कम होयबाक पर्याय नहि।

जाति, वर्ग, आय, विवाहक अवस्था आ प्रवासक कारण श्रमक सार्वजनिक दृश्यता बदलैत अछि। स्त्रीक श्रमशक्ति मापबाक सर्वेक्षणमे ‘सहायक काम’, ‘मुख्य काम’ आ ‘देखभाल’क परिभाषा समयानुसार बदललासँ शृंखलाक तुलना कठोर जाँच माँगैत अछि। लेखक सामाजिक पुनरुत्पादनकेँ अर्थव्यवस्थाक केन्द्रमे अनैत छथि।
प्रमाण-सीमा : १२.१-१२.३०।

अध्ययन ०९३ | विवाह, दहेज, उत्तराधिकार आ परिवारक बदलाव

तिरानवेम अध्याय विवाहकें सम्बन्धक सामाजिक मान्यता संग सम्पत्ति, आवास, प्रतिष्ठा आ श्रम-वितरणक संस्था मानैत अछि। पञ्जी आधारित वैवाहिक चयन, आधुनिक शिक्षा, वेतनक मूल्य, आब्रजन, धार्मिक विधि आ डिजिटल माध्यम मिलि विवाह-संस्कृति बदलैत अछि। दहेज, स्त्रीधन आ मुसलमानक मेहर कानूनी आ सामाजिक रूपसँ पृथक अवधारणा अछि; एक शब्दमे समेटब व्याख्याक त्रुटि होयत।

विवाहक आयुमे परिवर्तन विद्यालय, कानून आ जीविका सँ जुड़ैत अछि। बेटी अथवा विधवाक कानूनी उत्तराधिकार अधिकार वास्तविक घर-जमीन पर नियंत्रणक समान नहि। परिवारक आकार बदललासँ अन्तरपीढ़ी आर्थिक सहयोग नष्ट भेल, एहन समग्र निष्कर्ष अनुचित अछि। अध्यायक आलोचनात्मक उपलब्धि शास्त्रीय नियम, अदालतक विधि आ जीवित व्यवहारक कालानुक्रमिक अन्तर स्पष्ट करब अछि। प्रमाण-सीमा : १३.१-१३.३०।

अध्ययन ०९४ | शिक्षा आ सामाजिक गतिशीलताक अवसर

चौरानवेम अध्याय डिग्रीक विस्तारकेँ स्वतः समानता नहि मानैत। स्कूल, छात्रवृत्ति, छात्रावास, सरकारी परीक्षा, क्षेत्रीय महाविद्यालय आ आधुनिक डिजिटल शिक्षामार्फत रोजगार, प्रवास आ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक नव अवसर बनैत अछि। मुदा पहिल पीढ़ीक विद्यार्थीक लागत, भाषाक अवरोध, पारिवारिक सहयोग आ पेशागत नेटवर्कक विषमता बने रहैत अछि।

प्रमाणपत्र अर्जित करब आ सुरक्षित रोजगार प्राप्त करब अलग परिणाम अछि। लड़का-लड़कीक शैक्षिक प्रगति, जातिसम्बद्ध पिछड़ापन आ ग्रामीण नगर-दूरीक तुलना बिना अवसरक विस्तारक कथा अपूर्ण अछि। अध्यायक शक्ति सामाजिक गतिशीलताकेँ एक निरन्तर प्रक्रिया मानब अछि, जकर प्रत्येक चरणमे नूतन सीमा उपस्थित भऽ सकैत अछि। प्रमाण-सीमा : ९४.१-९४.३०।

अध्ययन ०९५ | आरक्षण, सकारात्मक उपाय आ नव मध्यमवर्ग

पंचानबेम अध्याय प्रतिनिधित्वक कानूनकेँ भारतीय संविधानसँ बिहारक कर्पूरी ठाकुर सूत्र, मण्डल आयोग, अत्यन्त पिछड़ा वर्ग-पिछड़ा वर्गक श्रेणी, स्त्रीक क्षैतिज आरक्षण आ आर्थिक रूपसँ कमजोर वर्गक नव प्रावधान धरि कालानुक्रममे पढैत अछि। नेपालक मधेशी समावेश प्रणाली अलग संवैधानिक सन्दर्भमे विकसित भेल; ओकर समानता आ भिन्नता स्पष्ट राखबाक चाही।

आरक्षणसँ विद्यालय, पद आ स्थानीय प्रतिनिधित्वक औपचारिक प्रवेश बदलैत अछि, मुदा लाभ समुदायसभक भीतर असमान रूपसँ वितरित होयब सम्भव अछि। 'नव मध्यमवर्ग'क सामाजिक स्थिति कतेक टिकाउ अछि, तकर जाँच शिक्षा, आय, पेशा आ लैंगिक अधिकारसँ करब अपेक्षित अछि। आरक्षणक प्रतिशत सम्बन्धी तिथि-विशेष नियमकेँ आजुक नियमक रूपमे बिना जाँच नहि दोहराएब चाहिए।
प्रमाण-सीमा : ९५.१-९५.३०।

अध्ययन ०९६ | ग्रामीण अभिजन आ बदलैत भूमिक शक्ति

छियानबेम अध्याय ग्रामक सत्ता केवल खेतक क्षेत्रफलमे केन्द्रित नहि मानैत । राजस्व-अधिकार, ऋण, जातिगत प्रतिष्ठा, विद्यालय, दलगत सम्पर्क, सहकारी समिति, ठेकेदारी आ पंचायत पद—ई सभ शक्ति-संसाधन अछि । जमीन्दारी उन्मूलनसँ पूर्व मध्यस्थक कानूनी अधिकार समाप्त भेल, मुदा पुरान पूँजी आ सम्बन्ध नव व्यवस्थामे रूपान्तरित भऽ सकल ।

भूदान, भूसीमा विधि आ आरक्षित पंचायत-पद लोकप्रतिनिधित्वक ढाँचा बदलैत अछि । परन्तु निर्वाचित पदपर नामित प्रतिनिधि आ वास्तविक निर्णयाधिकारी एकहि व्यक्ति भऽ सकैत छथि वा नहि, ई अलग व्यवहारिक प्रश्न अछि । पुरान अभिजनक समाजीकरण आ नव अभिजनक उत्थान दुनूकें स्थानीय अभिलेख आ ग्राम-सम्पत्ति विश्लेषणसँ समझबाक चाही । प्रमाण-सीमा : ९६.१-९६.३० ।

अध्ययन ०९७ | प्रवासक दीर्घ ऐतिहासिक क्रम

सन्तानक विवाह, शिक्षकक यात्राक मार्ग, मल्लाहक नदी-व्यापार, तीर्थ, सैनिक सेवा आ खेतीक मौसमी रोजगार—ई सभ प्रवासक पृथक ऐतिहासिक रूप अछि। सत्तानबेम अध्याय प्रवासकें आधुनिक संकटसँ शुरू होइत घटना नहि मानैत। परिवहनक साधन, गृहस्थीक दायित्व, यात्राक अवधि आ श्रमिकक कानूनी स्थिति बदललासँ सामाजिक अर्थ बदलैत अछि।

आजुक जनगणनाक 'प्रवासी' श्रेणी प्राचीन विद्वानक आवागमन अथवा विवाह-स्थानान्तरणक सीधा सांख्यिक प्रतिरूप नहि। मिथिला-नेपाल, गङ्गा आ नगरक पुरान मार्गक विश्लेषण दीर्घकालीन आवागमनक आधार खोलैत अछि; तथापि अलग कालक संख्याक निरन्तर शृंखला नहि मानबाक चाही। लेखकक मूल योगदान संकट, अवसर आ पुनरावृत्त घरेलू रणनीतिक बीच सम्बन्ध देखब अछि। प्रमाण-सीमा : १७.१-१७.३०।

अध्ययन ०९८ | कलकत्ता आ मिथिला-अंगक प्रवासी सम्बन्ध

अट्टानवेम अध्याय कलकत्ताकें मात्र गन्तव्य शहर नहि, बाहरी शहरमे रहितहुँ गामसँ जुड़ल गृहस्थी अर्थव्यवस्थाक विस्तार मानैत अछि। गङ्गा मार्ग, कम्पनीक राजधानी, रेल, जूट कारखाना, बन्दरगाह, लघु व्यापार आ घरक सेवा-श्रम विभिन्न समुदायकें आकर्षित कएलक। प्रवासक आमदनी घरक ऋण, खेती, विवाह आ शिक्षामे वापस प्रवेश करैत अछि।

‘हिन्दुस्तानी’ अथवा ‘अपकण्ट्री’ जकाँ नगरीय श्रेणीकें विशिष्ट जातीय वा भाषिक पहिचान मानब त्रुटिपूर्ण अछि। कारखानाक मजदूर, रिक्शावाला, कार्यालयी कर्मचारी आ विद्यार्थी एकसमान श्रमिक अनुभव नहि रखैत छल। श्रमिकक वापसी-यात्रा आ मूल गामसँ निरन्तर सम्बन्ध अध्यायक प्रमुख सामाजिक विषय अछि। प्रमाण-सीमा : १८.१-१८.३०।

अध्ययन ०९९ | दिल्ली, मुम्बई आ स्वाधीनताक बादक चलनशीलता

निनानवेम अध्याय १९४७क बादक प्रवासमे कलकत्ताक पुरान सम्बन्ध समाप्त भेल नहि, नव महानगरीय दिशासभ जुड़ल—एहि परिवर्तनक विवेचन करैत अछि।

दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रक निर्माण, कार्यशाला, घरेलू सेवा, गोदाम आ सड़क निर्माण तथा मुम्बईक उत्पादन, परिवहन, होटल आ सेवा-अर्थव्यवस्था भिन्न मजदूरी आ निवास-खर्चक परिस्थिति उत्पन्न करैत अछि।

दूरस्थ महानगरमे कमाएल सकल वेतनक तुलना मात्र भ्रामक अछि; किराया, आवासक असुरक्षा, यात्रा, ऋण आ परिवारसँ दूरी घटाके वास्तविक गृहस्थ लाभ देखबाक चाही। दिल्लीक भाषिक सुविधा अथवा मुम्बईक अपेक्षाकृत महँग आवास सामाजिक संजालक महत्त्व बदलैत अछि। अध्याय प्रवासक बहुगन्तव्य सामाजिक मानचित्र उपस्थित करैत अछि। प्रमाण-सीमा : १९.१-१९.३०।

अध्ययन १०० | पञ्जाब-हरियाणामे मौसमी कृषिमजदूरी

सएम अध्याय पूर्वी बिहारसँ पश्चिमोत्तर हरित-क्रान्ति क्षेत्रमे गेल श्रमिकक इतिहासकेँ ग्रामसँ नगर पलायनक रूप नहि, दू कृषिक्षेत्र बीच मौसमी श्रम-बँटवाराक रूपमे पढ़ैत अछि। धान रोपवाक तीव्र ऋतु, मजदूरीक अन्तर, रेलक पहुँच आ गाम-सम्बन्धीक भर्ती-सञ्जाल आवागमनकेँ पुनरावृत्त बनबैत अछि।

टुकड़ीमे काम, प्रति कामक दर, घर फर्कबाक समय आ मजदूरी अग्रिम मजदूरक सौदाक शक्ति निर्धारित करैत अछि। पूर्वी बिहारक फसल-समय आ पश्चिमी पञ्जाबक रोपनीकाल मेल नहि खाएब प्रवासक अवसर बनैत अछि। मुदा भीड़, स्वास्थ्य आ ठेका-शर्तक जोखिम सकल आयक बढ़ोतरीसँ मेटाइत नहि। प्रमाण-सीमा : १००.१-१००.३०।

अध्ययन १०१ | नेपाल-भारतक आवर्ती प्रवास

एक सए एकम अध्याय सीमापार चलनशीलताकेँ स्थायी विदेश-गमनक एकरेखीय अर्थमे नहि रखैत। विवाह, मजदूरी, स्कूल, अस्पताल, हाट, तीर्थ आ आवर्ती परिवार-भेंट उत्तर बिहार-मधेशमे बहुकेंद्रिक गृहस्थ जीवन बनबैत अछि। १९५०क भारत-नेपाल सन्धि यात्राक राजनीतिक ढाँचा निर्धारित करैत अछि, मुदा सामाजिक सम्पर्क ओकरासँ पुरान अछि।

खुलल सीमा प्रवासक राजकीय गणना कठिन बनबैत अछि। रोजगार लेल गेल व्यक्ति आ विवाहमे स्थान बदलनिहार स्त्रीक कारण आ संख्या अलग नापबाक चाही। सीमाक दुर्लभ अभिलेखकेँ शून्य आवागमन नहि मानल जा सकैत अछि। अध्यायक योगदान राज्यसीमा आ जीवित नातेदारी क्षेत्रक अन्तर स्पष्ट करब अछि। प्रमाण-सीमा : १०१.१-१०१.३०।

अध्ययन १०२ | खाडी देशक श्रमिक प्रवास

एक सए दोसर अध्याय तेल-अर्थव्यवस्थाक विस्तारसँ सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत, ओमान आ बहरीन दिस गेल श्रमिकक इतिहासक विवेचन करैत अछि। रेल टिकट आ गामक परिचयपर आधारित भीतरी प्रवाससँ भिन्न, एहि यात्रामे पासपोर्ट, वीजा, भर्ती-दलाल, अनुबंध आ हवाई भाडाक लागत अनिवार्य भऽ सकैत अछि।

बेशी विदेशी वेतनक सम्भावना संग प्रवेश-अग्रिमक ऋण, नियोजकक नियन्त्रण आ अपूर्ण कानूनी सुरक्षा सेहो अछि। सरकारी प्रवासन आँकड़ा सभक पूर्ण गणना नहि, विशेष पंजीकरण अथवा निर्गमन-नियमक आधार पर बनल भागिक अभिलेख होइत अछि। प्रवासी श्रमिकक परिवारक लाभ मापैत समय सकल वेतन, भेजल धन आ कर्ज-वसूली अलग देखबाक चाही। प्रमाण-सीमा : १०२.१-१०२.३०।

अध्ययन १०३ | प्रेषित धन आ गृहस्थीक रूपान्तरण

एक सए तेसर अध्यायक मूल प्रश्न अछि जे बाहरक श्रम घरक बजट, भोजन, शिक्षा, रोगोपचार, मकान, खेत आ विवाहक खर्चमे कोना बदलैत अछि। प्रेषित धन नियमित वा अनियमित, बैंक द्वारा वा हाथसँ, महिलाक हाथमे वा आन सदस्यक नियन्त्रणमे पहुँचि सकैत अछि। धनक प्राप्ति आ घरेलू अधिकारक वितरण एकहि बात नहि।

उपभोग-खर्चकें 'अनुत्पादक' कहब गरीब परिवारक खाद्यसुरक्षाक सामाजिक मूल्य नकारब होयत। धन पठाओनिहारक अनुपस्थितिमे देखभालक अतिरिक्त श्रम, प्रवास-ऋणक लागत आ अनिश्चित आमदनीक जोखिम रहैत अछि। प्रमाण-सीमा : १०३.१-१०३.३०; प्रवासी संख्या, प्रेषित रकम आ परिवारक वास्तविक बचतक अलग आँकड़ा।

अध्ययन १०४ | नगरीकरण : नगरसदृश कार्य आ प्रशासनिक सीमा

एक सए चारिम अध्याय नगरीकरणकें नगरपालिका जनसंख्याक प्रतिशतसँ आगाँ पढ़ैत अछि। सड़क किनारक बस्ती, रेल-जंक्शन, हाट, महाविद्यालय, अस्पताल, बैंक आ प्रवासी धनसँ बनल मकान ग्रामीण सीमाक भीतर नगरक कार्य उत्पन्न करि सकैत अछि। जनगणनाक शहर परिभाषा आ स्थानीय विकासक वास्तविक सामाजिक रूप पूरा मेल नहि खाइत।

दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, भागलपुर आ अन्य केन्द्रसभक बहुकेंद्रिक रूप एक महानगरकेन्द्रित दृष्टिक विकल्प अछि। नगरीय सीमा बदललासँ जनसंख्याक प्रतिशत तुलनीय नहि रहि सकैत अछि। आधुनिक नगर विकासमूलक काज सेहो बाढ़ि, अनौपचारिक श्रम आ आवासक असमानतासँ जुड़ल अछि। अध्यायक मुख्य उपलब्धि बसावट-प्रणालीक परिवर्तन पहिचानब अछि।

प्रमाण-सीमा : १०४.१-१०४.३०।

अध्ययन १०५ | अनौपचारिक अर्थव्यवस्था आ सड़ककिनारक व्यापार

एक सए पाँचम अध्याय अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाकेँ अवैध व्यापारक पर्याय नहि मानैत। स्टेशनक चौक, हाट, बस अड्डा, अस्पतालक केवाड़ी, घरक सूक्ष्म उत्पादन, सवारी, मरम्मत, खाद्य-विक्रय आ दुलाई लाखों छोट लेनदेनक आधार अछि।

वैधानिक स्थिति, पंजीकरण, मजदूरी-सुरक्षा आ व्यवसाय आकार भिन्न पहलू अछि।

पथक किनारक स्थान आ ग्राहकक आवागमन पूँजीक समान आर्थिक संसाधन अछि। नगर-प्रशासनक विस्थापन, सड़क-विस्तार आ नियत विक्रय-क्षेत्र

लघुव्यापारीक जीविका बदलैत अछि। स्त्रीक घर-आधारित उद्यमक गणना कठिन अछि; व्यवसाय देखबामे छोट होइतहुँ परिवहन-थोक-खुदरा सम्बन्धमे महत्वपूर्ण भऽ सकैत अछि। प्रमाण-सीमा : १०५.१-१०५.३०।

अध्ययन १०६ | प्रवासी सांस्कृतिक संस्थाक निर्माण

एक सए छठम अध्यायक मुख्य प्रतिज्ञा अछि जे एकहि क्षेत्रसँ प्रवास करब मात्रसँ सार्वजनिक प्रवासी समुदाय नहि बनैत। संघ, साहित्यसभा, विद्यापति पर्व, पत्रिका, युवा-मण्डली, परोपकार संस्था आ डिजिटल समूह पुनरावृत्त सांस्कृतिक क्रिया द्वारा जनसमुदाय तैयार करैत अछि। घरक भाषाक निजी स्मृति आ सार्वजनिक मंच पर ओकर प्रतिष्ठा दुनू भिन्न अवस्था अछि।

कलकत्ता, दिल्ली आ आन प्रवासी केन्द्रमे स्मारिका, नाटक, कविता आ सभाक संस्थागत जीवन मुद्रित अभिलेख उत्पन्न करैत अछि। पीढ़ी बदलबाक संग मातृभाषाक सक्रिय प्रयोग, प्रतीकात्मक पहिचान आ विवाह-सम्बन्ध अलग-अलग चलि सकैत अछि। अध्याय संस्कृति-संरक्षण आ संस्थागत प्रतिनिधित्वक तनाव पहिचानैत अछि। प्रमाण-सीमा : १०६.१-१०६.३०।

अध्ययन १०७ | मैथिली मुद्रण आ साहित्यिक संस्था

एक सए सातम अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे छःपाईसँ मैथिली साहित्यिक जन्म नहि, ओकर पुनरुत्पादन, व्याकरणिक मानक, पाठक समाज आ पुरस्कारक प्रक्रिया बदलल। पाण्डुलिपि, मौखिक पाठ आ मुद्रित संस्करण दीर्घ समय धरि एकसंग चलल। पत्रिका, प्रकाशक, सम्पादक, वितरक, विद्यालय, अकादमी आ डिजिटल संग्रह साहित्यिक अधिकारक अलग भागीदार अछि।

मिथिला मिहिर आ क्षेत्रबाहिर प्रकाशित पत्रिकासभक माध्यमसँ साहित्यिक भूगोल एक प्रान्तमे सीमित नहि रहल। सम्पादकीय चयन किछु रचनाकेँ केन्द्रमे अनैत अछि जखन किछु बोली, स्त्रीलेखन आ अव्यावसायिक रचना पाछाँ रहि सकैत अछि। संस्थाक सूची मात्रसँ साहित्यिक जीवंतता नापब पर्याप्त नहि। प्रमाण-सीमा : १०७.१-१०७.३०।

अध्ययन १०८ | अंगिका मुद्रण आ क्षेत्रीय साहित्यिक संस्था

एक सए अठम अध्याय आधुनिक अंगिका साहित्यिक छुपाईक इतिहासकें अंगिकाक बोलचालक जन्मक इतिहास नहि मानैत । लोककथा संग्रह, व्याकरण, कोश, कविता, नाटक, आलोचना आ पत्रिका आधुनिक पठनीय क्षेत्रक विकास करैत अछि । छुपाईक नामकरण आ मानकीकरण भाषिक स्वायत्तताक सार्वजनिक तर्कक हिस्सा बनैत अछि ।

अंग माधुरी सन आवधिक पत्रिका संपादकीय निरन्तरता दैत अछि; किन्तु पाठक-संख्या, उपलब्ध प्रति, पत्रिकाक विराम आ पुनर्प्रकाशनक अभिलेख भिन्न जांच माँगैत अछि । छोट बाजारवाला भाषा मे प्रकाशक, पाठक आ संस्थाक निर्भरता महत्वपूर्ण अछि । आधुनिक पुस्तकसूचीकें प्राचीन अंगक भाषा-सीमा प्रमाण मानब कालभ्रान्ति होयत । प्रमाण-सीमा : १०८.१-१०८.३० ।

अध्ययन १०९ | रेडियो आ प्रसारणक सामाजिक इतिहास

एक सए नबम अध्याय रेडियोकेँ एक वाणी अनेक ठाम एकहि समय पहुँचयवला सार्वजनिक माध्यम मानैत अछि। पटना, भागलपुर आ दरभंगा प्रसारण केन्द्रसभक कार्यक्रम भाषा, लोकगीत, कृषि-सलाह, समाचार आ नाटकक क्षेत्रीय पहुँच बदलैत अछि। ट्रान्समीटरक भौतिक परिधि, गृहस्थीक रेडियो-सुविधा आ वास्तविक श्रोताक सांस्कृतिक संलग्नता एकहि वस्तु नहि।

प्रसारण-समयक भाषा-वितरण सम्पादकीय शक्ति आ राज्यक सांस्कृतिक मान्यताक मानक बनैत अछि। महिला गायिकाक अभिलेखन वा ग्रामीण लोकवाद्यक रेडियो रूपान्तरण मूल प्रदर्शनक समय, श्रोता आ अवधि बदलि सकैत अछि। अध्याय रेडियोक रोजगार, सांस्कृतिक संरक्षण आ सार्वजनिक नियंत्रणक संयुक्त समीक्षा करैत अछि। प्रमाण-सीमा : १०९.१-१०९.३०।

अध्ययन ११० | चलचित्र, वीडियो आ मुद्रित-ध्वनित प्रदर्शन

एक सए दसम अध्याय चलचित्र इतिहासकें फीचर फिल्मक नामसूचीसँ बेसी व्यापक मानैत अछि। सिनेमाघर, यात्रा-सिनेमा, गीत, कैसेट, विवाह-वीडियो, नाट्य-अभिलेखन, दूरदर्शन, मोबाइल आ डिजिटल मञ्च क्षेत्रीय अभिनय आ प्रेक्षकक सम्बन्ध बदलबैत अछि। पुनः देखल जा सकयवला अभिलेखक सामाजिक जीवन मंचक एकबेरक प्रदर्शनसँ अलग होइत अछि।

कन्यादान आ ममता गावय गीत सम्बन्धी निर्माण, प्रदर्शनी आ प्रचारक विरोधी तिथिसभक स्वतंत्र प्रमाण-परीक्षण आवश्यक अछि। चलचित्रक छायाङ्कन, निर्माण-समाप्ति आ सार्वजनिक विमोचन तीन भिन्न तिथि होइत अछि। चित्रकथा स्थानीय होइतहुँ भाषिक संयोजन बहुभाषिक भऽ सकैत अछि। अध्यायक आलोचनात्मक योगदान माध्यमक आर्थिक आ सांस्कृतिक इतिहास एकसंग पढ़ब अछि। प्रमाण-सीमा : ११०.१-११०.३०।

अध्ययन १११ | समाचारपत्र आ सार्वजनिक विचार-विमर्श

एक सए एगारहम अध्याय समाचारपत्रकेँ घटनाक निष्पक्ष दर्पण नहि, सम्पादन आ चयनद्वारा निर्मित दिनाङ्कित सार्वजनिक संवाद मानैत अछि। साहित्यिक पत्रिका आ समाचारमाध्यमक भेद आरम्भिक मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रमे कठोर नहि छल; भाषा-विवाद, सम्पादकीय, कविता, पाठक-पत्र आ सामाजिक सुधार समान पृष्ठपर आयल।

हिन्दी, उर्दू, नेपाली, अंग्रेजी आ मैथिली पत्रसँ मिथिलाक पाठक अनेक सार्वजनिक जगतमे भाग लैत छथि। समाचारक समयपर प्रकाशन, विज्ञापन, वितरण आ राज्यसँ सम्बन्ध पत्रिकाक प्रभाव बदलैत अछि। संग्रहमे केवल बचल अंक सामाजिक बहसक पूरा दायरा नहि देखबैत; अभिलेखहीन अल्पकालिक पत्रिका सेहो महत्वपूर्ण भऽ सकैत अछि। प्रमाण-सीमा : १११.१-१११.३०।

अध्ययन ११२ | साहित्य अकादेमी आ साहित्यिक मानकक निर्माण

एक सए बारहम अध्याय पुरस्कार-संस्थाकें लिखल साहित्यक बाद निष्क्रिय सम्मान बाँटयवला कार्यालय नहि, बल्कि प्रकाशन, अनुवाद, पाठ्यक्रम, संग्रह आ सार्वजनिक मान्यताक सक्रिय चयन-व्यवस्था मानैत अछि। भाषा सलाहकार मण्डल, निर्णायक समिति, पात्रताक नियम आ वार्षिक नामांकन साहित्यिक 'प्रतिनिधि'क सार्वजनिक छवि बनबैत अछि।

मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कारक १९६६सँ आरम्भ होयवला शृंखला आ संविधानक अनुसूचीमे भाषा सम्मिलनक तिथि अलग राखल जाए। चयन-सूची साहित्यक सम्पूर्ण प्रतिभाक जनगणना नहि अछि; पुरस्कारसँ वंचित साहित्यक अध्ययन सेहो अपेक्षित अछि। लेखक संस्था-संबद्ध विविध स्रोतक गणनात्मक जाँचक प्रश्न उठबैत छथि, मुदा निर्णायक पक्षपातक दावा पुरस्कार-प्रक्रियाक मूल अभिलेख बिना नहि करवाक चाही। प्रमाण-सीमा : ११२.१-११२.३०।

अध्ययन ११३ | स्त्री साहित्यकार आ वैकल्पिक साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र

एक सए तेरहम अध्याय स्त्री साहित्यिक इतिहास पुरस्कारक सूचीसँ नहि, घरक कथा, विवाहगीत, पत्र, स्मृति, रेडियो-वाणी, विद्यालयी लेखन, अनुवाद आ आधुनिक डिजिटल प्रकाशनक विविध संचारमार्गसँ रचैत अछि। नामसहित प्रकाशित रचना आ सामूहिक प्रदर्शनमे बचल स्त्रीस्वरक अभिलेखीय स्थिति अलग अछि। साहित्यिक भौतिक स्रोत पहिचानल बिना नामक अभावकेँ रचनाशीलताक अभाव मानब अनुचित।

महिला-शिक्षाक विस्तार लेखनकेँ प्रकाशन-समाजसँ जोड़लक, मुदा सम्पादकीय चयन आ घरक समय-बँटवारा सार्वजनिक दृश्यता पर प्रभाव डालैत अछि। स्त्रीक रचना-परम्पराक सूची बनबैत काल ग्रन्थ, पत्रिकाक अंक, वास्तविक लेखक-श्रेय आ प्रकाशनतिथि जाँचबाक आवश्यकता अछि। अध्यायक महत्त्व साहित्यिक वैकल्पिक, अवैतनिक आ मौखिक सार्वजनिक क्षेत्रकेँ इतिहासमे स्थान देब अछि।

प्रमाण-सीमा : ११३.१-११३.३०।

अध्ययन ११४ | विदेह आ डिजिटल मैथिली साहित्यक निर्माण

एक सए चौदहम अध्याय विदेहकें केवल वेबसाइटपर छपल रचनाक संग्रह नहि, निश्चित आवधिकता, सम्पादकीय चयन, अभिलेखन आ भाषिक पहुँचक डिजिटल संस्था मानैत अछि। अंक-संख्या, दिनाङ्क, पुरान रचनाक खोज, देवनागरी-तिरहुता लिपि, मोबाइल पठनीयता, श्रव्य सामग्री आ स्थायी लिंक साहित्यिक सार्वजनिक जीवनक वास्तविक संरचना अछि। डिजिटल माध्यम मुद्रणक खर्च घटबैत अछि, मुदा दीर्घकालीन संरक्षण आ तकनीकी देखरेखक नूतन दायित्व उत्पन्न करैत अछि।

ई समीक्षा अपन पत्रिकाक ऐतिहासिक महत्वकें आलोचनासँ मुक्त क्षेत्र नहि मानैत। स्वयं विदेहक अभिलेखद्वारा ओकर कालक्रम, आरम्भक विविध तिथि, अंक-क्रम आ साहित्यिक प्रभाव निश्चय करैत समय बाह्य प्रमाण, बचल फाइल आ समकालीन प्रतिक्रिया अलग जाँचना चाही। केवल वेबसाइटपर फाइल अछि तँ ओहि पाठक स्थायी संरक्षण भेल अछि, एहन निष्कर्ष नहि। प्रमाण-सीमा : ११४.१-११४.३०।

अध्ययन ११५ | डिजिटल अभिलेख आ सांस्कृतिक संरक्षण

एक सए पन्द्रहम अध्याय डिजिटल प्रतिलिपि बनावब आ अभिलेखक दीर्घ संरक्षणकें स्पष्ट रूपसँ अलग करैत अछि। पाण्डुलिपि, पत्रिका, कैसेट, फोटो, घरक कागद आ डिजिटल साहित्यक सुरक्षित प्रतिक लेल स्रोतक पहचान, स्वामित्व, समय, विषय, भाषिक रूप, संरचनागत विवरण आ प्रतिलिपिक गुणवत्ता आवश्यक अछि। केवल स्कैन संकलनक मात्रा शोधयोग्य संग्रहक विश्वसनीयता सुनिश्चित नहि करैत।

हस्तलिखित मूलक स्याही, कागज, मोड़, लेखन-भूल आ अन्तिम टिप्पणी डिजिटल प्रतिक पाछाँ बचल ऐतिहासिक प्रमाण अछि। खोजसुलभ पाठ तैयार करबाक समय लिप्यन्तरण, OCR त्रुटि आ मूल आकृतिक भेद सुरक्षित राखब चाही। संग्रहक चयन स्वयं साहित्यिक मानक बनबैत अछि, अतः अनुपस्थित समुदाय आ स्रोतक अभिलेखन सेहो आवश्यक अछि। प्रमाण-सीमा : ११५.१-११५.३०।

अध्ययन ११६ | युनिकोड, तिरहुता आ तकनीकी मान्यता

एक सए सोलहम अध्याय तिरहुता लिपिक कम्प्यूटरीकरणकेँ सुन्दर अक्षरदृश्य मात्रसँ नहि, खोजयोग्य, विनिमययोग्य, कूटबद्ध पाठसँ जोड़ैत अछि। पुरान फन्टमे लैटिन वा देवनागरी स्थानपर तिरहुता आकृति देखाबब एक यन्त्रपर सही होइतहुँ पाठार्थ आ पुनरुपयोगमे त्रुटि उत्पन्न करि सकैत अछि। युनिकोडसँ वर्णक सार्वजनीन कूट उपलब्ध होइत अछि; सभ पाण्डुलिपिक दृश्य लिपिरूपक पूर्ण प्रतिलिपि नहि बनैत।

लिपि, भाषा आ फन्ट तीन अलग तत्त्व अछि। मैथिली देवनागरीमे सेहो लिखल जा सकैत अछि आ तिरहुता लिपिमे संस्कृतक पाठ सेहो अछि। तकनीकी मान्यताक ऐतिहासिक सफलता शिक्षण, कीबोर्ड, उपलब्ध फन्ट आ अक्षम व्यक्तिक पहुँचपर निर्भर करैत अछि। प्रमाण-सीमा : ११६.१-११६.३०।

अध्ययन ११७ | जनसंख्याक संरचना आ परिवर्तन

एक सए सत्रहम अध्याय जनसंख्याकें आर्थिक संरचनाक आधार मानैत अछि। आयुवर्ग, गृहस्थीक आकार, लिङ्गानुपात, शिक्षा, प्रवास आ नगर-गामक अनुपात श्रम, बाजार आ सार्वजनिक सेवाक माँग बदलैत अछि। मिथिला-वज्जि-अंग एक निश्चित जनगणना जिला नहि, अतः भिन्न जिला अथवा राज्यकें जोड़ैत समय क्षेत्रीय सीमाक स्पष्ट निर्धारण आवश्यक अछि।

भारतक २०११क जनगणना आ नेपालक २०२१क गणना अलग काल आ वर्गीकरणक अभिलेख अछि। प्रस्तावित भारतीय नव गणनाक अधूरी स्थिति वास्तविक पूर्ण आँकड़ा मानि नहि लिखल जाए। जनसंख्याक युवा अनुपात स्वयमेव 'जनसांख्यिक लाभांश' नहि; शिक्षा, स्वास्थ्य आ रोजगारक अवसर साथ देब आवश्यक अछि।

अध्यायक प्रशंसनीय पक्ष परिभाषा-नियन्त्रणक आग्रह अछि। प्रमाण-सीमा :

११७.१-११७.३०।

अध्ययन ११८ | एकैसम शताब्दीमे कृषि

एक सए अठारहम अध्याय ग्रामीण आर्थिक जीवनक केन्द्रमे खेत, पशु, पोखरि, बाग, सिंचाइ आ मौसमी श्रमक अन्तर्सम्बन्ध देखैत अछि। कृषि-आयक कुल अर्थव्यवस्थामे प्रतिशत घटलहुँ भू-उपयोग आ परिवारक जीविकामे ओकर स्थान महत्त्वपूर्ण रहि सकैत अछि। चाउर, गहुँम, मकै, नकदी फसल आ पशुपालनक समिश्रण छोट खेत आ प्रवासक कारण बदलैत अछि।

खेतीक स्वामित्व आ वास्तविक संचालनक क्षेत्र अलग नापबाक चाही। उन्नत बीज, यन्त्र, किरायाक सेवा, खादक मूल्य आ बाढ़िक जोखिम खेतीक लाभ निर्धारित करैत अछि। एकहि राज्यक उत्पादन आँकड़ासँ उत्तर मिथिला, अंग आ सीमापार मधेशक सर्वत्र अवस्था नहिं बताओल जा सकैत। प्रमाण-सीमा : ११८.१-११८.३०।

अध्ययन ११९ | भूमिखण्डन आ ग्रामीण जीवन

एक सए उन्नीसम अध्याय छोट खेत आ टुकड़ा-टुकड़ा खेतक भिन्न समस्या स्पष्ट करैत अछि। एक गृहस्थी थोड़ जमीन एक ठाम रखि सकैत अछि; दोसरक तुलनात्मक पैघ खेत कतेको दूरक टुकड़ामे बाँटल होयत। जमीनक मालिकाना, संचालित खेत, खण्डसभक संख्या आ किसानक सम्पूर्ण आमदनी एकहि माप नहि।

उत्तराधिकार, परिवार-विभाजन, नकद ऋण, बटाइ, सिंचाइयन्त्रक लागत आ भूमिक कागद ग्रामीण जीविकाक वास्तविक लागत बनबैत अछि। घरबारी जमीनक न्यूनतम सुरक्षा आ स्त्रीक नामपर पञ्जीकृत सम्पत्तिक प्रश्न अलग महत्त्व रखैत अछि। २०१५-१६क कृषि गणनाक सीमाकेँ आजुक सम्पूर्ण भू-अवस्थाक स्थिर प्रतिरूप नहि बनाओल जाए। प्रमाण-सीमा : ११९.१-११९.३०।

अध्ययन १२० | प्रवास-निर्भर अर्थव्यवस्था

एक सए बीसम अध्याय 'बहुत मजदूर परदेश जाइत छथि' एतेक पर नहि सकैत । बाहरी आय घरक उपभोग, शिक्षा, निर्माण, ऋण, विवाह आ स्थानीय श्रमबाजारकें जखन ठोस रूपसँ प्रभावित करैत अछि तखन प्रवास-निर्भर आर्थिक संरचना निर्मित होइत अछि । एक गाममे खेती जारी रहितहुँ नकद आय बाहरसँ आबि सकैत अछि; ई स्थानीय अर्थव्यवस्थाक लोप नहि, बहुठाम फैलल गृहस्थ व्यवस्था अछि ।

मौसमी, आवर्ती आ दीर्घावधिक प्रवासक आर्थिक प्रभाव भिन्न होइत अछि । सकल प्रेषित धनक संख्या स्थिर स्थानीय समृद्धिक प्रमाण नहि, किएक तँ प्रवासक लागत आ परिवारक अतिरिक्त देखभालक श्रमो होइत अछि । अध्यायक उपलब्धि ग्राम, शहर आ परदेशकें एक आर्थिक इकाईक परस्पर सम्बन्धमे पढ़ब अछि । प्रमाण-सीमा : १२०.१-१२०.३० ।

अध्ययन १२१ | प्रेषित धन, उपभोग आ आवास

एक सए एकैसम अध्याय प्रवासक कमाइ घरमे पहुँचलाक बाद ओकर उपयोगक इतिहास लिखैत अछि। अन्न, औषधि, विद्यालय, कर्जक किशत, ईंट, मकान आ भविष्यात् संकट लेल बचत एकहि प्राप्त धनक अनेक उपयोग अछि। 'उपभोग बनाम निवेश'क कठोर विभाजन गरीब परिवारक खाद्यसुरक्षा आ बीमारीक खर्चक सामाजिक मूल्य नकारि सकैत अछि।

भारत भीतरक कमाइ आ खाड़ी देशसँ प्राप्त प्रेषणक आवृत्ति, स्थानान्तरण-लागत आ ऋण-परिशोधनक स्थिति अलग अछि। बिहारक पुरान घरेलू सर्वेक्षण आ नेपालक नवीन जीवनस्तर सर्वेक्षणकें एकही समयक मापन मानब नहि चाही। ऊँच मकान बढ़ल तँ सामाजिक ऋण घटल, एहन अनुमान उपयुक्त नहि। प्रमाण-सीमा :

१२१.१-१२१.३०।

अध्ययन १२२ | शिक्षा-बाजार आ कोचिङ्ग प्रवास

एक सए बाइसम अध्याय शिक्षा परिवारक सामाजिक निवेश होयबाक संग शहरक सक्रिय सेवा-बाजार सेहो अछि—एहि द्वन्द्वक समीक्षा करैत अछि। विद्यालय, निजी पढाई, प्रवेश परीक्षा, छात्रावास, पुस्तक, आवागमन, डिजिटल सामग्री आ बारम्बार परीक्षा देबाक खर्च गामसँ जिला-शहर आ बाहरक केन्द्रसभ धरि धनक प्रवाह बनबैत अछि।

प्रमाणपत्रक आस रोजगारक वास्तविक उपलब्धतासँ मेल नहि खा सकैत; परीक्षाक अनिश्चितता घरक बचत आ छात्रक समयपर जोखिम रखैत अछि। दरभंगा-मुजफ्फरपुर-भागलपुरक शिक्षा-बाजारक महत्त्व स्थानीय आवास, भोजनालय, मुद्रण आ यातायातसँ जुड़ल अछि। स्कूलनामाङ्कन, शिक्षणक गुणवत्ता आ प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाक सफलता अलग मापन अछि। प्रमाण-सीमा : १२२.१-१२२.३०।

अध्ययन १२३ | स्वास्थ्यक अर्थव्यवस्था

एक सए तेइसम अध्याय स्वास्थ्यकें बाजारमे बिकैत उपचारमात्र नहि, कल्याण, श्रम, सार्वजनिक संस्थान आ गृहस्थीक आर्थिक निर्णयक संयुक्त प्रणाली मानैत अछि। आशा कार्यकर्ता, उपस्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, जिला-अस्पताल, चिकित्सा महाविद्यालय, निजी जांचकेन्द्र आ औषधि दुकानक अर्थव्यवस्था अलग स्तरक स्वास्थ्य-सञ्जाल बनबैत अछि।

रोगीक यात्रा, औषधि, जाँच आ देखभालमे लागल समय घरक आर्थिक संकट बढ़ा सकैत अछि। स्वास्थ्यबीमा अथवा सरकारी योजना दर्ताक संख्या वास्तविक नगद-बाह्य खर्च अथवा उपचारक गुणवत्ता सिद्ध नहि करैत। दूरस्थ बाढ़िप्रभावित ग्रामसँ विशेषज्ञ चिकित्सालय धरि पहुँच समयमे मापबाक चाही। अध्यायक मुख्य उपलब्धि स्वास्थ्यक सुविधा आ आर्थिक असुरक्षाक सम्बन्ध स्पष्ट करब अछि। प्रमाण-सीमा : १२३.१-१२३.३०।

अध्ययन १२४ | सड़क, राजमार्ग, हवाई अड्डा आ सम्पर्क

एक सए चौबीसम अध्याय दूरीक आर्थिक अर्थ मापवाक आग्रह करैत अछि। गामसँ मुख्य सड़क, मुख्य सड़कसँ पुल, पुलसँ बाजार आ विमानतलसँ ग्रामीण अन्तिम यात्रा—सम्पूर्ण मार्ग नहि देखल जाए तखन विशाल नया पुलक प्रभाव अतिशयोक्तिपूर्ण बनि सकैत अछि। कोसी-गङ्गाक पारक संरचना, एनएच-२७ आ एनएच-३१ जकाँ मार्ग क्षेत्रीय व्यापारक सम्भावना बदलैत अछि।

पुलक घोषित उद्घाटन, पूर्ण यातायातक आरम्भ आ वर्षभरि भरोसेमन्द उपयोगक तिथि भिन्न होयब सम्भव अछि। सड़क-यातायातक समय घटला पर ग्रामीण बाजार, उपचार, विद्यालय आ जमीनक मूल्य कतेक बदलल, ई परिणामस्वरूप जाँच आवश्यक अछि। केवल निर्माण-लम्बाइ विकासक परिणाम नहि। प्रमाण-सीमा : १२४.१-१२४.३०।

अध्ययन १२५ | मोबाइल, डिजिटल भुगतान आ मञ्च-अर्थव्यवस्था

एक सए पचीसम अध्याय मोबाइलकें फोन, पहचान, बैंक, ग्राहक-सेवा, पाठशाला आ श्रम-बाजारक बहुप्रयोगी साधन मानैत अछि। यूपीआई आ क्यूआर भुगतानक प्रसार छोट दुकानदारक लेनदेनक लागत कम करैत अछि, मुदा नकद, बही, साझा फोन आ सहायता-आधारित बैंक सेवा एकसंग चलैत अछि। डिजिटल प्रयोगक पहुँच इन्टरनेट संकेत, बिजली, साक्षरता, यन्त्रक स्वामित्व आ सुरक्षा पर निर्भर अछि।

खाताक सक्रिय संख्या आ वास्तविक उपयोगकर्ता अलग मापन अछि। धोखाधड़ी, उपकरण-विफलता, पासवर्ड आ भाषाक अवरोध नूतन निर्भरता बनबैत अछि। स्थानीय दुकानदारक 'डिजिटल' कहायल स्थितिसँ स्वतः वित्तीय स्वतंत्रता सिद्ध नहि होइत अछि। अध्यायक आलोचनात्मक दृष्टि तकनीकक सुविधा आ नव बहिष्करणक संयुक्त परीक्षण अछि। प्रमाण-सीमा : १२५.१-१२५.३०।

अध्ययन १२६ | पर्यटन, तीर्थ आ सेवा-अर्थव्यवस्था

एक सए छब्बीसम अध्याय तीर्थयात्री, घरेलू आगन्तुक, होटल-ग्राहक आ सांस्कृतिक पर्यटकक व्यवहारकें परस्पर जुड़ल, मुदा एकरूप नहि मानैत अछि। जनकपुर, वैशाली, मन्दार, विक्रमशिला आ मिथिलाक अनेक स्थलपर यात्रा, भोजन, आवास, स्थानीय उत्पाद आ अनुष्ठान-सेवा सामूहिक आर्थिक अवसर उत्पन्न करैत अछि।

सरकारी 'भ्रमण' आँकड़ामे एक व्यक्ति बारम्बार गनल जा सकैत छथि, तकरा अलग विशिष्ट पर्यटक-संख्या नहि कहब। जँ उपलब्ध सरकारी योजनाक घोषित लागत आ वर्तमान सेवा-व्यवहारक तुलना होए, तँ वास्तविक स्थानीय रोजगार, कारीगरक बिक्री आ पर्यावरणीय बोझक परीक्षण सम्भव अछि। पवित्र अनुभवकें केवल उपभोगमे घटेबाक बदला ओकर सांस्कृतिक सामाजिक अर्थ स्वीकारब अध्यायक शक्ति अछि। प्रमाण-सीमा : १२६.१-१२६.३०।

अध्ययन १२७ | वैश्विक बाजारमे मिथिला चित्रकला

एक सए सत्ताइसम अध्याय वैश्विक बाजारकें एक समान मूल्यवला अन्तरराष्ट्रीय केन्द्र नहि मानैत। कलाकारसँ प्रत्यक्ष खरीद, स्थानीय व्यापारी, पर्यटन दुकान, राज्य इम्पोरियम, गैर-लाभकारी प्रदर्शनी, गैलरी, संग्रहालय आ डिजिटल बिक्री अलग मूल्य-निर्धारण आ प्रतिष्ठाक स्तर अछि। घरेलू अनुष्ठानिक कला पोर्टेबल चित्रमे परिवर्तित भेला पर लेखकत्व, स्वाक्षर आ भुगतानक तरीका बदलैत अछि।

जातिगत शैलीक बाजारू पहचान कलाकारक अभिव्यक्तिक स्वतन्त्रता पर सीमा लगा सकैत अछि। विदेशमे प्रदर्शनी आ स्थानीय कलाकारक आयक समान वृद्धि सिद्ध नहि। सौदाक मूल्य, सामग्रीक लागत, मध्यस्थक हिस्सा आ कलाकारक निर्णय-अधिकार जाँचना अपेक्षित अछि। अध्यायक उल्लेखनीय पक्ष चित्रकलाक इतिहासकें श्रम आ स्वामित्वक आर्थिक इतिहास बनब अछि। प्रमाण-सीमा :

१२७.१-१२७.३०।

अध्ययन १२८ | भौगोलिक सङ्केत, धरोहर-ब्राण्ड आ बौद्धिक सम्पत्ति

एक सए अट्टाइसम अध्याय 'धरोहर'क विभिन्न विधिक अर्थ पृथक करैत अछि। भौगोलिक सङ्केत विशेष उत्पादक निर्दिष्ट स्थान-सम्बद्ध नामक कानूनी संरक्षण अछि; प्रतिलिप्यधिकार मूल मौलिक अभिव्यक्ति पर लागू होइत अछि; व्यापार-चिह्न व्यवसायिक पहिचानक अलग साधन अछि। मिथिला चित्रकलाक जीआइ निबन्धनसँ सम्पूर्ण सांस्कृतिक परम्पराक एक व्यक्ति वा संस्था द्वारा स्वामित्व स्वतः उत्पन्न नहि होइत।

पञ्जीकृत धारक, अधिकृत उपयोगकर्ता, नवीकरणक कानूनी अवस्था आ उत्पादकक प्रत्यक्ष लाभ अलग जाँचबाक चाही। मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोल आ कानूनमे निश्चित भौगोलिक सीमाक अन्तर क्षेत्रीय कलाकारक अधिकार पर प्रश्न उठबैत अछि। धरोहर-संरक्षण आ बाजार-प्रचार कतेक सहायक अछि, ओकर मापन विपणन आ पारम्परिक ज्ञानक वास्तविक संरक्षणसँ करब चाही। प्रमाण-सीमा : १२८.१-१२८.३०।

अध्ययन १२९ | जलवायु परिवर्तन आ कृषिक जोखिम

एक सए उनतीसम अध्याय वैश्विक तापमानक औसतकेँ सीधे खेतक क्षतिसँ बराबर नहि करैत। धान रोपनाक समय वर्षा टारब, फसल फुलैत बेर लू, सिंचाइक पानि घटब, चारा नष्ट होयब, पम्पक लागत अथवा बजारक दाम बदलब—ई माध्यमक रास्ते जलवायुक जोखिम गृहस्थी धरि पहुँचैत अछि। हानि केवल मौसमसँ नहि, भूमि, ऋण, सिंचाइ, बीज, भाड़ा आ सार्वजनिक सहायताक असमानतासँ सेहो बनैत अछि।

मौसमक एक असाधारण वर्षक घटना, लम्ब कालक प्रवृत्ति आ मानवीय जलवायु परिवर्तनसँ सम्बन्धित वैज्ञानिक ‘आरोपण’ तीन अलग अनुमान अछि। अध्याय २०२५क ऊष्मा-संबंधी मूल्याङ्कन सहित आधुनिक आँकड़ा उद्धृत करैत अछि; एहि दाबीसभक तिथि आ मूल मौसमविज्ञान रिपोर्ट अलग सत्यापन चाही। उपयोगी निष्कर्ष : जोखिमकेँ कृषि परिवारक निर्णय आ संस्थागत सामर्थ्यक स्तर पर मापब। प्रमाण-सीमा : १२९.१-१२९.३०।

अध्ययन १३० | बाढ़ि अनुकूलन आ लचीलापन

एक सए तीसम अध्याय बाढ़िक संग रहबाक क्षमताकेँ मृत्यु, स्थायी निर्धनता आ सार्वजनिक सेवाक टूटनक सामान्यीकरण नहि मानैत। अचानक पहाड़ी बाढ़ि, दीर्घ नदीबाढ़ि, नालीक अवरोध आ स्थायी जलजमाव अलग खतरा अछि; एकहि तटबन्ध-नीति सभ स्थितिमे समान समाधान नहि। नेपाल-बिहारक साझा नदीघाटीमे निर्णय राष्ट्रीय सीमासँ अधिक व्यापक भौतिक सम्बन्ध रखैत अछि। २००८क कोसी तटबन्ध-टूटब संस्थागत चेतावनी, समयपर निकासी, सुरक्षित आवास, पुनर्वास आ देखरेखक परीक्षणक अवसर अछि। उत्तर बिहारक बाढ़ि-संभावित क्षेत्रक घोषित प्रतिशत 'कखनहुँ जोखिम' आ 'वर्षविशेष डूबल क्षेत्र'क अलग परिभाषा रखैत अछि। जलप्रवाह संग स्त्री, बालक, वृद्ध, पशुधन, विद्यालय आ भूमिहीन परिवारक दृष्टिसँ अनुकूलनक सफलता नापबाक चाही। प्रमाण-सीमा : १३०.१-१३०.३०।

अध्ययन १३१ | सङ्घीय व्यवस्थाक बाद भारत-नेपाल सीमाक अर्थव्यवस्था

एक सए एकतीसम अध्याय नेपालक २०१५क संविधानक बाद सीमा-अर्थव्यवस्थामे केन्द्र, प्रदेश आ स्थानीय शासनक अधिकार-विभाजन स्पष्ट करैत अछि। भन्सार, अन्तरराष्ट्रीय व्यापार आ सीमा-सम्बन्धी अधिकार संघीय रहैत अछि; स्थानीय निकाय सड़क, हाट, कृषि सेवा, पर्यटन, व्यवसाय-दर्ता आ नगर सुविधाद्वारा सीमाक दैनिक व्यापार पर प्रभाव डालैत अछि।

मधेश प्रदेशक शासन-विस्तार सँ भारत-नेपालक राजनीतिक सीमा नहिं बदलल, मुदा सेवा-उपलब्धता आ स्थानीय बजटक निर्णयक स्थान बदलल। एकहि पारिवारिक कारोबार दू भिन्न मुद्रा, कर-नियम आ दस्तावेजक भीतर चलैत अछि। सीमा-सम्बन्धी अधिकारक दाबीकेँ संविधानक वास्तविक अनुसूचीसँ जाँचब आवश्यक अछि। अध्यायक उपयोगी सूत्र : साझा आर्थिक क्षेत्र, असमान शासन-संरचना। प्रमाण-सीमा : १३१.१-१३१.३०।

अध्ययन १३२ | परिवारक आधुनिक रूपान्तरण

एक सए बत्तीसम अध्याय संयुक्त परिवारक अनिवार्य लोप आ एकल परिवारक सार्वभौमिक विजयक सरल कथा अस्वीकार करैत अछि। एक घरमे कतेक व्यक्ति रहैत छथि आ कतेक परिवार संयुक्त भूमि, ऋण, देखभाल, पूजा आ प्रवासी धन सँ जुड़ल छथि—ई दू अलग प्रश्न अछि। प्रवासी सदस्य वर्षक अधिकांश समय बाहर रहितहुँ घरेलू निर्णयक केन्द्रमे रहि सकैत छथि।

स्त्रीक वास्तविक अर्थ-प्रबन्ध आ कागदपर 'मुखिया'क नाम मेल नहि खा सकैत। भारतक २०११क बाद पूर्ण जनगणनाक अन्तराल समय-सम्बन्धी परिकल्पनाक सीमा बनैत अछि। परिवारक रूपान्तरणक आलोचनामे आवासक आकार, विवाहक समय, धन-हस्तान्तरण, वृद्ध-देखभाल आ स्त्रीक श्रमक संयुक्त प्रमाण आवश्यक अछि।
प्रमाण-सीमा : १३२.१-१३२.३०।

अध्ययन १३३ | बदलैत विवाह-व्यवहार

एक सए तेतीसम अध्याय विवाहकें घरक गठजोड़, कानूनी सम्बन्ध, व्यक्तिगत सहमति आ सामाजिक संसाधनक संस्था मानैत अछि। विवाहक आयु बढ़ब, विद्यालयी शिक्षा, जीवनसाथी खोजबाक डिजिटल माध्यम, प्रवासी वर, पञ्जी-संरक्षण आ सार्वजनिक खर्चक वृद्धि एकसंग भऽ सकैत अछि। आधुनिक मञ्चपर खोजल साथी अनिवार्य रूपसँ जाति-सीमा तोड़ैत नहि।

बालविवाह सम्बन्धी सर्वेक्षणक तिथि, कानूनी न्यूनतम आयु आ वास्तविक स्थानीय पालन अलग प्रमाण अछि। दहेजक व्यावसायिक माँग, स्त्रीधन आ विवाह-सम्बद्ध उपहारक ऐतिहासिक अर्थ पृथक् राखबाक चाही। सहमति बढ़ल अछि अथवा परिवारक नियन्त्रण बदलल, तकर निष्कर्ष लेल ग्रामीण-नगरीय आ जाति-वर्ग आधारित अनुभव आवश्यक अछि। प्रमाण-सीमा : १३३.१-१३३.३०।

अध्ययन १३४ | स्त्रीशिक्षा आ रोजगारक असमान संक्रमण

एक सए चौतीसम अध्याय बालिका-शिक्षाक वृद्धि आ सुरक्षित वेतनयुक्त रोजगारमे स्त्रीक असमान उपस्थितिक बीच विरोधाभास विश्लेषित करैत अछि। विद्यालयमे प्रवेश, परीक्षा पास करब, महाविद्यालय धरि पहुँच, परिवहन, विवाह, घरक देखभाल आ स्थानीय रोजगारक उपलब्धता अलग चरण अछि। शिक्षा बढलाक बाद स्त्रीक आर्थिक स्वाधीनता स्वतः सुनिश्चित नहि।

सार्वजनिक नौकरीक आकांक्षा आ निजी वेतनक विकल्प, सुरक्षित आवागमन, डिजिटल दक्षता आ वर्ग-जातिक असर परस्पर जुड़ल अछि। नामाङ्कनक उच्च अनुपात सँ कामक शर्त अथवा आमदनीक बँटवारा नहि नापल जा सकैत। क्षेत्रीय भारत-नेपाल तुलना लेल राजकीय रोजगार मापनक भिन्न परिभाषा ध्यानमे राखब आवश्यक अछि। अध्यायक योगदान अवसरक प्रत्येक चरणक अवरोध पहिचानब अछि। प्रमाण-सीमा : १३४.१-१३४.३०।

अध्ययन १३५ | युवासंस्कृति : शिक्षा, श्रम आ डिजिटल संसार

एक सए पैतीसम अध्याय 'युवा'केँ एकरूप उमेर-समूह नहि मानैत । दरभंगाक छात्र, सहर्साक प्रवासी श्रमिक, पटनाक परीक्षा-अभ्यर्थी, भागलपुरक डिजिटल कर्मचारी आ मधेशक बाहरी काम करयवला युवक-युवती अलग संसाधन आ दायित्व रखैत छथि । विद्यालय, मोबाइल, सामाजिक मञ्च, भाषा, फैशन आ जीविकाक अवसर एहि पहिचानकेँ बनबैत अछि ।

नव माध्यममे सक्रिय होयबाक समय आ डिजिटल प्रभावशाली व्यक्तिक अवसर असमान वितरित अछि । परिवारक अपेक्षा, प्रतियोगी परीक्षा, बेरोजगारी आ प्रवास युवासंस्कृतिक अनुभव पर प्रभाव डालैत अछि । युवासभकेँ केवल उपभोगकर्ता अथवा परिवर्तनक स्वचालित अग्रदूत मानब अध्यायक पद्धतिक विपरीत होयत ।
प्रमाण-सीमा : १३५.१-१३५.३० ।

अध्ययन १३६ | सामाजिक मञ्च आ भाषाक सार्वजनिक प्रयोग

एक सए छत्तीसम अध्याय सामाजिक मञ्चकेँ केवल सन्देश भेजबाक तकनीक नहि, भाषाक दृश्यता, लिपि, उच्चारण आ सार्वजनिक बहसक संस्था मानैत अछि। मैसेज, वीडियो, गीत, लघु प्रदर्शन, स्वचालित लिप्यन्तरण आ कृत्रिम बुद्धि-सहायता लिखबाक सुविधा बदलैत अछि। मिथिलामे देवनागरी, तिरहुता, रोमन लिप्यन्तरण आ स्थानीय बोलचालक डिजिटल प्रयोगक अवसर समान नहि। अंगिका, बज्जिका आ मैथिली अलग सांस्कृतिक-संस्थागत पहिचान रखैत अछि; मञ्चक अल्गोरिद्मिक दृश्यता भाषिक लोकप्रियताक पूर्ण दर्पण नहि। सार्वजनिक रूपमे अधिक देखाइत उच्चारण सामाजिक मूल्यांकन बढ़ा सकैत अछि, मुदा स्थानीय बोलीक वैविध्य समाप्त भेल, एहन निष्कर्ष अनुचित। मूलपाठक तिथि-संबद्ध उदाहरण आ तकनीकी मानक स्वतंत्र रूपसँ जाँचना आवश्यक अछि। प्रमाण-सीमा : १३६.१-१३६.३०।

अध्ययन १३७ | धार्मिक परिवर्तन आ सार्वजनिक अनुष्ठान

एक सए सैंतीसम अध्याय जनगणनामे धर्मक नाम आ समाजमे धार्मिक अनुष्ठानक विस्तारकेँ अलग-अलग मापन मानैत अछि। तीर्थ, जुलूस, सामूहिक व्रत, महोत्सव, दरगाह आ सार्वजनिक पूजा सङ्क, सुरक्षा, बाजार, मञ्च आ प्रसारणक नूतन साधनसँ अधिक दृश्य भऽ सकैत अछि; एहि दृश्यता सँ अनिवार्य रूपसँ अनुयायीक प्रतिशत परिवर्तन सिद्ध नहि होइत।

लोकसहभागिता आ संस्था-सभ्यता बीच भिन्नता जरूरी अछि। स्त्रीक श्रम, विक्रेताक व्यवसाय, सार्वजनिक स्थलपर नियन्त्रण आ प्रशासनिक नियमन धार्मिक अनुष्ठानक सामाजिक राजनीति बनबैत अछि। आधुनिक परम्पराक विशाल आकारकेँ प्राचीन समाजक स्थिर अवस्था मानव कालभ्रान्ति होयत। प्रमाण-सीमा :

१३७.१-१३७.३०।

अध्ययन १३८ | वर्तमान समाजमे जाति

एक सए अइतीसम अध्याय वर्तमान जाति सम्बन्धकेँ न समाप्त मानैत अछि न सभ सामाजिक घटनाक एकमात्र कारण। विवाह, जमीन, विद्यालय, रोजगार, महल्ला, पंचायत आ राजकीय योजनामे जातिगत सम्बन्ध भिन्न तीव्रतासँ उपस्थित अछि। प्रवास, नगर, शिक्षा, डिजिटल समूह आ संवैधानिक संरक्षण परिवर्तनक अवसर दैतहुँ नव रूपमे श्रेणीकरणक सम्भावना रखैत अछि।

जातिनामक आधारपर सामाजिक वर्ग अथवा राजनीतिक मतक सुनिश्चित अनुमान उचित नहि। आर्थिक वर्ग, लिङ्ग, संस्थागत पहुँच आ क्षेत्रीय भिन्नता साथ नापल जाए तखन वास्तविक सामाजिक शक्ति बुझाईत अछि। अध्यायक महत्व सामाजिक श्रेणीकरणक इतिहासक आधुनिक पुनर्संयोजन खोलब अछि। प्रमाण-सीमा : १३८.१-१३८.३०।

अध्ययन १३९ | मधेश, सङ्घीयता आ सामाजिक नागरिकता

एक सए उनचालीसम अध्याय नेपालक संघीय व्यवस्था सामाजिक नागरिकतामे कोना अनूदित होइत अछि, एहि प्रश्नक अध्ययन करैत अछि। २०१५क संविधानक बाद मधेश प्रदेश आ स्थानीय निकाय अस्तित्वमे आयल, मुदा प्रशासनिक कार्यालयक निर्माण मात्र नागरिक अधिकारक निर्वाह नहि। जन्म-दत्ता, नागरिकता-पत्र, विद्यालयक भाषा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा आ स्थानीय बजटक पहुँच असल परीक्षा अछि।

सप्तरीसँ पर्सा धरि आठ जिलाक प्रदेशीय संरचना आ जनकपुरधामक राजधानीक स्थिति संस्थागत रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। किन्तु समान संवैधानिक अधिकार भिन्न समुदाय आ लिंगक लोक धरि असमान ढंगसँ पहुँचि सकैत अछि। राजकीय प्रतिनिधित्वक संख्याक संग प्रशासनिक निर्णयक सामाजिक परिणाम देखनाय आवश्यक अछि। प्रमाण-सीमा : १३९.१-१३९.३०।

अध्ययन १४० | वर्तमान सार्वजनिक जीवनमे मैथिली, अंगिका आ बज्जिका

एक सए चालीसम अध्याय तीनू भाषाक आधुनिक सार्वजनिक स्थिति समान मानि चलबाक बदला संवैधानिक, प्रशासनिक, शिक्षकीय आ डिजिटल स्तर पर तुलना करैत अछि। मैथिली भारतक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित अछि; अंगिका आ बज्जिकाक भारतीय संस्थागत स्थान अलग अछि। नेपालक मातृभाषा-गणना आ प्रशासनिक प्रयोग सेहो भिन्न राजनीतिक प्रणालीक हिस्सा अछि।

भाषा-दाबीकेँ केवल भाषावैज्ञानिक वंशक्रम अथवा एक जनगणनाक संख्या सँ निर्धारित नहि कएल जाए। घरक व्यवहार, विद्यालयक पाठ्य, रेडियो, अनुवाद, लिपि-सुविधा आ लेखक-पाठकक वास्तविक अवसर भाषाक सार्वजनिक अधिकार बनबैत अछि। भिन्न सामाजिक प्रतिष्ठाक अध्ययनमे ककरो भाषा 'अशुद्ध' कहब वैज्ञानिक विकल्प नहि। प्रमाण-सीमा : १४०.१-१४०.३०।

अध्ययन १४१ | सांस्कृतिक धरोहर आ जीवन्त संस्कृति

एक सए एकचालीसम अध्याय धरोहरकें अतीतक जड़ वस्तु आ जीवन्त संस्कृतिकें पूर्ण नव वस्तु कहबाक विरोध करैत अछि। पुरान गीत, चित्रकला, बोली, रसोई, संस्कार आ तीर्थ एकरा बारम्बार करयवला समुदाय द्वारा जीवित रहैत अछि। संग्रहालय, अकादमी, सरकारी मान्यता आ पर्यटन विभाग कोनो रूपकें संरक्षित करैत समय चयन, स्थिरीकरण आ सार्वजनिक मानक बनवैत अछि।

चित्रकला अथवा पञ्जीकें 'प्रामाणिक' रूपक एक फोटोमे रोकि देलासँ नवीन प्रयोग आ सामाजिक परिवर्तनेक इतिहासक अवहेलना भऽ सकैत अछि। धरोहरक संरक्षणमे वास्तविक कलाकार, गायक, पञ्जीकार आ भाषा-समुदायक अधिकार एवं श्रमक मूल्य देखनाय जरूरी अछि। अध्यायक सिद्धान्त अपन जीवित सन्दर्भमे परिवर्तित परम्पराकें पहिचानब अछि। प्रमाण-सीमा : १४१.१-१४१.३०।

अध्ययन १४२ | क्षेत्रीय सांस्कृतिक अर्थव्यवस्थाक भविष्य

एक सए बयालीसम अध्याय सांस्कृतिक भविष्यकेँ एक बाजार-पूर्वानुमान नहि, आजीविका आ सार्वजनिक मूल्य उत्पन्न करबाक संस्थागत सम्भावना मानैत अछि। चित्रकला, रेशम, पुस्तक, नाटक, संगीत, अभिलेख, पर्यटन, भाषा-तकनीक आ डिजिटल रचना अलग लागत, बाजार आ अधिकारक शृंखला अछि। 'मिथिला-वज्जि-अंग'क एक आधिकारिक सांख्यिक सीमा नहि, तँ राष्ट्रीय उत्पादन-सङ्ख्याकेँ सीधे क्षेत्रीय आय मानब नहि चाही।

कलाकारक पारिश्रमिक, डिजिटल बिक्रीक मध्यस्थ, प्रकाशनक स्थायित्व, प्रशिक्षण, संग्रहालय आ लघु उद्यमक नीतिक वास्तविक मूल्यांकन आवश्यक अछि। सांस्कृतिक बजार बढ़ब आ समुदायकेँ लाभ भेटब स्वतः एक घटना नहि। अध्यायक उपयोगिता क्षेत्रीय सांस्कृतिक सामर्थ्यकेँ श्रम, ज्ञान आ शासनक समेकित अर्थव्यवस्थामे देखब अछि। प्रमाण-सीमा : १४२.१-१४२.३०।

अध्ययन १४३ | सामाजिक परिवर्तनक दीर्घकालीन संरचना

एक सए तिरतालीसम अध्याय सम्पूर्ण ग्रन्थक व्यापक कालखंडसभकेँ जोड़बाक प्रयास करैत अछि। नदी, कृषिभूमि, बस्ती, नातेदारी, भाषा आ तीर्थ दीर्घ काल धरि उपस्थित रहि सकैत अछि, मुदा कर-विधि, श्रम, विवाहक श्रेणी, राज्यसीमा आ बाजारक संस्था बारम्बार बदलैत अछि। दीर्घकालीन इतिहासक अर्थ परिवर्तनकेँ मेटाकऽ कालातीत एकरूपता बनाओब नहि।

एक सामाजिक प्रथा आइ देखाइत अछि तँ ओकर वर्तमान विधि वैदिक कालसँ चलि रहल अछि—ई निष्कर्ष अलग पाठमूलक प्रमाण माँगैत अछि। अध्यायक महत्त्व निरन्तरता स्वयं कोना निर्मित होइत अछि, एहि ऐतिहासिक प्रश्नकेँ केन्द्रमे राखब अछि। प्रमाण-सीमा : १४३.१-१४३.३०।

अध्ययन १४४ | आत्मनिर्वाहसँ बाजारक सघन सम्बन्ध धरि

एक सए चवालीसम अध्याय आत्मनिर्भर खेती आ बजारकेँ क्रमशः समाप्त-आरम्भ होयवाला दू अलग युग नहि मानैत। घरक अनाज, परस्पर श्रम, हाट, वेतन, प्रवास, खेतीक ठेका आ प्रेषित धन एकहि समाजमे सहअस्तित्व राखैत अछि। बाजारक सम्पर्क बढ़ला पर उत्पादनक अधिक विकल्प आ मूल्य-सूचना आबैत अछि, संगहि दूरक दाम-घटक प्रभाव स्थानीय गृहस्थी धरि पहुँचैत अछि।

गङ्गा व्यापार, औपनिवेशिक बस्तु-विनिमय, रेल, राजकीय खरीद, डिजिटल भुगतान आ आधुनिक प्लेटफॉर्म लम्ब इतिहासक अलग चरण अछि। आजुक बाजार अर्थव्यवस्थामे स्वयं उत्पादित अन्नक हिस्सा बचल रहब 'पिछड़ापन'क सीधा माप नहि। आलोचनात्मक उपलब्धि बहुविध जीवन-रणनीतिक ऐतिहासिक सम्बन्ध प्रस्तुत करब अछि। प्रमाण-सीमा : १४४.१-१४४.३०।

अध्ययन १४५ | गृहस्थी, जाति, वर्ग आ लिंगक दीर्घकालीन अन्तर्सम्बन्ध

एक सए पैतालीसम अध्याय सामाजिक सम्बन्धकें चारि अलग-अलमारीमे नहि बाँधैत। भूमिक स्वामित्व, विवाह, श्रम, देखभाल, शिक्षा, प्रतिष्ठा आ अधिकार गृहस्थी, जाति, वर्ग आ लिंगक परस्पर सम्बन्धसँ निर्धारित होइत अछि। लेकिन एहि संस्थासभक स्वरूप प्राचीन कालसँ आज धरि एकहि नहि रहल; सम्पत्ति, प्रवास, विधि, प्रशासन आ विद्यालयक प्रसार ओकरा बदलैत रहल।

‘परम्परागत समाज’क स्थिर युग तथा ‘आधुनिक समाज’क समान स्वतन्त्रता—दूनू रूपक अपर्याप्त अछि। कृषक गृहस्थीमे स्त्रीक श्रम, दलितक भूमि-अधिकार आ शिक्षित पदाधिकारक स्थान क्षेत्र-समय अनुसार तुलनात्मक साक्ष्य चाहैत अछि। अध्यायक ऐतिहासिक उपलब्धि सामाजिक असमानताक अनेक आधार एकसंग विवेचित करब अछि। प्रमाण-सीमा : १४५.१-१४५.३०।

अध्ययन १४६ | नदीय पारिस्थितिकी आ आर्थिक इतिहास

एक सए छियालीसम अध्याय नदीकें इतिहासक पृष्ठभूमि नहि, सक्रिय भौतिक-आर्थिक कारक मानैत अछि। कोसी, गण्डक, कमला, बागमती आ गङ्गा जल, गाद, माछ, खेत, इब, कटाव, नयी भूमि, बाजार आ आवागमनक रास्ता बनबैत आ बिगाड़ैत अछि। नदीक पुरान पाट बदललासँ बस्ती, पुलक दिशा, भूमिक मूल्य आ पानि-सञ्चयक परिस्थिति बदलैत अछि।

‘प्राकृतिक नदी’ केवल लाभकारी आ ‘बाँधल नदी’ केवल हानिकारक—ई दू ध्रुव इतिहासक वास्तविक जटिलता नहि बुझबैत। तटबन्ध, नहर, घाट आ जलनिकासी के लाभकर्ता/हानिग्रस्तक क्षेत्रगत तुलना अपेक्षित अछि। पर्यावरणक महत्त्व मानितहुँ सामाजिक निर्धारणक सभ काज केवल मौसमकें सौंपब नहि चाही।
प्रमाण-सीमा : १४६.१-१४६.३०।

अध्ययन १४७ | भाषा सामाजिक आधारभूत संरचनाक रूपमे

एक सए सैंतालीसम अध्याय भाषाकेँ केवल पहिचान आ साहित्यक सामग्री नहि, जीवनक व्यवहार सम्भव करयवला आधारभूत संरचना मानैत अछि। विद्यालयक पाठ, सरकारी आवेदन, स्वास्थ्यक निर्देश, मजदूरीक सौदा, न्यायालयक सूचना, पञ्जीक पाठ आ डिजिटल खोज भाषिक समझ पर निर्भर अछि। सडक भौतिक दूरी घटबैत अछि, भाषा-अवरोध सामाजिक दूरी बढ़ा सकैत अछि।

शास्त्रीय संस्कृत, लोकमैथिली, अंगिका, बज्जिका, फारसी कार्यालयी इतिहास आ आधुनिक डिजिटल लिपि समाजक अलग संचार-संस्था अछि। भाषा-मान्यता घोषणाक बाद विद्यालयी पुस्तक, अधिकारीक दक्षता आ तिरहुता-कूटनक उपकरण नहि पहुँचल तँ व्यावहारिक अधिकार अधूरा रहि सकैत अछि। अध्यायक उपलब्धि भाषाकेँ सामाजिक पहुँचक ठोस अर्थव्यवस्थासँ जोड़ब अछि। प्रमाण-सीमा :

१४७.१-१४७.३०।

अध्ययन १४८ | भारत-नेपाल : साझा संवादक्षेत्र, भिन्न राजनीतिक
अर्थव्यवस्था

एक सए अडतालीसम अध्याय सीमाक दू विपरीत सरलीकरणक विरोध करैत अछि: भारत आ नेपाल पूर्ण विच्छिन्न समाज अछि; अथवा साझा मिथिला होयबाक कारण दुनूक अर्थव्यवस्था एकहि शासन-व्यवस्था अछि। वास्तविकता ई अछि जे राजकीय मुद्रा, कर, न्याय, नागरिकता आ कल्याण-नियम अलग अछि, जखन नदी, विवाह, श्रम, भक्ति, व्यापार आ भाषा सीमा पार करैत अछि।

भारतक जनगणना, नेपालक जनगणना, श्रम-कानून, विवाह-पञ्जी आ स्थानीय राजस्वक श्रेणी सीधा तुलनीय नहि। सीमा समाजक अन्तर्सम्बन्ध व्याख्या करैत समय समान संस्थागत अधिकारक असिद्ध अनुमान नहि बनाओल जाए। अध्यायक मुख्य आलोचनात्मक मूल्य साझा सांस्कृतिक भूगोल आ पृथक संप्रभु राज्यक अन्तर्सम्बन्धक विवेचन अछि। प्रमाण-सीमा : १४८.१-१४८.३०।

अध्ययन १४९ | सांस्कृतिक निरन्तरता, पुनराविष्कार आ आधुनिक संस्था

एक सए उनचासिम अध्याय 'निरन्तरता'केँ अतीतक जड़ अवशेष नहि, बदलैत परिस्थितिमे समुदाय द्वारा कएल पुनरुत्पादन मानैत अछि। घर, गोष्ठी, अनुष्ठान, गीत, चित्रकला, पाठशाला, मुद्रण, रेडियो, अकादमी, संग्रहालय आ डिजिटल अभिलेख परम्पराकेँ अलग कालमे नव रूप दैत अछि। कोनो रीतिक पुनराविष्कार ओकर सांस्कृतिक जीवनक समाप्ति नहि; ओकर इतिहासक नूतन अध्याय सेहो होयब सम्भव अछि।

आधुनिक संस्था चयन आ आर्थिक संरक्षण दैत अछि, संगहि मानक तय कऽ जीवित समुदायकेँ सीमित सेहो करि सकैत अछि। कलाकारक अधिकार, अभ्यासक स्वातन्त्र्य, बोलीक परिवर्तन आ अभिलेखक विश्वसनीयता एहि कारणेँ महत्वपूर्ण अछि। साहित्यिक विरासतकेँ केवल पुरस्कार वा स्मारकक सूची नहि बनाओब अध्यायक आग्रह अछि। प्रमाण-सीमा : १४९.१-१४९.३०।

अध्ययन १५० | समापन : कालातीत सारवस्तुक भ्रमसँ बाहर सामाजिक-
सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहास

एक सए पचासिम अन्तिम अध्याय सम्पूर्ण ग्रन्थक बौद्धिक प्रतिज्ञाकें समेटैत अछि:
मिथिला, वज्जि आ अंगक इतिहास एक अपरिवर्तनीय सभ्यता, स्थिर जाति, एक
भाषा, एक राजनीतिक इकाई अथवा अनन्त सांस्कृतिक व्यक्तित्वक जीवनी नहि
अछि। नदी, भूमि, नातेदारी, धर्म, भाषा, श्रम, राज्य, बाजार, प्रवास आ तकनीक
समय-समय पर नव संयोजनमे आयल। एकर निरन्तरता प्रमाणित करबाक प्रश्न
अछि, पहिनेसँ मानल सत्य नहि।

समीक्षात्मक दृष्टिसँ ग्रन्थक प्रमुख उपलब्धि इतिहासक स्रोतसभ—पुरातत्त्व,
शास्त्रीय ग्रन्थ, अभिलेख, राजस्व, जनगणना, प्रदर्शन आ डिजिटल सामग्री—कें
एकहि प्रमाणस्तर पर नहि रखब अछि। मुख्य सीमा एतए अछि जे विस्तृत
संश्लेषणक प्रत्येक काल-स्थान सम्बन्ध स्वतंत्र स्रोत-सत्यापन माँगैत अछि;
विशेषतः विवादित दू-विद्यापति प्रतिज्ञा, पञ्जीक तिथि, सांस्कृतिक परम्पराक
प्राचीनता आ बदलैत सरकारी आँकड़ा। एहि सीमाकें स्वीकार कएने संश्लेषण
विश्वसनीय बनैत अछि। प्रमाण-सीमा : १५०.१-१५०.३०; सम्पूर्ण १५० अध्यायक
अन्तर्विषयक तुलना।

समेकित आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

स्रोत-प्रणाली आ ऐतिहासिक काल

मूल ग्रन्थक पहिल खण्डसभमे पुरातत्त्व, अवशेष, मुद्रा, शिलालेख, विनय आ धर्मशास्त्रक सहायता सँ सामाजिक इतिहास पुनर्निर्माण होइत अछि। किन्तु एहि स्रोतसभक उत्पादनक कारण भिन्न अछि। दानपत्र दानदाताक अधिकार स्थापित करैत अछि; ओ स्थानीय खेतिहरिक सम्पूर्ण जीवनवृत्तान्त नहि। विनय धार्मिक समुदायक अनुशासित करबाक उद्देश्यसँ बनैत अछि; ओ सभ निवासी धर्माचारक स्वतन्त्र सर्वेक्षण नहि। जनगणना प्रशासनिक वर्गीकरण अछि; ओ समुदायसभक अनादिकालीन आत्मपहिचान नहि। साक्ष्यक एहि असमानता बुझल बिना ग्रन्थक ऐतिहासिक दाबीक मूल्याङ्कन सम्भव नहि।

नदी, भूमि आ आर्थिक संस्था

गण्डक, कमला, बागमती, कोसी, गङ्गा आ महानन्दा समाजक स्थायी पृष्ठभूमि नहि। नदीक पुरान पाट, गाद, कटान, धानखेती, पानि-आधारित जीविका, पुल, तटबन्ध, नहर आ सीमापार व्यवस्था एक दोसरासँ जुड़ल अछि। पुरान कृषिसमाज आ आधुनिक अर्थव्यवस्थाक सम्बन्धमे उत्पादन मात्र नहि, भूमि-अधिकार, श्रमक पहुँच, ऋण, कारीगरी, बाजार आ आपदाक बोझक भिन्न वितरण निर्णायक अछि। औपनिवेशिक राजस्व व्यवस्था आ आधुनिक भूमिसुधारक तुलनामे अधिकारक विधिक रूप आ व्यवहारिक नियन्त्रण एकसमान नहि।

धर्म, भाषा आ सांस्कृतिक सामाजिकता

वैदिक-श्रमण परम्परा, शैव-शाक्त-वैष्णव संस्था, तीर्थ, लोकगीत, नाटक आ मिथिला चित्रकलाक प्रसारक एक-दोसरक स्थान पूर्णरूपेँ लेनिहार धाराक तरह प्रस्तुत करब अपर्याप्त अछि। ई सभ भिन्न काल, स्थल आ सामाजिक समुदायमे परस्पर सम्बन्धित रहल। मैथिली, अंगिका आ बज्जिकाक इतिहासकें आधुनिक राज्यीय अथवा जनगणनाक परिभाषामे स्थिर कऽ देलासँ भाषिक सम्पर्क आ सामाजिक परिवर्तनक जटिलता लुप्त भऽ जाइत अछि। तिरहुता लिपि,

देवनागरीक प्रचलन आ डिजिटल कूटन भाषा तथा लिपिक अलग इतिहास रखैत अछि।

गृहस्थी, वर्ग, जाति आ स्त्री

श्रम आ घरेलू देखभाल अक्सर स्रोतमे अनदेखल अछि। उत्खननमे घरक अवशेष भेटैत अछि, मुदा सभ गृहस्थीक श्रम-विभाजन स्वतः नहि। वैवाहिक पञ्जी वंशगत गठजोड़ देखबैत अछि, मुदा स्त्रीक दैनिक निर्णय नहि। औपनिवेशिक रोजगारक परिभाषा महिला-श्रमक अनेक रूप छोड़ि सकैत अछि। जातिक इतिहास लेल वर्णसूची, राजस्व-अभिलेख, पञ्जी आ आधुनिक आरक्षणक कानूनी वर्ग पृथक राखब चाही। एकहि सामाजिक नामक कालभेद आ भीतरक आर्थिक विविधता ऐतिहासिक पुनर्निर्माणक मुख्य सीमा सेहो अछि।

प्रवास, सीमा आ आधुनिक सेवाजाल

कलकत्ता सँ खाड़ी देश धरि प्रवास घरेलू अर्थव्यवस्थाकेँ बहुठाम फैलाबैत अछि। बाहरी श्रमिकक कमाइ घरेलू भोजन, चिकित्सा, शिक्षा, मकान आ ऋणमे बदलैत अछि, मुदा सकल आयक वृद्धि स्वतः समृद्धि नहि। भारत-नेपालक सीमा दू अलग राज्यीय शासनक भीतर एक साझा ऐतिहासिक सामाजिक क्षेत्र निर्मित करैत अछि। सीमापार विवाह, तीर्थ, बाजार आ भाषा जोड़ैत अछि; नागरिकता, कर, मुद्रा, आरक्षण आ सार्वजनिक सेवा राजकीय अन्तर सुरक्षित रखैत अछि। एक देशक आँकड़ाकेँ दोसराक श्रेणीक समान मानि प्रत्यक्ष तुलना करब सावधानी माँगैत अछि।

डिजिटल अभिलेख, साहित्य आ धरोहर

मुद्रण, रेडियो, चलचित्र, अकादमी, विदेहक डिजिटल प्रकाशन आ तिरहुता-युनिकोड पद्धतिक विकास साहित्यक प्रसारक नव संस्था अछि। पुनरुत्पादनक सुविधा बढ़ला परो सम्पादन, संग्रह, पाण्डुलिपिक स्रोत, प्रतिक अधिकार आ लोकभाषाक समान पहुँचक प्रश्न शेष रहैत अछि। आजुक इंटरनेटपर सुरक्षित प्रतिलिपि केवल उपस्थित रहनासँ स्थायी शोधयोग्य अभिलेख नहि बनैत। धरोहरकेँ स्थिर प्रदर्शन-सामग्री बना देबाक बदला सृजनकर्ता, भाषा-समुदाय आ कार्यरत परम्पराक जीवित अधिकार जाँचबाक अपेक्षा अछि।

ऐतिहासिक प्रतिज्ञाक पुनर्जाँच

मूल ग्रन्थक किछु दाबी—विशेषतः दू अलग विद्यापतिक स्थापन, पञ्जीक विशिष्ट सामाजिक वर्गक ऐतिहासिक काल, लोकपरम्पराक प्राचीनता आ आधुनिक प्रशासकीय आँकड़ाक अर्थ—अतिरिक्त स्वाधीन प्रमाणक अपेक्षा रखैत अछि। उपलब्ध समीक्षा ई दाबीसभकेँ तर्करूपमे प्रस्तुत करैत अछि, निर्विवाद बाह्य तथ्यक रूपमे नहि। ग्रन्थक महत्त्व एहिमे अछि जे नदी, समाज, भाषा, श्रम आ राज्यकेँ एक-दोसराक सन्दर्भमे पढ़वाक विस्तृत सम्भावना खोलैत अछि; तकर निर्णायक प्रमाणिकता मात्र लेखकक निष्कर्ष नहि, मूल स्रोतक पुनर्परीक्षणसँ निर्धारित होयत।

समाप्त • गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय • खण्ड ३४

खण्ड ३४ — पुस्तक-परिचय

मिथिला, वज्जि आ अंगक सामाजिक-
सांस्कृतिक-आर्थिक इतिहासक ई
आलोचनात्मक अध्ययन मूल ग्रन्थक
सम्पूर्ण १५० अध्यायक क्रमवार
पुनर्पाठ प्रस्तुत करैत अछि।

प्रागैतिहासिक बसावट, कृषिसमाज,
व्यापार, धर्म, भाषा, श्रम, पञ्जी,
साहित्य, सीमापार अर्थव्यवस्था,
प्रवास, डिजिटल अभिलेख आ आधुनिक
सामाजिक परिवर्तन—सभ विषयकें
ऐतिहासिक स्रोतक प्रमाणगत सीमाक
संग आलोचनात्मक रूपें पढ़ल गेल अछि।

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार



विदेह



गिटहब संग्रह